UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182234

UNIVERSAL
LIBRARY

बालाबख्श राजपूत चारण पुस्तकमाला—

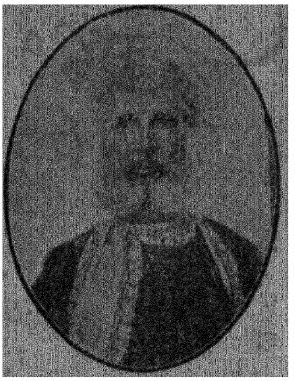

बाँकीदास-ग्रंथावली

दूसरा भाग

संकलनकर्ता और संपादक

रामनारायण दूगड़

कविया मुरारिदान अयाचक (जयपुरवाले)

महताबचंद्र खारैड विशारद (जयपुरवाले)

नागरी-प्रचारिणी सभा की ओर से

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

मूल्य ॥।)

१९३१

Published by
K. Mittra,
at the Indian Press, Ltd.,
Allahabad

V. B. 76.
at the Indian Press, Ltd.,
Benares Branch.

ग्रंथ-सूची

ग्रंथ			पृष्ठांक
(१) प्रेम-[illegible]-वार्ता ...	...	..	१ — १०
(२) मातृक्रिया-मिजाज ...	...	...	१२—३०
(३) कलम-दर्पण ...	...	...	३१—३९
(४) भांड मर्दन ..	.	.	४०—४७
(५) मुगल-गुप्त चपेटिका	...	...	४८—५८
(६) प्रेम-वार्ता ...	.	.:	५९—७५
(७) कुकवि-चलामी	..	..	७६—८४
(८) विदुर-वार्ता	...	...	८५—९८
(९) सुरजान्त-भूषण	...	...	९९—१०७
(१०) गंगालहरी	...	..	१०८—११६

निवेदन

जयपुर राज्य के अंतर्गत हणोतिया ग्राम के रहनेवाले बारहठ नरसिंहदासजी के पुत्र बारहठ बालाबख्शजी की बहुत दिनों से इच्छा थी कि राजपूतों और चारणों की रची हुई ऐतिहासिक और (डिंगल तथा पिंगल) कविता की पुस्तकें प्रकाशित की जाएँ जिसमें हिंदी साहित्य के भांडार की पूर्ति हो और ये ग्रंथ सदा के लिये रक्षित हो जायँ। इस इच्छा से प्रेरित होकर उन्होंने नवंबर सन् १९२२ में ५०००) रु० काशी नागरीप्रचारिणी सभा को दिए और सन् १९२३ में २०००) रु० और दिए। इन ७०००) रु० से ३॥) वार्षिक सूद के १२०००) के अंकित मूल्य के गवर्नमेंट प्रामिसरी नोट खरीद लिए गए हैं। इनकी वार्षिक आय ४२०) रु० होगी। बारहठ बालाबख्शजी ने यह निश्चय किया है कि इस आय से तथा साधारण व्यय के अनंतर पुस्तकों की बिक्री से जो आय हो अथवा जो कुछ सहायतार्थ और कहीं से मिले उससे "बालाबख्श राजपूत चारण पुस्तकमाला" नाम की एक ग्रंथावली प्रकाशित की जाय जिसमें पहले राजपूतों और चारणों के रचित प्राचीन ऐतिहासिक तथा काव्य-ग्रंथ प्रकाशित किए जायँ और उनके छप जाने अथवा अभाव में किसी जातीय संप्रदाय के किसी व्यक्ति के

लिखे ऐसे प्राचीन ऐतिहासिक ग्रंथ, ख्यात आदि छापे जायँ जिनका संबंध राजपूतों अथवा चारणों से हो। बारहट बालाबख्शजी का दानपत्र काशी नागरीप्रचारिणी सभा के तीसवें वार्षिक विवरण में अविकल प्रकाशित कर दिया गया है। उसकी धाराओं के अनुकूल काशी नागरीप्रचारिणी सभा इस पुस्तकमाला को प्रकाशित करती है।

भूमिका

'डिंगल' भाषा के महाकवि कविराजा बांकीदासजी के ग्रंथों में से सात ग्रंथ, कठिन शब्दार्थ और अलंकार-नाम-निरूपण सहित, पंडित रामकरणजी आसोपा, विशारद द्वारा संपादित होकर, इससे पूर्व प्रथम भाग में प्रकाशित हो चुके हैं। इनके नाम ये हैं—१ सूरछतीसी, २ सिंहछतीसी, ३ वीरविनोद, ४ धवलपचीसी, ५ दातारबावनी, ६ नीतिमंजरी, ७ सुपहछतीसी। जैसा कि पंडित रामकरणजी ने प्रगट किया है, उपर्युक्त सातों ग्रंथ कवि के पौत्र, प्रसिद्ध आलंकारिक पंडित, 'जसवंतजसोभूषण' आदि ग्रंथों के रचयिता मुरारिदानजी की टीका सहित जोधपुर के 'मार्तण्ड' मासिक पत्र में छप चुके थे, सो ही हैं। हमने 'मार्तण्ड' के उस विभाग को बारहट बालाबख्शजी की पुस्तक में देखा था, तभी से मालूम है और कश्मीर के कविराजा मुरारिदानजी से भी यही बात ज्ञात हुई थी। जोधपुरीय कविराजा मुरारिदानजी ने अपने दादा के ग्रंथों पर टीका की है सो हो

मार्तंड में छपी है*। उन्होंने उक्त टीका हमें दिखलाई भी थी। इन मार्तों के अतिरिक्त एक 'वचन-विवेक-पच्चीसी' नाम का ग्रंथ उक्त टीका सहित हमने मार्तंड पत्र में मुद्रित और भी देखा जो यथासमय तीसरे भाग में प्रकाशित हो सकेगा। इस समय १० ग्रंथ, पंडित रामनारायणजी दूगड़ की टीका सहित, प्रधान मंत्रीजी "नागरीप्रचारिणी सभा" काशी से हमारे पास संशोधन के लिये आए। सौभाग्य से बारहठ श्रीबालाबख़्शजी (इस ग्रंथमाला के संस्थापक) कविया मुरारिदानजी अयाचक की हवेली पर (मोतियों के टीबे) आए हुए थे। हमने यह उचित समझा कि यह ग्रंथ उक्त दोनों डिंगल के विद्वानों से संशोधित हो जाय। ऐसा ही हुआ। दोनों ने कृपा करके आवश्यक संशोधन कर दिया। संशोधन के यह नोट पृथक् लिखे हुए थे, अतः उक्त प्रधान मंत्रीजी की अनुमति लेकर हमने बाबू महताबचंद्रजी खारैड़, विशारद को इस कार्य में साथ लेने के लिये कहा। उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। श्रीयुत खारैड़जी डिंगल भाषा में अध्यवसाय करते हैं और इसके प्रेमी हैं। हमने भी उनके साथ प्रयास किया और टीका में उक्त दोनों चारण कवियों के नोट

* पंडित रामकरणजी ता० २-२-२६ को जयपुर पधारे तब उनसे ज्ञात हुआ कि यह टीका उन्हीं ने कविराजा मुरारिदानजी की सलाह से की थी। परंतु अलंकारों को उन्होंने (अर्थात् कविराजाजी ने) लगाया था।

आदि से संस्कार तथा खारैडजी के निजी अनुभव के अनुसार भी सुधार हो गया। इससे पूर्व उक्त कविया मुरारिदानजी ने निम्नलिखित १३ ग्रंथों पर टीका कर ली थी—१ जहेल जस जड़ाव, २ भुरजाल भूषण, ३ मोहमर्दन, ४ गंगालहरी, ५ मावड़िया मिजाज, ६ वैसक वार्ता, ७ चुगल मुख चपेटिका, ८ कुकवि बत्तीसी, ९ कृपण दर्पण, १० कायर बावनी, ११ वैस-वार्ता, १२ विदुर बत्तीसी, १३ [illegible] नाव सिख। परंतु उक्त नोटों के करने के समय मुरारिदानजी के पास अपनी यह टीका नहीं थी इससे वे उन नोटों में अपनी टीका से काम नहीं ले सके, क्योंकि वह टीका हमारे रास्ते में बँधी रह गई और उन्होंने मांगी नहीं। अतः उपरोक्त नोट पूर्वकृत टीका से एक प्रकार स्वतंत्र समझे जाने चाहिएँ और ये प्रधानतः बारहट बालाबख्शजी की सम्मति के अनुसार ही हुए हैं। परंतु अब हमने उनके याद करने पर मुरारिदानजीवाली पूर्व कृत टीका को उनके सिपुर्द कर दिया तो उन्होंने चतुराई के साथ उन नोटों और इस टीका से काम लिया। जहाँ तक हमको मालूम है और हमने पंडित रामनारायणजी दूगड़ की टीका को देखा है, यह ज्ञात हुआ कि उक्त पंडितजी ने बहुत परिश्रम किया है। इस टीका से उनकी डिंगल भाषा की जानकारी अच्छी तरह झलक रही है। यदि उन्होंने इतना परिश्रम न किया होता तो बाँकी-दासजी के इन ग्रंथों के अनेक स्थल स्पष्ट न हुए होते। तथापि यह कहना पड़ता है कि उक्त उभय चारण विद्वानों के नोटों

और मुरारिदानजी की पूर्व की टीका से खारैडजी ने ग्रंथकार के अभिप्रायों पर विचार किया तो दूगड़जी की टीका में कई स्थल चिंत्य मिले जिनका यथास्थान संशोधन या घटाव, बढ़ाव करना पड़ा।

इतना हो जाने पर भी हम कह सकते हैं कि बाँकीदासजी के कई दोहों में कई जगह उनका असली अभिप्राय ग्रहण करने में नहीं आ सका है। सच तो यह है कि ऐसे मार्मिक काम के लिये उनके पौत्र स्व० कविराजा मुरारिदानजी जैसा विद्वान् चाहिए था। उक्त आलंकारिक कविराजाजी की टीका (प्रथम भाग की) प्रायः निर्दोष है क्योंकि वे अपने दादा की कविता के चोज को अधिक समझते थे, जिसको कि उन्होंने बचपन से ही सीखा था, और जो उनके घर की विद्या थी। परंतु यह प्रस्तुत टीकाकार, चाहे इनमें चारण भी हैं, उक्त स्व० क० रा० मुरारिदानजी की मर्मज्ञता के सत्व या कक्षा को पहुँचने का दावा नहीं रखते हैं, तब भी इन चारों की सम्मिलित टीका किसी भावी उत्तम टीका की पथदर्शिका होने का दावा रख सकती है। कविया मुरारिदानजी अयाचक ने अपनी टीका में, दो एक ग्रंथों में, भावार्थ लिखे हैं, उनको देखने से तथा डिंगल के अर्थ के स्पष्टीकरण की आवश्यकता पर दृष्टि देने से हमको यह बात भली मालूम हुई कि यदि स्व० क० रा० मुरारिदानजी और प्रस्तुत टीकाकार-चतुष्टय भी भावार्थ को सर्वत्र साथ लगाते तो पाठकों का हित होता, कठिन शब्दों

के अर्थ के बाद भावार्थ और विशेषार्थ होने से अर्थ-ज्ञान में सुगमता अधिक रहती, परंतु यह थोड़े काल में संभव नहीं था, जैसा कि हमने ग्वारेडजी से जाना कि इस काम के लिये कम से कम चार महीने चाहिए।

यहाँ तक कुछ टीका की भी बात हुई। बाँकीदासजी के २४ ग्रंथों में से १७ ग्रंथ इन दोनों भागों में आए। अब तीसरे भाग के लिये नीचे लिखे ७ ग्रंथ रहते हैं। अर्थात्— १ वचन-विवेक-पच्चीसी, २ सिद्धराव छत्तीसी, ३ संतोषबावनी, ४ सुजसछत्तीसी, ५ [illegible], ६ [illegible] वाणी, ७ झमाल (नखसिख)। इन सात के अतिरिक्त दो ग्रंथों के नाम और जाने गए हैं—१ चमत्कारचंद्रिका, २ श्री दरबार रा कवित्त; परंतु ये ग्रंथ हमारे देखने में नहीं आए। यदि तीसरे भाग के छपने के पहले मिल गए तो उस भाग में वे सम्मिलित हो जायँगे। पंडित रामकरणजी आसोपा का कहना है कि बाँकीदासजी के २७ ग्रंथ सुने जाते हैं। परंतु उनको उन तीन ग्रंथों के नाम ज्ञात नहीं हैं, न वे उनके देखने में आए हैं। संभव है कि कभी कहीं वे अवशिष्ट तीन ग्रंथ मिल भी जायँ। तभी २७ का होना सही होगा।

*

अब ग्रंथ-प्राप्ति की सूचना लिखते हैं—

संख्या	ग्रंथ नाम	ग्रंथ प्राप्ति का पता	
१	सूरछतीसी	मार्तंड, क० रा० मेहरदानजी	
२	सीहछतीसी	,,	मु. दा. जी कश्मीरवाले
३	वीरविनोद	,,	,,
४	धवलपचीसी	,,	,,
५	दातारबावनी	,,	,,
६	नीतिमंजरी	,,	ओझाजी
७	सुपहछतीसी	,,	मु. दा. जी कश्मीरवाले
८	वचन-विवेक-पचीसी	,,	,,
९	मोहमर्दन	ओझाजी, मुरारिदानजी कश्मीरवाले	
१०	गंगालहरी	,, (अधूरी)	,, (पूर्ण)
११	मावडिया-मिजाज	,,	,,

विशेष

प्रथम के आठों ग्रंथ टीका सहित "भारतमार्तंड" में छपे हुए मिले तथा इनकी और प्रतियां रा० ब० ओझाजी आदि से भी प्राप्त हुईं। छपा हुआ मार्तंड, जिसमें ८ ग्रंथ थे वह, क० रा० मुरारिदानजी कश्मीरवालों और बारहट आलावख्शजी हुणूँनियावालों के पास देखे गए जो इनके पास मौजूद हैं। सं० ६, और सं० ९ से १५ तक, १७ से १९ तक, २१ से २३ तक की प्राप्ति म. म. रा० ब० ओझा गौरीशंकरजी से हुई। पं० रामनारायणजी दूगड़ के पत्र

१२	वैसकवार्ता	,,	,,
१३	चुगलमुखचपेटिका	,,	,,
१४	कुकविबतीसी	,,	,,
१५	कृपणदर्पण	,,	,,
१६	कायरबावनी	मुरारिदानजी	कश्मीरवाले
१७	वैसवार्ता	श्रोझाजी, मुरारिदानजी	कश्मीरवाले
१८	विदुरबतीसी	,,	,,
१९	झमाल	,,	लाला श्रीनारायणजी
२०	जेहल जस जड़ाव	क० रा० मेहरदानजी	
२१	सिधरावछतीसी		श्रोझाजी
२२	संतोषबावनी	,,	,,
२३	भुरजालभूषण	श्रोझाजी	क.रा.मेहरदानजी
२४	सुजसछतीसी	,,	,,

से ज्ञात हुआ कि म० म० रा० ब० श्रोझा गौरीशंकरजी के पास बाँकीदासजी की १५ हस्तलिखित पुस्तकें खेमपुर ठाकुर कश्मीदानजी चारण राज्य उदयपुर से आई। इन्हीं पुस्तकों को उन्हीं से पं० रामनारायण दूगड़ ने नकल की और वे ही १५ पुस्तकें रा० ब० श्रोझाजी की कृपा से हमें प्राप्त हुई। क० रा० मुरारिदानजी जोधपुरवालों के पौत्र क० रा० मेहरदानजी से दो हस्तलिखित जिल्दें मिलीं। उनमें बाँकीदासजी के ३ ग्रंथ मिले २, २०, २३।

लाला श्रीनारायणजी जयपुरवालों से [illegible] चिट्ठी से ज्ञात हैं—एक ग्रंथ लिखा सं० १९

(१) वैसकवार्ता

इस ग्रंथ में कवि ने वेश्या और वेश्याप्रसंगी पुरुषों और वेश्या-प्रसंग से हानि, सतीत्व का अवांतर रूप और सतीत्व-रक्षण प्रतिलोम साधन, बड़े ओजस्वी, मर्मभेदी, नीतिप्रदर्शक, सारगर्भित, लौकिक अनुभव-सिद्ध वाक्यों में—ललित चोज भरी व्यंग्य और प्रसाद-गर्भित कविता में—वर्णन किया है; वेश्यालोलुप पुरुषों का अच्छा खाका खींचा है और उनका पेट भर मनचाहा उपहास किया है। अपनी सती साध्वी पत्नियों से नाता और प्रेम तोड़कर वेश्याओं, पातरों और गोत्रियों से प्रेम जोड़नेवाले, अपने धन, धर्म, कुललज्जा, पुरुषार्थ और संसार यात्रा नष्ट करनेवाले, कामांध, मदोन्मत्त धनियों, सरदारों, अमीरों, राजाओं और जेंटिलमैनों के लिये बाँकीदासजी का यह सुंदर लघु काव्य एक रामबाण नुसखा है और यह मार्ग शत्रु के वध के लिये जहर बुझा नावक का तीर है। जिन भूले-भटकों के हृदय में कुछ भी मनुष्यत्व का अंश बच गया हो, वे इस ग्रंथ-रत्न को एक दफे भी पढ़ लेंगे वा सुन लेंगे तो वे इसके प्रभाव के प्रसाद से अवश्य लाभ उठावेंगे। बाँकीदासजी की इस बाँकी चाबुक की फटकार से और उपदेश की ताड़ना की मार से हजार जार होंगे तो भी जार जार रोकर हजार फायदे उठाएँगे। वेश्याओं के प्रभाव से जिन वीर वंशियों ने अपने पुरुषार्थ को हानि पहुँचाई है उनके मनों पर क्या ये दोहे कम प्रभाव डालेंगे ?—

"साचळ अखियां सांकड़ी, चोरंग बखियां चेत।
भगियां सूं भेतप नहीं, हुरकांगियां सूं हेत॥"
"हंसियो जग [illegible] हुए, [illegible] [illegible] वीत।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], फगियो होगा फजीत"॥
"[illegible] [illegible] किया, [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] माने [illegible]॥"
"[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]।
हंसियो [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] न [illegible]॥"
"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] सूं [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]॥"

(२) मावड़िया-मिज़ाज

इस ग्रंथ में कवि ने उन पुरुषों का चित्र खींचा है जो अपनी माता के पास रावले में या जनाने में अधिक रहकर स्त्री-स्वभाववाले हो गए हैं और पुरुषसिंह स्वभाव को [illegible] उनमें हीनता को प्राप्त हो गई है। ऐसे पुरुषों की कवि ने मर्मभेदी वाक्य-बाणों के प्रहार से हँसी उड़ाई है। जो माता या किसी स्त्री का अवलंबन मानकर स्वावलंबन को छोड़ चुके हैं, ऐसे पुरुषों को "मावड़िया" नाम की पदवी दी है। ऐसे स्त्री पुरुषों को उपदेश करने को, उत्तेजना देने और उनके निज पुरुषार्थ को याद दिलाने और उस पर लाने को कवि ने कोई बात उठा न रखी। ऐसे पुरुष इसको पढ़कर अवश्य लज्जित होंगे और अपने जनानेपन को छोड़े बिना न रहेंगे। वह

सो कृपण महाराज के धन की तीसरी गति अर्थात् नाश कही गई है। वह नाश क्या है? लक्ष्मी जेलखाना तुड़ाकर भागता है क्योंकि खाना और खर्चना तो कंजूस के लिये कुफ्र है। इन दौलत के काफिरों के लिये, जो मरुस्थल में अधिक पैदा होते हैं, उस मरुस्थल के गड्ढा कवि ने यह काव्य क्या बनाया है, कुफारा बनाया है। और इसके जरिए से इनमें जहाद लाजिम आता है। देखिए हमारे कवि ने क्या अच्छा कहा है।—

"कृपण कही ब्रह्मा किया, मांगण बड़ी बलाय।
विसद बणावण वासनं, फाटक दिया बणाय॥"
"रयणायर पुत्रो रमा, छाटी कर दुरभाव।
रयणायर ते डुबवै, सूमा कोरी नाव॥"
"सूंम नाम लेणा हुतो, मूंग पकावण नेर।
अन दिन उणरी आश जं, हाटो भाटो देर॥"
"दियो सबद मुणियो दुसह, लागो तन मन लाय।
सूंम दियो न करे सहन, परच दियाली पाय॥"
"नार नपुंसकरा नरां, अदतारे पर अत्थ।
भागहीण भोगे नहीं, देखे परसे हत्थ॥"

हिंदी-साहित्य में सूम और अदाता की प्रशंसा में अनेक कवियों ने, बहुत चोजभरे छंदों में, हास्यरस कूट कूटकर भर दिया है सो काव्यप्रेमी पुरुषों से अविदित नहीं है। राव, बेणी, भासीराम, वंशगोपाल, माधव, ग्वाल आदि सैकड़ों कवियों के छंद हैं। यथा—(१) सूम कहै संपत सों बैठ गात

गाव री, (२) जाग न पर्यो तो मैं रुपया देइ डारौ तो, (३) खान-दान पानदान कलिबे को रखे हैं, (४) नगद रुपैया भइया कापै दियो जात है, (५) बाजे बाजे लोगन को देबे की कसम है, (६) द्वार चोबदार कहूँ [illegible] जनाते हैं, (७) डौलदार गुंबज [illegible] किला, (८) दाऊ जू तो आठूं जाम देत हो रहत हैं, (९) दाम [illegible] देत न एक अधेला (१०) चौंक परो पितुलोक मे [illegible] आपके [illegible] के पर, (११) फस्ल मुल्क तुल्य चढि [illegible], (१२) देखबे के डर ते वे दादा ना कहत हैं, (१३) छिन [illegible] बाता [illegible] रह गई है, इत्यादि। इस सर्-दारों की भलाई से कवियों ने अपने हृदय के गुबार निकाले हैं सो पाठक इनके पूरे कवित्त काव्य ग्रंथों में देखें।

(४) मोहमर्दन

इस ग्रंथ में शांत रस की प्रधानता है। जीव का मोह, अर्थात अज्ञान या मूर्खता को मिटाने के लिये इन दोहों में बालदास-जी ने संसार की अनित्यता असारता और मिथ्यात्व का दरसा-कर ईश्वर-स्मरण, शुभ कर्म, भूत दया और सच्चे सुख के मार्ग की खोज को बड़ी उत्तमता से दिखलाया है। प्रति दोहे में एक या एक से अधिक उपदेश, चितावनी, उत्तेजना और शिक्षा निज अनुभव को लिए हुए भरी है। नश्वर जीवन के प्रति तोम ज्ञान को इन दोहों में कैसा अच्छा कहा है—

"पग पग जम झोका पड़ै, बालक! धार विवेक।
हुतभुक बिच जल रचत है, उबरो है दिन एक।"

"जग में वांछै जीवणो, सब प्राणी समुदाय।
हट कर नर उणनूं हणै, जुलम कह्यो नहि जाय॥"
"ताजदार बैठा तखत, रज में लौटे रंक।
गिणै दुनांनूं हेकगत, निरदय काल निसंक।"
"सर सूकै नह संचरै, बांका पंछी विहंग।
किणरे चावै संग कुण, सब स्वारथ रे संग॥"
"आप नांम इल ऊपरां, रसना राखज नाम।
ज्यो विसरूं राखियो, पुरषां जकां प्रणाम।"
अंत के दोहे में कैसा निचोड़ का उपदेश कहा है —
"जीव दया पाली जकां, रजपाली जिण आन।
वनमाली कीधो वलू, पड़ो सुगाला पाव॥"

(५) चुगल मुखचपेटिका

ग्रंथ का विषय नाम से ही प्रकट है। इस ग्रंथ में उन कापुरुषों, पापात्माओं, परहित-विनाशक दुष्टों और चुगली के पेशेवाले पाजियों का फोटो खींच दिया है जो कि सरदारों, अमीरों, राजाओं, अमात्यों आदि के पास स्वार्थ या बिना ही स्वार्थ के दूसरों के सच्चे अथवा झूठे गुण-अवगुण को कान में भरकर उनकी ओर से मन फिरा देते हैं, सच्चे को झूठा और झूठे को सच्चा कर देते हैं। बाँकीदासजी ने यह कितना सच्चा कहा है—

"चुगली कानां सुणणसूं, मेला व्हे गुरु मंत॥"
"सनै सनै सिरदाररी, चुगल बिगाड़े चाल॥"

"ठग कामेती ठोठ गुर, चुगल न कीजै सेण ।
चोर न कीजे पाहरू, ब्रहसपतिरा बैंण ।।"
"लोक चुगल कानें लगे, घू घू बोल्यो गेह ।"
"नरक समो दुख थल नहीं, बाडव समो न ताप ।।
लोभ समो अोगण नहीं, चुगली समो न पाप ।"

चुगल का स्वरूप कैसा वर्णन किया है—

"सनमुख अत मीठा सबद, मेह समैंरो मोर ।
उगलै विष परपूठ अो, चुगल दई रो चोर ।।
पर अकाज करबो करै, सदा नयण कर सैन ।
चुगल जठे नँह चानणो, चुगल जठे नँह चैन ।।"

चुगलों के संबंध में कैसी अच्छा सलाह देते हैं—

"जो सुख चाहो जगत में, लच्छ धरम सुखलोय ।
चित्र मंडाणां चुगळरा, मत देखो मुख कोय" ।।

इन चुगलों से संसार का कितना अनिष्ट होता है, मनुष्यों का कितना अहित हो जाता है और समर्थों के मनों को बिगाड़कर कितना हेर फेर करके ये कितना विप्लव मचाते हैं, इन बातों से मानों तंग आकर कवि बाँकीदासजी चुगलों को यह शाप देते हैं—

"पनग लड़ो कीड़ा पड़ो, मड़ो झड़ो दुख संग ।
जग चुगलांरी जीभड़ो, वायस भखो विहंग ।।"

और चलते ही अपनी इष्ट देवी भगवती को अर्ज करते हैं कि—

"महिषासुर ज्यूं मारजे, चुगल त्रसूलां चाड ॥"

शास्त्रकारों ने भी बाँकीदासजी की सारी उक्तियों का समर्थन करते हुए एक ही वचन में सूत्र रूप से सिद्धांत-निरूपण किया है—

"पिशुनता यद्यस्ति किं पातकैः ॥"

अर्थात् यदि चुगली खाना सीख लिया है तो और किसी पाप करने की आवश्यकता नहीं; चुगली पर सब पापों का खातमा है। कलश चढ़ गया, एलएल० डी० की डिगरी हासिल हो गई।

(६) वैसवार्ता

इस ग्रंथ में कवि बाँकीदासजी ने वैश्यों अर्थात् वणिकों पर अपनी कविता की सुधा का वर्षण किया है। मंगलाचरण के पढ़ने से तो नए पाठक को यही ज्ञात होता है कि कवि कोई जैन धर्म का ग्रंथ लिख रहे हैं परन्तु तीसरा दोहा पढ़ते ही तुरंत यह खयाल होता है कि जैनियों वाणियों पर कटाक्ष है। परंतु आगे बहुत सा भाग पढ़ लेने पर यह विचार भी जाता रहता है। आम तौर पर वणियों की खबर ली गई है। सारे ग्रंथ के पढ़ लेने से प्रायः नीचे लिखी बातें टपकती हैं।

१—कवि को ऐसे व्यापारियों से ज्यादा काम पड़ गया है जो लालची, दगाबाज, धोकेबाज, धर्म कर्म का कुछ खयाल न रखनेवाले, धरोहर दाबनेवाले, देन लेन, व्यापार में

चालाकी करनेवाले, लेकर फिर न देनेवाले, हलके बाट पारे-भरी पोली डाँड़ी और पलड़ों में मोम लगानेवाले, घट-तौले, घणभोले आदि। इनके प्रतिकूल उत्तम गुणों के रखने-वाले सदाचारी, धर्मनिष्ठ, इक सखुने, पूरे तोलनेवाले जबान के पाबंद आदि से कम काम पड़ा है क्योंकि ग्रंथ में ऐसे लोगों का बहुत कम वर्णन है।

२—ग्रंथकर्त्ता ने महाजनों का हद से ज्यादा मजाक उड़ाया है। माना कि संसार में इस किस्म के भी महाजन मिलते हैं जैसा कि कवि ने वर्णन किया है परंतु क्या संसार में सब ऐसे ही ऐब हैं। जिस तरह से वणियों की बुराई का ग्रंथ लिखा है उसी तरह अगर इनकी बड़ाई का भी लिखते तो दोनों ओर का अनुभव मालूम हो जाता, इसलिये इसे काणा अनुभव कहेंगे। इस हिसाब से यह काव्य वह काव्य है जिसे फारसीवाले 'हजो' अर्थात् निंदा कहते हैं। इसके साथ यह भी कहेंगे कि इसमें सभी "हज्वे मलीह" नहीं हैं। 'हज्वे मलीह' मीठी निंदा को कहते हैं जिसका वर्णन हिंदी-वाले 'व्याजस्तुति' शब्द से करते हैं क्योंकि इसमें "हज्वे करीह" भी मिली हुई है। "हज्वे करीह" परुष (कठोर) निंदा को कहते हैं।

३—संभवतः कवि का अभिप्राय पूर्वोल्लिखित संकीर्ण विचार के और अप्रतिष्ठित वणिकों से सावधान रहने के लिये कुछ अपने अनुभव काव्य मिस संसार में छोड़ने का प्रतीत

होता है। नहीं तो यह दूषणावली ही दूषणावली के आभूषण न बनाते, गुणावली को भी काम में लाते।

४—इस ग्रंथ को समग्र पढ़ लेने से यह बात भी झलकती है कि बांकीदासजी को किसी या किन्हीं वणियों से हानि पहुँची है या उनकी किसी वणिये से बिगड़ गई है। जैसा कि इन दोहों से टपकता है—

"जल छाणे, दिन जीम ही, नोली कस्त न खाय।
दोसत हूं देतां दगो कसर न राखे काय॥"
"गुरु संही गुदरे नहीं, वणिक बैत, वणियांह।"
"पढ़े मंत्र मुख सूं पतो, कोमल माल करग्ग।
पंथ बुहारे नरकरा, साधन करे सरग्ग॥"
"वणियाणी आया तणा, भरम न गमणो भूल।
नटियो कोडो ही नहे, मरणो करे कबूल॥"

(७) कुकविबत्तीसी

कुकविबत्तीसी में कविराजा ने उन कविता-कामिनी रूप के बिगाड़नेवाले और पेट-पंथी महाकवियों का वर्णन किया है जो पिंगल को तो अपना परम शत्रु समझकर पहले ही गोली मार देते हैं, काव्य के नव रसों को हेय समझकर षट्रसों की ही चिंता करते हैं, जो "कहीं का पत्थर कहीं का रोड़ा भानमती ने कुनबा जोड़ा" कहावत को चरितार्थ करते हैं, जो अपनी नादिरशाही द्वारा बेचारी कविता की मिट्टी पलीद करते हैं। वे प्रतिष्ठा के भूखे, महाकवियों के द्वेषी,

मूर्खों के मध्य "काकमध्ये बकः" की तरह, अथवा "अंधों में काणे राव" की तरह बन बैठते हैं।

बुरी रचना करनेवालों के अतिरिक्त रचनाओं को बुरी तरह पढ़नेवाले और व्याख्या करनेवाले हीन कवियों से भी ग्रंथकर्त्ता का कहीं कहीं अभिप्राय है। दूसरों की कविता चुराकर अपनी कविता बनानेवालों के वास्ते कैसा अच्छा कहा है—

"उत्तम मूसे अक्खड़, मध्यम दूहा मूंस।
अधमगीत मूसे अवर, त्रिविध कुकवि विण तूस॥"

आगे देखिए लंपट कवियों के लिये क्या अच्छा कहा है—

"डिगलियां मिलिया करें, पिंगल तणो प्रकास।
संसकृती है कपट सज, पिंगल पढ़िया पास॥"

कुकवि महाराजों की स्तुति भी पढ़ने योग्य है—

"आगम ईरानी कटक, कुकवी नादरशाह।
कायब हिंदी दल कटे, रसण तेग वहराह"।

(८) विदुरबत्तीसी

कवि बांकीदासजी ने खवासियों, दासों और दोगलों को अपने ग्रंथ विदुरबत्तीसी में विदुरजी के नाम से प्रकट किया अर्थात् उनके लिये विदुर शब्द का प्रयोग किया। कहाँ वह "विदुर-प्रजागर" के रचयिता विदुरजी, कहाँ वह महाभारत के प्रधान अंग के वक्ता महाप्रज्ञ, नीति-निपुण, विचित्रवीर्य के पुत्र विदुरजी और कहाँ यह पामर दासीपुत्र, जिनका

निषिद्ध वर्णन कवि ने किया है। यह मन को अखरता है क्योंकि संस्कृत कोषों में विदुर के दो अर्थ हैं। एक तो "रथाभ्र-पुष्पविदुरशीत-वानीर-वंजुलाः" और "ज्ञाता तु विदुरो विदुः"। इस प्रकार विदुर शब्द का शब्दार्थ दासी-पुत्र नहीं है। परंतु धृतराष्ट्र के भाई विदुरजी दासीपुत्र थे, इस कारण कवि ने अंतर रूप से इस शब्द का दासीपुत्र के अर्थ में प्रयोग किया है जो उपहास का सूचक भी है।

जिनको कवि ने विदुर कहा है उनके लिये गोला, गोल, दास, दासीपुत्र, दासीजाया, ये शब्द भी प्रयोग किए हैं। इससे यह प्रकट है कि विदुर शब्द से ही दासीपुत्रों का वर्णन करना अभिप्रेत नहीं था।

इस ग्रंथ के पैंतीस दोहों में दासीपुत्रों के लक्षण, स्वभाव, व्यवहार, प्रभाव, रहन-सहन आदि का हास्यमय चित्रण किया है। इन दासों की संगति से जो बुराइयां पैदा होती हैं उनसे बचाने का बाँकीदासजी के उपदेश अनमूल्य हैं। यथा—

"गोला सूं न मरै गरज, गोला जात जबून।
ऊखाणो सायद भरै, सो गोलां घर सून॥"

और

"कूकर लाय जलै नहीं, जुडै न कायर जंग।
विदुर न ठहरै विपत में, संपत में हीज संग॥"

तथा

"दासीजादा दे दगा, पास रहंता पूर।
रीझै खीझै राखणां, दासीजादा दूर ॥"

एवं

"बींछू, बानर, व्याल, तिय, गरदभ, गंडक गोल।
ए अलगाहिज राखणां, ओ उपदेश अमोल ॥"

(८) भुरजाल-भूषण।

"भुरजाल भूषण" ग्रंथ में, दोहों में, जगत्प्रसिद्ध मेवाड़ देश के चित्तौड़गढ़ की प्रशंसा की है और इसमें जयमल और पत्ता की भी बहुत कीर्ति गाई है जो इस गढ़ पर अकबर के साथ खूब लड़े हैं और जिन्होंने गढ़ की रक्षा की है। आर्कीदासजी ने चित्तौड़ को "भूरजाल भूषण" कहा है। 'भुरजाल' शब्द भुर्ज-आलय से बना मालूम होता है, अथवा भुरजाला शब्द से है। भुर्ज शब्द बुर्ज का अपभ्रंश है। बुर्ज फारसी शब्द है। भुरजालभूषण शब्द कहने से सब किलों का भूषण अर्थात् जेवर व शोभा समझना चाहिए। प्रथम दोहे में "साह तणां खनी सबल", ऐसे बड़े पुरुषों का शरणागत आना समझा जा सकता है जैसा—शाहजादा खुर्रम इसके लिये इतिहास में ऐसा लिखा है—' इसी महाराणा जगतसिंहजी के समय में शाहजादे खुर्रम ने शरण लिया। जगमंदिर के गुंबदवाले महल इन्हीं के रहने के लिये बनाए गए थे। इस सहायता के लिये शाहजादा खुर्रम ने बादशाह होने पर श्री दरबार को

पगड़ी-बदल भाई बनाया। यह पगड़ी अभी तक उदयपुर में मौजूद है।" (चितौड़गढ़—दामोदर शास्त्री कृत)

इस दुर्ग को सातों अकलीम में प्रसिद्ध होना लिखा है सो कवि ने ठीक ही लिखा है। मान कवि कृत "राजविलास" ग्रंथ में आया है। यथा—

दोहा

"मेदपाट महिमंडणह, चित्रकोट गढ़ चारु।"

कवित्त (छप्पय)

"गुरु चौरासी गढनि, मही मेवार सुमंडन।
अकल अभेद अभीत, विषम पर चक्र विहंडन॥"
तुंग विशाल त्रिकोट थिरिसु, कोशीसा थाहट।
पौरि बुरज गुरु प्रबल, कठिन अगला कपाहट।"
बहुकुंड वापि सर जल विमल, विबुधालय वसुधा बहित।
देखे यु दुर्ग सब देश के चित्रकोट मो बसिय चित॥"-९४॥
"महि चित्रकोट समानयं, गढ़ कौन आवहि गानयं"॥१०७॥
रिनथंभ मडव रेवतं, सुर असुर किन्नर सेवतं।
आबू सुगढ़ आसेरयं, अवगाढ़ गढ़ अजमेरयं॥१०८॥
ग्वालेर अलवर गज्जना, विक्रमरु बंधुर वज्जना।
गूगोर नरवर गाहिए, शिव साहिगढ़ सारांहिए॥१०९॥
मंडोवरा मैदानयं, गढ गागरोनि गुमानयं।
दौलताबाद सु देखयह, पुहवी सु पूना पेखयहु॥११०॥

हिमारगढ़ हरणौरयं, सोवरण गिरि सच्चौरयं ।
गढ़देव ईडर गौरवं वैराठ बंधू नौरवं ॥१११॥
कहि कँगूरा कल्यानियं, लिखा पहारसु ठानियं ।
सुनियै शिवाना सारका, महिमध्य मंडल मारका ॥११२॥
तारागनं, त्रकुटाचलं, नाशकग, त्रंबक कुंडलं ।
यों कोट दुर्ग अनेकयं, वापानियं सु विवेकयं ॥११३॥

इस चित्तोड़गढ़ के स्वामियों की प्रशंसा में कवि ने (सं० दो० २ में) लिखा है कि पद्मिनी जैसी सुंदर रानी सिंहलद्वीप से लाए। इतना कहने से कवि का लक्ष्य उसी पद्मिनी के रूप के कारण पद्मिनी के स्वामी महाराणा रत्नसिंह से अलाउद्दीन खिलजी का झगड़ा और मलिक मुहम्मद जायसी के पद्मावत काव्य के अनुसार, रत्नसिंह को वापिस छुड़ा लाना आदि बातें हैं जिनको सच्चे इतिहास के लेखक—ओझा गौरीशंकरजी आदि—नहीं मानते हैं अर्थात यह नहीं मानते कि पद्मिनी के कारण अलाउद्दीन ने चढ़ाई की। इतना ही मानते हैं कि "पद्मावत, तारीख फरिश्ता, और टाड के राजस्थान के लेखों की यदि कोई जड़ है तो केवल यही कि अलाउद्दीन ने चित्तोड़ पर छ: मास के घेरे के अनंतर उसे विजय किया, वहाँ का राजा रत्नसिंह इस लड़ाई में—लक्ष्मणसिंह आदि कई सामंतों सहित—मारा गया, उसकी राणी पद्मिनी ने कई स्त्रियों सहित जौहर की अग्नि में प्राणाहुति दी। इस प्रकार चित्तोड़ पर थोड़े से समय के लिये मुसलमानों का अधि-

कार हो गया। बाकी सब बातें बहुधा कल्पना से खड़ी की गई हैं।"

फिर ओझाजी ने लिखा है कि "अमीर खुसरो की तारीखे अलाइया के अनुसार सुलतान अलाउद्दीन ता० २८ जनवरी सन् १३०३ को दिल्ली से रवाना हुआ और ता० २६ अगस्त १३०३ को किला फतह हुआ। इस किले को अपने बेटे खिज़रखां को दिया और चित्तौड़ का नाम खिजराबाद रखा।" (मेवाड़ का इतिहास २ रा खंड पृ० ४८५)

तीसरे दोहे में "सात लाख हिंदू मुआ, असुर अठारह लाख" जो लिखा है यह तादाद उन्होंने कहां से ली यह उन्हीं को मालूम होगा। इतिहास में इस संख्या को ठीक मानने को हमें कोई प्रमाण नहीं मिला। ७४।। का अंक लौकिक में ७४।। गत जौहर और चित्तौड़ आदि का पाप आदि बातें बहुसंख्यक मनुष्यों का मारा जाना अवश्य प्रकट करता है परंतु इतिहास की कसौटी पर बांकीदासजी की संख्या नहीं कसी जा सकी। अलाउद्दीन खिलजी बहादुरशाह (गुजरातवाला) और अकबर आदि ने चित्तौड़ पर चढ़ाइयाँ कीं जिनमें असंख्य मनुष्य मारे गए। (महाराणा उदयसिंह पृ० ४१७ पर नोट देखो।) वहां ७४।। का अंक ॐ० का रूपांतर है कि प्राचीन काल में ओं को ७ के अंक के समान लिखा जाता था। फिर आगे शून्य लिखी गई। जल्दी लिखने से ४ का अंक और आगे विराम की दो खड़ी लीकें लगाए जाने से ७४।।

हो गया। यह पूर्वकाल के प्रारंभ में लिखा जाता था, और राजपूताने के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ ठाकुर भूरासिंहजी शेखावत मलसीसर संगृहीत महाराणा-यश-प्रकाश में पृष्ठ १२ पर गीत-संख्या तीन में महाराणा गढ़ लक्ष्मणसिंह के संबंध में जो दिया है उसमें ऐसा आया है "दीन अलाव फिर गढ़ दोला, हर सिरमाल बणाव हुआ। सात लाख फउ असुरां सरीसा गढ़ अठारा लाख मुआ॥" इसका अर्थ उस पुस्तक में यह दिया है—अलाउद्दीन ने गढ़ के गिर्द घेरा दे दिया। और महादेव ने भी मस्तकों की माला का भूषण बनाया। [illegible] वीर क्षत्रिय और अठारह लाख म्लेच्छ [illegible] मारे गए। परंतु इस पर जो नोट संग्रहकर्ता ने दिए हैं उसमें लिखा है कि लक्ष्मणसिंहजी ने सं० १३६० में सुलतान तुगलक [illegible] के साथ युद्ध किया था, अलाउद्दीन के साथ नहीं। यह नोट सर्वथा गलत है क्योंकि प्रसिद्ध इतिहासज्ञ पं० गौरीशंकरजी ओझा का भी यह नोट उस पुस्तक में दिया गया है— 'राणा नाम की दूसरी शाखा का प्रथम पुरुष राहप हुआ जिसका वंशज लक्ष्मणसिंह (गढ़ लक्ष्मणसिंह) अलाउद्दीन के हमले में रावल रत्नसिंह के पक्ष में लड़कर अपने सात पुत्रों सहित काम में आया।" और ओझाजी ने राजपूताने के इतिहास जिल्द दूसरी अध्याय ४ पृष्ठ ५४६ के नोट में भी लिखा है— "अलाउद्दीन के साथ की लड़ाई में हम्मीर का पितामह लक्ष्मसिंह (लखमसी) और पिता अरिसिंह दोनों मारे गए,

जिसके पीछे कुछ वर्ष तक अजयसिंह सीसोदे का स्वामी रहा जिसके बाद हम्मीर ने वहाँ की जागीर पाई थी।"

महाराणा हम्मीर जिनको चौथे दोहे में शिव का अवतार कहा है उसके लिये महाराणा-यश-प्रकाश में गीत ७ वें में

"हरहर तणा हमीर नरेसुर लाभथको सूका रह लोय।
एकण आस तुहाली ऊपर, सीसोदा आवै सहकोय ॥१॥
जटधारी, धारी जनेाई, कविताधारी, कंथाधार।
मारगदस मेवाड़ नरेसुर, वहै तुहाले वड़ दातार ॥ २ ॥
हर पंथ अथहर पंथ अह हुअ........इत्यादि" इनसे

चारण कवियों ने इनको शिव का अंश कहा है; इसके कारण ये हैं (१) इस हम्मीर ने गए हुए चित्तोड़ को फिर सं० १३८३ में वापिस जेतसी से ले लिया था, (२) यह दानी बहुत था। इसके दान की प्रशंसा प्राचीन ग्रंथों और प्रशस्तियों में स्थान-स्थान पर लिखी है, (३) तीसरे यह महावीर था इसको विषमघाटी पंचानन आदि उपाधियें थीं। हम्मीर का देहांत संवत् १४२१ में हुआ।

राणा साँगा, जो बाबर से देश-रक्षा के लिये लड़े थे, महावीर थे और उन्होंने गढ़ मांडू गुजरात देश पर हमला करके उसे अपने अधीन कर लिया। यह किला (मांडू) उन्होंने बड़ी ही वीरता से बहुत ही कम आदमियों के साथ ले लिया था। और वहां के बादशाह मुजफ्फर (महमूद) को कैद करके १५७४ में चित्तोड़ ले आये थे। कई दिनों तक उसे रखा,

बाद में अपने अनुकूल प्रतिज्ञा कराकर और उसका जड़ाऊ ताज और पट्टा लेकर उसे छोड़ दिया। इसी को महाराणा-यश-प्रकाश के गीत २४ में इस प्रकार लिखा है। "खलचिया धरा खागाँ गुड़े खैगरे, असुरची अर्थ के घर आगाँ। मेलतो छोडतो बडा पोह माळवी रूफ साराहिये। राव रायाँ ॥३॥ मिले सगराम सगराम जुध मसलिये, त्रिजड बल खान खंधार तूटो। आस भंडार अपतंग ल पर गल छोडियो साह महमंद छूटो" ।४। और आगे २५ वें गीत में यह आया है "मांडव राव मुक्यो मेवाडे" इसी तरह अन्य गीतों में भी मांडू के बादशाह को पकड़कर छोड़ देना आया है जो इन महाराणा की बड़ी प्रशंसा है।

६, ७, और ८ वें दोहों में चित्तौड़गढ़ की विशालता प्राकृतिक उपयोगिता, अनुपमता, दृढ़ बनावट आदि की प्रशंसा है। पहाड़ की ऐसी बनावट आ पड़ी है कि वर्षा का पानी बड़ी सी रुकावट याने बंध से पुष्कल भरा रहता है; निर्झर सदा भलकर व्योम मुख के कुंड में गोमुख होकर झाकता रहता है, उसका पानी कभी नहीं सूखता है। आश्चर्य है! किले में इस तरह पानी की रसद बड़े काम की होती है और दोहे के उत्तरार्द्ध में किले की मजबूती की प्रशंसा है, इस किले की दीवार के कँगूरे ऐसे हैं मानो दूसरे किलों की बुर्जें हों। राजविलास में आया है—

"मुख भीम कुंड सु आनिए, जसुतीर गोमुख जानिए।
पै धार पतन प्रवाहनी, अवलोक ते उच्छाहनी ॥१०३॥

सुन बुरज गिरि मम गात यह वर धारि मम विख्यात यह,
भारी कपालसु भग्गला अति गाढ़ शृंखल अग्गला ॥९६॥
प्राकार तीन प्रचंड हैं, मनु अमर आयुधखंड ।
सुविशाल गज सँग तीस के, उत्तंग गज एकतीस के ॥९७॥

नवें दोहे से प्रायः अंत तक अकबर की चढ़ाई और उस विकट लड़ाई में राजपूतों की चढ़ाई, जयमल पत्ता की अनुपम जगत्प्रसिद्ध वीरता आदि का वर्णन है। यह लड़ाई इतिहास-प्रसिद्ध है। अकबर बड़ी विकट सेना लेकर वि० सं० १६२४ (ई० सन् १५६७) में चढ़ आया। और महाराणा उदयसिंह की अनुपस्थिति में किले के रक्षक और रण के नियंता सिसोदिया पत्ता (प्रतापसिंह अमेट के ठिकाने का पूर्वज) और मेड़तिया राठौर जयमल (बदनोर के सरदारों के पूर्वज) नियुक्त हुए थे। ये बड़ी बहादुरी से अकबर और उसकी सेना को छकाकर वीर-गति को प्राप्त हुए इनकी छतरियाँ वहाँ बनी हुई हैं।

चौदहवें दोहे में "दिए दुरंगा ढाह" से अकबर की वह कारीगरी सूचित होती है कि दमदमे और सलामत बुर्ज और सुरंगें लगाकर चित्तोड़ के विशाल बुर्जों को सुरंग से उड़ाया।

पंद्रहवें दोहे से अठारहवें दोहे के पूर्वार्द्ध तक अकबर के विजयशाली होने और उसके बल की प्रशंसा है। कश्मीर और बंगाल के लेने की जो प्रशंसा कवि ने यहाँ लगाई है वह चित्तोड़ की चढ़ाई से पूर्व की नहीं है सो संवतों से पाठक जान लें।

अठारहवें दोहे के उत्तरार्द्ध से लगाकर २० वें तक किले के वीरों, योद्धाओं और सामान का सूक्ष्म वर्णन है तथा जयमल पत्ता का गुणगान है। जैसा कि पाठक जानते हैं, जयमल राठौर वीरमदेव (मेड़तिये) के ११ पुत्रों में सबसे बड़ा था। उसका जन्म वि० सं० १५६४ आश्विन सुदि ११ को हुआ था। मेड़ते का किला लेने को अकबर ने १६१८ में मिर्जा शर्फुद्दीन को भेजा था। इसने किले में सुरंग लगाकर किला हस्तगत कर लिया और उसी समय ५०० राजपूतों को लेकर जयमल राणाजी के पास उदयपुर आ गया। पत्ता प्रतापसिंह प्रसिद्ध चूंडा के पुत्र कांधल का प्रपौत्र था। २१ वें दोहे से ३२ तक चित्तौड़गढ़ के इस युद्ध के संबंध में कवि की चोज-भरी प्रशंसा, गढ़ की नैसर्गिक श्रेष्ठता और बनावट की उत्तमता और अजेयता का दिग्दर्शन है। आगे ३३ से ४५ तक अकबर और उसके वजीर आसफखां का विचार, और फतह करने की तदबीरें और जयमल पत्ता को संदेश भेजना और उनका अन्य वीरों से सलाह करके जवाब भेजना कवि ने वर्णन किया है। दोनों तरफ के जवाब सवाल इन दोहों में बहुत वीरता-पूर्ण हैं परंतु ठा० हनुमंत-सिंह रघुवंशी रचित इतिहास में यह लिखा है—"किलेदारों ने एक दफे सांडा सिलेदार को और दूसरी दफे साहिब-खाँ को भेजकर सुलह की दरख्वास्त की मगर बादशाह ने यही जवाब दिया कि जो राणा उदयसिंह हाजिर हो जावे तो सुलह

लिखी है और वहीं वर्णन को समाप्त करते हुए यह लिखा है—
"Such, roughly described, is the hill which with comparatively little aid from art in the form of bastioned encircling walls near the summit has been the principal fortress of the Mewar Family"

(p. 1.)

अर्थात् संक्षेप वर्णन से यह पहाड़ वह है जो थोड़ी सी कारीगरी के साथ अर्थात् बुर्जीदार दीवार को चोटी पर धारण करते हुए ११५० वर्ष तक मेवाड़ राज्यवंश का प्रधान किला रहा है।

ओझा गौरीशंकरजी ने अपने इतिहास में कैसे उत्तम वचनों में इस किले की सच्ची प्रशंसा लिखी है—"राजपूत जाति के इतिहास में यह दुर्ग एक अत्यंत प्रसिद्ध स्थान है जहाँ असंख्य राजपूत वीरों ने अपने धर्म और देश की रक्षा के लिये अनेक बार असिधारा-रूपी तीर्थ में स्नान किया और जहाँ कई राजपूत वीरांगनाओं ने सतीत्व-रक्षा के निमित्त, धधकती हुई जौहर की अग्नि में कई अवसरों पर अपने प्रिय बाल-बच्चों सहित प्रवेश कर जो उच्च आदर्श उपस्थित किया वह चिरस्मरणीय रहेगा। राजपूतों के लिये ही नहीं किंतु स्वदेशप्रेमी हिंदू संतान के लिये क्षत्रिय-रुधिर से सींची हुई यहाँ की भूमि के रजकण भी तीर्थरेणु के तुल्य पवित्र हैं।"
(पृ० ३४९ प्र० भाग)

इस "भुरजालभूषण" के गुणगान से हम भी अपनी लेखनी को, सेवा में प्रवृत्त करते हुए और सहायक ग्रंथों के आचार्यों के, कृतज्ञ होते हुए यहाँ पर विश्राम देते हैं।

(१०) गंगालहरी

'गंगालहरी' ग्रंथ में कवि ने दोहा और सोरठा छंदों में गंगाजी की स्तुति, गंगाजी की गुणावली, गंगाजी से अपनी मनोरथ-सिद्धि की प्रार्थना बड़ी चोजभरी वाक्यावली से वर्णित की है। चलते ही मंगलाचरण का दोहा कितना उत्तम है—

"श्रीपत चरण सरोजरो गंगाजल मकरंद।
अलियल ज्यूं कर पान अब अधिकावण आनंद।"

यहां विष्णु के चरण को कमल कहा है और उससे निकले हुए गंगाजल को मकरंद अर्थात् पुष्प-रस कहा है और कवि ने अपने आपको भौंरा बनाया है। इस दोहे में 'अब' शब्द का प्रयोग यह अर्थ ध्वनित करता है कि अनेक पुष्पों का रस ले लिया अर्थात् अनेक नदियों में स्नान कर लिया परंतु गंगा की प्राप्ति में अलौकिक रस पाया अथवा अब उत्तर अवस्था में गंगा की शरण लेना ही सच्चे आनंद का हेतु है। सकता है अर्थात् मोक्ष प्राप्त हो सकता है। वा 'अब' शब्द से कलियुग का भी अभिप्राय लिया जा सकता है, और साथ ही यह प्रयोजन भी निकलता है कि अपने कल्याण के लिये और सब जगह भटक आया परंतु फल की प्राप्ति नहीं हुई तो अब अर्थात् अंत में गंगा के आश्रय से अभीष्ट सिद्धि

की संभावना हुई। इसकी पुष्टि "अधिकावण आनंद" से होती है। इस दोहे में इस वास्ते रूपकालंकार है। कवि ने अलंकार को अच्छा निभाया कि 'पान' शब्द और 'आनंद वृद्धि' अलंकार के स्वरूप और अर्थ के गौरव को बढ़ाता है। शब्द-योजना की तरफ ध्यान दें तो 'श्री' शब्द और 'श्रीपत' शब्द प्रारंभ में आने से पूर्ण कल्याणवाचक हैं और गंगाजल को श्रीजल भी कहते हैं। पाठक बाँकीदासजी के ग्रंथों को पढ़कर जानेंगे कि डिंगल छंद की प्रसिद्ध रचना-चातुरी में वैणसगाई (वर्णमैत्री) एक आवश्यक और अनिवार्य अंग होता है। कवि बाँकीदासजी ने इसे अपनी रचना में सर्वत्र खूब निभाया है। इस दोहे में 'श्री' में तालव्य शकार और सरोज में दंत्य सकार मंद प्रथम है और द्वितीय चरण में गंगा का गकार और मकरंद का ककार हीन चतुर्थ और तृतीय चरण में अलियल का अकार और अब का अकार और चतुर्थ में अधिकावण का अकार और आनंद का आकार पूर्ण प्रथम वैणसगाई हैं। हमने जहाँ तक निगाह डाली है, चतुर बाँकीदासजी वैणसगाई के निर्वाह में बहुत कम चूके हैं। यह तो नहीं हुआ है कि सर्वत्र ही उत्तम वैणसगाई ला सके हों परंतु किसी भी प्रकार की वैणसगाई जरूर रखी है। वैणसगाई बना बनाया अनुप्रास का काम देता है। इसमें संदेह नहीं कि वैणसगाई के प्रयास से कहीं कहीं अर्थ का घाटा हो जाता है। हाँ, प्रवीण

कवियों में इस घाटा के न आने देने का प्रयत्न पाया जाता है तब भी साहित्यमर्मज्ञ इस बात को जानते हैं कि शब्दालंकार और अर्थालंकार में स्वाभाविक स्थायी मैत्री नहीं है अपितु शब्दालंकार अर्थालंकार को हानि ही करता है। शब्द-सिद्ध और अर्थ-सिद्ध कवियों का कौशल भले ही इसका वारण करे और इन दोनों का मनमुटाव मिटानेवाले ही 'मोटे कवि' कहला सकते हैं। बाकीदासजी का यह सारठा देखिए—

"धर गंगाजलधार, आंणी तपकर ऊजलो।
आ मोटो उपगार भागीरथ कीधो सुयण।"

इसमें बिलकुल प्रयास मालूम नहीं होता और न वर्ण-मैत्री से अर्थ को हानि पहुँची है अपितु छंद में उज्ज्वलता आई है और **मोटो** शब्द तो हमारे कवि को अपने गुण में **मोटो** (प्रबल या प्रवीण) बनाता है।

इस गंगालहरी में, प्रत्येक छंद में, एक वा दो अलंकार अवश्य हैं। पढ़नेवाले स्वयं समझेंगे कि किसमें क्या अलंकार है। अलंकार ग्रंथों की तरह कहीं भी बाँकीदासजी अलंकार लाने की कोशिश नहीं करते हैं; वे तो स्वाभाविक उक्ति ही में अपने मन का अभिप्राय उक्त शब्दों में कह देते हैं और अर्थ की सुंदरता अलंकार के साथ आ जाती है। मानो उनकी उक्ति आप ही सुंदर है, अलंकार से सुंदर नहीं। सच कहा है—"सुंदर जे हैं आपही सुंदर तिनको कहा सिंगार॥"

श्रीगंगाजी के लिये जगह जगह बांकीदासजी की अगाध भक्ति और प्रेम टपके पड़ते हैं, शायद इस ग्रंथ की रचना के पूर्व उन्होंने गंगास्नान नहीं किया होगा, अथवा किया होगा तो उनके मन की फिर भी नहीं निकली होगी, लालसा बनी ही रही होगी। यथा—

"दूधां बरणां पाणियां, मंजन करसी देह।
बांका उण दिन बरस ही, दूधां हंदा मेह॥"
"बांको खिण नर वीसरै, तट निरमल रू तोय।
आया चंगा दीहड़ा, गंगा दरसण होय॥"
"नग नायकचा नाह, विच जटजूट बसावियो।
पावन गंग प्रवाह, पाणी तू कद परसही॥"
"गंगा ब्रम्म कमंडली, पावनता विण पार।
तू मोनं तिसमावही, कै देसी दीदार॥"

इस गंगालहरी में अन्य कवियों के, जिन्होंने गंगाजी की स्तुति में स्तोत्र रचे हैं (पंडितराज जगन्नाथ, वाल्मीकि, कालिदास, शंकराचार्य, ग्वाल कवि, पद्माकर आदि), विचार कहां कहां झलकते हैं तथापि अनेक स्वतंत्र और नए विचार भी हैं। यथा—

"सुत विनता तन सोय, जस तजे जणणी जतन।
तू राखे मझ तोय, भसम हाड भागीरथी॥"
"नीर मिले तो नीर में, सायर माँह समाय।
नर न्हावे तो नीर में, जोत समावै जाय॥"

"गल मुँडमाल मसाण ग्रह, संग पिसाच समाज।
पावन तुझ प्रभाव सूं, संभु अपावन साज॥
जल अवगाहण जीवणा, दूर हुआं अति दीन।
तू गंगा ना जल तणा, मोकद करसी मीन॥"
"पावन तू हरि पाय करि, कै तो करि हरि पाय।
है पावन ओ मुझ हिय, मात सँदेह मिटाय॥"

जयपुर,
ता० १५ मार्च सन १९२९

पुरोहित हरिनारायण

नोट—इस भूमिका के लिखने में बा० महताबचंदजी खारैड़ विशारद तथा चौबे सूर्यनारायणजी दिवाकर ने बड़ी सहायता दी, तदर्थ इन्हें अनेक धन्यवाद हैं। ह० ना०

बाँकीदास ग्रंथावली

दूसरा भाग

(१) अथ वैसक वार्ता लिख्यते

दोहा

साबळ अणियां सांकही, चोरंग वणिया चेत ।
भणियां सूं भेलप नहीं, हुरकणियां सूं हेत ॥ १ ॥
दीठा भाव दिखावणां, हुरकणियां रा हाथ ।
हात नहीं मन किमि हिचे, भेले अस भाराथ ॥ २ ॥
गिनका रो जे नर ग्रहे, कवरी डंड करेण ।
खाग ग्रहे किमि दळण खळ, तेज विहीणा तेण ॥ ३ ॥

वैसक = वेश्या, रंडी ।

(१) साबळ = सेल । सांग (लोहे की) । अणियां = नोंक, फाळ । सांकही = सकुचाते हैं, डरते हैं । चोरंग = चतुरंगिणी सेना, फौज । वणियां = बने हुए । चेत = ज्ञान, होश । भणियां = विद्वान् । भेलप = मेल, सत्संग । हुरकणियां = रंडिये वा रंडी के दल्लाल । हेत = प्यार, स्नेह ।

(२) दीठा = देखा । दिखावणां = दिखानेवाले । किम = कैसे । हिचे = भिड़े, चले । अस = अश्व, घोड़े । भाराथ = युद्ध । भेले = मिले, भिड़े ।

(३) गिनका = रंडी । कवरी = वेणी, स्त्रियों की चोटी ।

आगं बरवा अच्छरा, उर धरता अनुराग ।
हवणों का अलियल हुआ, वार वधू वप वाग ॥ ४ ॥
सठ गनका री वात सुण, आलोचे नह एम ।
चाह घणां चरणां चढ़ी, काठां चढ़सी केम ॥ ५ ॥
आ काठां चढ़सी अवस, धरणीधर दे धोक ।
सठ मन मानै सुधरसी, पातर सूं परलोक ॥ ६ ॥
फरगट मारै फूटरा, कर सूं सरगट काढ़ ।
सठ दाखै भालो सरस, गिनकावालो गाढ़ ॥ ७ ॥
हंसियो जग आसक हुए, वसियो खोवण वीत ।
रसियो नागी रांड सूं, फसियो होण फजीत ॥ ८ ॥

डुंड करेण = भुजदंड से । खाग = खड्ग । दलण = दलने, मारने । विहीणा = विहीन । तेण = उन (हाथों) में ।

(४) बरवा = बरने (प्राप्त करने) को । अच्छरा = अप्सरा । हवणों = अब । अलियल = भँवरे । वारबधू = वेश्या । वप बाग = वप (वपु) शरीररूपी बाग (बगीचे) में ।

(५) आलोचे = समझे, विचारे । एम = ऐसे । चाह = लोभ । घणां = बहुत । काठां = लकड़ी में, चिता में । केम = कैसे ।

(६) आ = यह (निज सती स्त्री) । अवस = अवश्य । धरणीधर = सूर्य्य वा ईश्वर । पातर सूं = रंडी से ।

(७) फरगट = निजारे, फरकाफूंदी, नृत्य । फूटरा = अच्छा, सुंदर । सरगट = घूंघट । दाखै = कहै । भालो = देखो । गाढ़ = दृढ़ता ।

(८) आसक = आशिक, प्रेमी । खोवण = खोने को । वसियो = बसा । वीत = वित्त, धन ।

करहे असवारी कियां, सोना हरणी संग ।
उण ढोला ज्यूं आपरो, ढोलो मानें ढंग ॥ ९ ॥
बाजे नित घूघर बंधे, फरगट वालो फैल ।
तन मन मिलयो तायफे, छांकां हिलियो छैल ॥ १० ॥
गोला सूं कीजे गुप्ट, ऊभी गिनका आण ।
लोपी छांका लेण नूं, काका वाली काण ॥ ११ ॥
घणो दिराडे घूमरां, गवराड़े नह गूढ ।
भाड़े वाली भामनूं, माथे चाढ़े मूढ ॥ १२ ॥
पारस नह नह पोरसो, पातर राखे पास ।
जिणरे आयो जांणजे, नेड़ो धनरो नास ॥ १३ ॥

(९) करहे = ऊँट । सोनां हरणी = रंडी, धन हरनवाली । उण = वो । ढोला = ढोला, नरवर का राजा । ढोलो = ढोला । (यहां ढोला मारणी की कथा का प्रसंग है । व्याजस्तुति है ।)

(१०) फैर = फिरर, फेलाव । तायफे = रंडी से । छांकां = मद्य से । हिलियो = आदी हुआ, हिला ।

(११) गोला = गुलाम, नीच । गुप्ट = गोष्ट, बात-चीत, गुप्त सलाह । ऊभी = खड़ी हुई । आण = आकर । लोपी = मिटाई । छांकां = मद्य । लेण नूं = लेने के लिये । काका = (चाचा) बड़ेरे । वाली = की । काण = मर्यादा ।

(१२) दिराडे = दिलाता है । घूमरां = घूमर, नृत्यविशेष । गवराड़े = गवाता है । नह गूढ़ = चौड़े, (नह = नहीं + गूढ़ = गुप्त) । भाड़े वाली भामनूं = रंडी को । माथे चाढ़े = सिर पर चढ़ाता है । मूढ = मूर्ख आदमी ।

(१३) नह = नहीं । पोरसा = सुवर्ण पुरुष । पातर = रंडी । नेड़ो = नज़दीक । नास = नाश ।

सोरठा

पातर वाली प्रीत, मीठी लागे प्रथम मन ।
मंद हुआ धन मीत, हुएं विरस कड़वी हुवे ॥ १४ ॥

दोहा

देव पितर इन सूं डरै, रसक तरै किण रीत ।
हेम रजत पातर हरै, पातर करे पलीत ॥ १५ ॥
घटै आव जस धन घटै, अकल हटै बल अंग ।
नींदवियो दानां नरां, पातर तणों प्रसंग ॥ १६ ॥
काका बाबा भ्रात कवि, हुवै दूर रुख हेर ।
संत महंत न संचरै, पातर रे पग फेर ॥ १७ ॥
पड़दे घालो पातरां, ठावी ठावी ठौड़ ।
परणीं नूं नह पेटियो, देखो बुधरी दौड़ ॥ १८ ॥

(१४) विरस = शत्रु—मनोमालिन्य वाले ।

(१५) रसक = रसिक, प्रेमी । तरै = पार लगे । किण रीत = किस प्रकार । पातर = पात्र, आभूषण । हेम = सोना । रजत = चांदी । पलीत = अपवित्र, भ्रष्ट, नाश, प्रेतयोनि ।

(१६) आव = आयुष्य । हटै = घटती है, मिटती है । नींदवियो = निंदा की है । दानां = बुद्धिमान् ।

(१७) रुख हेर = रुख देखकर । संचरै = आते हैं । पग फेर = लौट जा ।

(१८) ठावी = बड़ी, प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित । ठौड़ = जगह । नूं = को । पेटियो = एक वक्त के खाने की सामग्री आटा दाल आदि । बुध री = अकल की । ठावी = बड़ी, प्रतिष्ठित, खास, प्रसिद्ध ।

संकै जावे संग सूं, अरध निसा में ऊठ ।
नर मूरख तो पिण न दे, पातरियां नूं पूठ ॥ १९ ॥
तक लीधो सोना तिसो, पातरवालो प्रेम ।
ज्यां सांचों कर जांणियो, कहो न दे धन केम ॥ २० ॥
रसिया रो तन रोग सूं, सड़ जावे नह सोच ।
हेम रजत खातर हुवै, पातर लोच पलोच ॥ २१ ॥
घणी बुरी घर घालणी, पातर सूं है पाम ।
जीव गयां जावै जिका, करे दवा नह काम ॥ २२ ॥
पातर हूं ता प्रीत कर, आफू डलां अरोग ।
आखर पछतावा अठे, लानत दे दे लोग ॥ २३ ॥

(१९) संकै = शरमाता हुआ, चुपके से । अरध निसा = आधीरात । पूठ = पीठ ।

(२०) तक लीधा = ताक लिया, देख लिया । सोना तिसो = सोने जैसा । वालो = का । ज्यां = जिन्होंने । केम = कैसे ।

(२१) रसिया रो = प्रेमी का । नह = नहीं । हेम रजत खातर = सोने चांदी के वास्ते । लोच पलोच = अति कोमल होकर लपट जाती है ।

(२२) घर घालणी = घर का नाश करनेवाली (डेरा जमानेवाली) । पांम = पांव, उपदंश जिससे सारा शरीर फूट निकले । जिकां = वह ।

(२३) हूं ता = से । आफू डलां = अफीम के डले । अरोग = खाकर । देदे = बहुत देने से । अठे = इस कार्य में (रंडीबाजी में । जब चेत हुआ आंख खुली तब अपने को धिक्कारा) ।

धन लोड़ै तोड़ै धरम, विध विध जोड़ै बात।
जड़ सनेह खोड़ै जड़ण, गिनका मोड़ै गात ॥ २४ ॥
दूजां नूं सानी दिये, एक तणै बस अंक।
किण किण नँह दीधो कदम, पातर रै परजंक ॥ २५ ॥
रामजणी अर कंचणी, पातर देवै पांम।
है बाघण बन हेकरी, राखै अलगी राम ॥ २६ ॥
अंग घणां आलंगियो, अधर घणांरी ऐंठ।
नर मूरख जाणै नहीं, पातरियां री पैठ ॥ २७ ॥
कोड़ वचन खातर कियां, पातर न करै प्रीत।
आथ देख अकुलीण नूं, माड़ै कर ले मीत ॥ २८ ॥

(२४) लोड़ै = खोये, लूटे। जड़ = झूठा। खोड़ै जड़ण = पग बंधन करने को। मोड़ै = मरोड़ती है।

(२५) दूजां नूं = दूसरों को। सानी = इशारा। दिए = देती है। एक तणै = एक के। अंक = गोद। किण किण = किस किसने। दीधो = दिया। कदम = पैर। परजंक = पलंग।

(२६) रामजणी, कंचणी, पातर = यह सब वेश्याओं के भेद हैं। रामजणी = प्रायः हिन्दू वेश्या, कंचनी = प्रायः मुसलमान वेश्या, पातर भी प्रायः हिन्दू वेश्या हैं किंतु यहां दोनों के लिये है—यथा प्रवीण-राय पातरी। बाघण = नाहरी। हेकरी = एक की। राखै = रखे। अलगी = अलग, दूर।

(२७) घणां = बहुत। आलंगियो = आलिंगन किया। ऐंठ = झूठन। पैठ = प्रतीत।

(२८) कोड़ = क्रोड़। खातर = खातिर। आथ = द्रव्य। अकुलीण नूं = नीच को। माड़ै = जबर्दस्ती से। मीत = मित्र।

कर कर बाड़ा कपटरा, धाणा पाड़ण धाम ।
दिल चोरण झाड़ा दिए, भाड़ावाली भांम ॥ २९ ॥
बादल काला बरसिया अत जल माला आंण ।
काम लगो चाला करण, मतवाला रंग मांण ॥ ३० ॥
हरणीमन हरियालियां, उरहालिया उमंग ।
तीज परव रँग त्यारियां, सावण लायो संग ॥ ३१ ॥
लूंवां झड़ नदियां लहर, बक पंगत भर बाथ ।
मोरां सोर ममोलिया, सावण लायो साथ ॥ ३२ ॥
इंद्रधनुष तणियो अजब, चातुक धुन मन चाव ।
बीज न मावे बादलां, रसिया तीज रमाव ॥ ३३ ॥

(२९) बाड़ा = ओट, आड़ । धाड़ा पाड़न = डकैती करने को । झाड़ा = झाड़ फूंक, मीठे वचनों द्वारा फुसलाना । भाड़ावाली भांम = पैसे की स्त्री, किराये की स्त्री, रंडी ।

(३०) बरसिया = बरसे । जलमाला = मेघमाला । आंण = आकर । काम = कामदेव । लगो = लगा । चाला खेल, तमाशे । रंग मांण = भोग कर ।

(३१) हरणीमन = मनोहर । हरियालियां = हरियाली । उर = हृदय में । हालिया = चलने लगी । तीज परव = यहां श्रावण सुदी या भाद्र वदी तृतीया (जिसे कजली तीज भी कहते हैं) से मतलब है, यह स्त्रियों का बड़ा त्योहार है ।

(३२) लूंवा झड़ = मेह की झड़ी । बक पंगत = बगुलों की पंक्ति । भर बाथ = बहुत खेंचकर अपने संग । ममोलिया = वीर बहूटी, वीरबधूटी ।

(३३) चातुक धुन = पपीहे की बोली । चाव = उमंग । बीज = बिजली । मावे = समावे । रमाव = खिला या आनन्द दिला ।

मोर शिखर ऊंचा मिलै, नाचै हुआ निहाल ।
पिक ठहके झरणा पड़ै, हरिए डूंगर हाल ॥ ३४ ॥
गाजे घण सुण गावणो, प्याला भर मद पाव ।
झूले रसम रंग झड़, झोटा देर झुलाव ॥ ३५ ॥
पंच सुरंगी पाघ रा, ढांके मत धर ढाल ।
काछी चढ़ आछी कहूँ, हंजा भीजण हाल ॥ ३६ ॥
मेह सुजल पोटां महीं, सावण करता सैल ।
मोटा हुवे सिताब मन, छोटा रा ही छैल ॥ ३७ ॥
भीज रीझ झेली भली, पावस पांणी पैल ।
मतवाळा मनवार री, छाक मठेलो छैल ॥ ३८ ॥
आलीजा अलबेलिया, हो हंजा हुस्नाक ।
भीनोड़ा रसिया भमर, छैल पियो मद छाक ॥ ३९ ॥

(३४) निहाल = आनंद भरे या आशा पूर्ण हुए । ठहके = गाते । डूंगर = पहाड़ । हाल = चलो ।

(३५) घण = घन, मेघ । सुन गावणो = गाना सुन । रंग झड़ = रंग की झड़ी । झोटा देर = ढकेलकर ।

(३६) सुरंगी = कसूमल लाल । पाघरा = पगड़ी का । कच्छी = कच्छी घोड़ा । आछी = अच्छी । हंजा = प्रेमी । भीजण = भीगने को ।

(३७) पोटां = बहुत । सैल = सैर । सिताब = जल्दी से ।

(३८) भीज = भीजने की । रीझ = बखशिश । झेली = ली । भली = अच्छी । पैल = बहुतायत । मनवार = मनुहार । छाक = मदिरा का प्याला । मठेलो = पीछी मत दो, इंकार मत करो ।

(३९) अलबेलिया = छैला । हुसनाक = सुंदर । भीनोड़ा = भीगे हुए । मद छाक = मदिरा का प्याला (खूब मदिरा पीवो) ।

पांणी सूं पोसाक रो, ऊतरयो रंग धुपीज ।
द्यो रंगभीनी दूसरी, रंग भीनी नूं रीझ ॥ ४० ॥
भीनो रंग जल भीजतां, भांयींनां सिरदार ।
ते लीनो धन मन तिया, वस कीनो इण वार ॥ ४१ ॥
नाच गाय कर निलजता, रच वप भूषण रास ।
मार निजारा मोहियो, हंजा मुधरे हास ॥ ४२ ॥
विहद कोर गोटे वणी, पातर रे पोसाक ।
परणी फाटे पंगरण, बेली फाटे वाक ॥ ४३ ॥
नायक तीजी नार रो, मो दुखदायक मार ।
धरणी धर खावँद धकै, परणी करै पुकार ॥ ४४ ॥
में कीधा सांचे मते, नायक तोसूं नेह ।
वण आवें सो देह वित, दाह विरह मत देह ॥ ४५ ॥

(४०) सूं = से । पोसाक रो = कपड़ों का । ऊतरयो = उतर गया । धुपीज = धुल करके । द्यो = देओ । रंगभीनी = रंग से भरी हुई, स्त्री या रंडी का विशेषण या नाम ।

(४१) भांयींनां = आड़ीवाला । इणवार = इस वक्त (मौका देखकर) ।

(४३) विहद = बेहद । परणी = विवाहिता स्त्री । फाटे पंगरण = फटे वस्त्र । बेली = सेवक, सहायक, हितैषी (स्त्री के लिये) । फाटे वाक = भूखे ।

(४४) तीजी = अन्य । मो = मुझे । मार = कामदेव । धरणीधर = ईश्वर । खावंद = पति । धकै = से, आगे, सन्मुख ।

(४५) नायक = स्वामी । सांचे मते = सच्चे मन से । वण आवे = जैसा बन सके । दाह = ज्वाला ।

प्रात तणी पासी पड़ी, दासी हूं विण दांव ।
आंख पलक सिर ऊपरे, थारा धरजे पांव ॥ ४६ ॥
प्यारा थांसूं पलक ही, बांछूं नहीं विजोग ।
उरवसिया मो आवजो, रसिया थारा रोग ॥ ४७ ॥
पमगां चढ़ लाटेपटो, रावत कीधा वाव ।
कुंण पूछे ढोलाकनें, जांगडिया नूं जाव ॥ ४८ ॥
परगह सिर लीधो पलो, रसिया में नँह रांम ।
ग्रहनव नाड़े गांठिया, भाड़े वाली भांम ॥ ४९ ॥
कं नाड़े कं कंचुए, बांध्या वेणी बंध ।
कामण रा राखै कनै, मादलिया मन मंध ॥ ५० ॥

(४६) तणी = की । पासी = फांसी । विण दाव = बिना दाम की या बिना छलछिद्र की । थारा = तुम्हारा ।

(४७) पलक ही = पल भर । बांछूं = चाहूँ । विजोग = वियोग । उरवसिया = हृदयेश्वर । आवजो = आना ।

(४८) पमगां = घोड़े । लाटेपटो = लटपटा । वाव = वचन । जांगरिया = मीरासी या गायक । जाव = जवाब ।

(४९) परगह = साथी । सिर लीधो पलो = मुँह छिपा लिया । गांठिया = बांध लिए ।

(५०) कंचुए = कंचुकी में । वेणी बंध = चोटी में । कामण रा = जंत्र मंत्र के । कनै = पास । मादलिया = तावीज या सोने चांदी की चौकियां । मन मंध = वशीकरण के ।

होडै छानी दूतियां, लफरा जिणरै लाख ।
आपतणी कर अँजसियो, रसियो पड़दे राख ॥ ५१ ॥
कामण बस किण कामरू, बणियो घाणी बैल ।
हार गयो अछतो हुओ, छता थको ही छैल ॥ ५२ ॥
सांप्रत जाणी सोखता, चितली जांण चुड़ैल ।
हार गयो अछतो हुओ, छता थको ही छैल ॥ ५३ ॥
चित फाटो देखे चिरत, सुणियो अपजस सोर ।
रसिया मुख तालो रहै, जादूवालो जोर ॥ ५४ ॥
देखे फिरती दूतियां, सूता धूंण सीस ।
फंसियो कामण फंद मे, रसियो करै न रीस ॥ ५५ ॥
परगह ले बांधी पगां, सेंठो गृघर साथ ।
हंजारो सारो हुकम, हुओ रंगीली हाथ ॥ ५६ ॥

(५१) छानी = छिपी हुई । लफरा = लुच्चे लफंगे । आपतणी = अपनी । अंजसियो = फूला, खुशी मनाई ।

(५२) बस किण काम = काम के बस किया या कामरू देश की स्त्रियों के मुवाफिक दीन बनाया । अछतो = निर्बल, अनहुआ । छता = होते हुए भी ।

(५३) सांप्रत = चौड़े धाड़े । सोखता = सोखणी या चूसनेवाली । चितली = रीझा ।

(५४) चित फाटो = मन फटा । चिरत = चरित्र । मुख तालो रहै = मुँह बंद रहे ।

(५५) फसियो = फँसा । रीस = गुस्सा ।

(५६) सेंठी = मजबूत । गृघर = घूघरों के । हंजारो = प्यारे का ।

दीधा धन लीधा दलद, कीधो गात कुढंग ।
गनका सूं राखे गुसट, रसिया तोनूं रंग ॥ ५७ ॥
सोवे अलगी सायधण, सुपने ही नँह संग ।
गनका सूं राखे गुसट, रसिया तोनूं रंग ॥ ५८ ॥
सुजस विगड़ विगड़ी सभा, आहुट गई उमंग ।
गनका सूं राखे गुसट, रसिया तोनूं रंग ॥ ५९ ॥

---

(५७) दलद = दरिद्रता । कुढंग = कुरूपा, बेढंगा । गुसट = गोष्ठी ।

(५८) सायधण = सहधर्मिणी, विवाहिता स्त्री । अलगी = अलग ।

(५९) आहुट गई = उड़ गई ।

(२) अथ मावड़िया मिजाज लिख्यते

दोहा

मेछां हंदा मुलक में, जो मावड़ियो जाय ।
महबूबां री मिसल में, किल सिरदार कहाय ॥ १ ॥
मावड़िया अँग मोलियां, नाजुक अंग निराट ।
गुपत रहे ऊमर गमै, खाय न निजबल खाट ॥ २ ॥
विना पोटली वाणियो, बिन सींगां रो बैल ।
कदियक आवै कोटड़ो, छिपतो छिपतो छैल ॥ ३ ॥
नैणा रा सोगन करै, मै मानै सुण भूत ।
रामत ढूलां री रमै, रांडोली रा पूत ॥ ४ ॥

मावड़िया मिजाज = स्त्री स्वभाववाला (पुरुष), मायला, जो बचपन से माता के पास अधिक रहा हो ।

(१) मेछां = म्लेच्छ । हंदा = का । मावड़िया = मां का बिगाड़ा हुआ पुत्र । महबूबां री = दिलदारों की, प्रिय लोगों की । मिसल = पंक्ति । किल = निश्चय ।

(२) मोलियां = पुरुषार्थहीन निर्बल, बारीक कपड़े का लहरिया । निराट = निपट । गुपत = गुप्त । गमै = खोवे । खाट = पैदा कर ।

(३) पोटली = गठरी । सींगां = सींग के । कोटड़ी = सरकारी या जागीरदारों की कचहरी ।

(४) नैणा रा = नेत्रों की । सोगन = शपथ । रामत = खेल । ढूलां री = गुड़ियों की । रंडोली रा पूत = रंडा के पुत्र ।

सुरताणां राणां तणी, नँह पूछी जे बात।
मावड़िया मालक जठै, पूजीजे नँह पात ॥ ५ ॥
पाहण गल बांधै पड़ा, बेरो बावड़ियांह।
पिण मंगण मत पारथो, मुजलां मावड़ियाह ॥ ६ ॥
मात सलामत पित मुआ, आवे नँह आपांण।
धाम धूम मिजनूं घटा, जे मावड़ियां जांण ॥ ७ ॥
पगटे बांम प्रवीण रो, नर निदाढियो नाम।
नर मावड़िया नाम त्यूं, विना पयोधर बाम ॥ ८ ॥
कर मुख दे लचकाय कट, झमक चलै सुर झींण।
मावड़ियो महिला तणी, मारे रोज मलीण ॥ ९ ॥

(५) सुरताणां = बादशाह। राणां = राजा। तणी = की। पात = चारण या कवि।

(६) पाहण = पत्थर। बेरो = कूप। बावड़ियांह = बावड़ियें। पिण = परन्तु। मंगण = मांगनेवाले। पारथो = प्रार्थना करना। मुजलां = (पाठां० = मुलजां) बेशरम।

(७) सलामत = जिन्दा। मुआ = मरे। आपांण = शक्ति। धाम धूम मिजनूं घटा = कमजोर गुस्सा बहुत। जे = उनको। धामधूम = सुनसान। मिजनं = जनाना।

(८) बाम = स्त्री। निदाढियो = बिना डाढ़ी मूँछ का। (जैसे स्त्री प्रकट में बिना डाढ़ी मूँछवाला नर कहलाता है वैसे ही बायला बिना स्तनवाली स्त्री है।)

(९) कर मुख दे = मुँह पर हाथ दे। कट = कमर। झमक = ठमके के साथ। सुर झींण = बारीक आवाज। मलीण = नखरा.

पायो किण धनवंत पद, दामे डावड़ियांह ।
कवियण किन पायो कुरब, मांगे मावड़ियांह ॥ १० ॥
भूसर भारन झल्लही, गोधां गावड़ियांह ।
इम जस भारन ऊपड़े, मोलां मावड़ियांह ॥ ११ ॥
कहै सगा भोलप करी, दीधी डावड़ियांह ।
राव सरीखे रंगहूं, मुंहडे मावड़ियांह ॥ १२ ॥
कुज कोई चुंमन करें, गनका हंदो गाल ।
कुज कोई खावण करें, मावड़िया रो माल ॥ १३ ॥
नाव तिरे नहं नीर में, निबलां नावड़ियांह ।
राजस नँह सावत रहे, मिनखों मावड़ियांह ॥ १४ ॥

बड़ाई मारना । अथवा मलीण = स्त्रीधर्म, नवाब वाजिदअली शाह लखनऊवाले की तरह होकर ।

(१०) किण = किसने । दामें डावड़ियांह = लड़कियों के धन से । कवियण = कवियों ने । कुरब = इज्जत ।

(११) भूसर = जूड़ा, जूआ । झल्लहीं = उठा सकता है । गोधां गावड़ियांह = छोटा बैल गाय । ऊपड़े = उठता है । मोलां = सस्ता, हल्का, नीच, अयोग्य ।

(१२) सगा = संबंधी । भोलप = भूल । डावड़ियांह = लड़कियाँ । राव = रावड़ी अर्थात् फीका, रसहीन, पुरुषार्थ-हीन (रंगमहल में स्त्री के सम्मुख पुरुषार्थहीन हो जाता है) ।

(१३) कुज कोई = हर एक । चुंमन करें = चूमता है । हंदो = का । खावण करें = खाना चाहता है ।

(१४) निबलां = निर्बल । नावड़ियांह = नाव चलानेवाले, मल्लाह । राजस = राजसी ठाट बाट, साहिबी ।

डावा कर ऊपर दुसट, कर जीमणो करंत ।
सो लगाय मुख सांकतो, मावड़ियां कुचरंत ॥ १५ ॥
चाहे मिनखां चूतियां, नहं निरवाहे बोल ।
गुंजा सूं घटतो घणो, मावड़ियां रो मोल ॥ १६ ॥
सूकं जेठ मझार सर, तीखा तावड़ियांह ।
सूकं इम सिंधू सुणं, मुंहड़ा मावड़ियांह ॥ १७ ॥
मावड़ियां मन मांझली, सौ गाड़ां भर सीत ।
की ऊँचो माथो करं, पड़िया रहे पलीत ॥ १८ ॥
गरवे फोड़ं कुंभगज, घण बल घावड़ियाँह ।
पापड़ फोड़ पोमावही, मन में मावड़ियांह ॥ १९ ॥

(१५) डावा = बांयां । दुसट = दुष्ट । जीमणा = दाहिना । सांकतो = लजाता हुआ ।

(१६) चूतिया = बेवकूफ । निरवाहे = निबाहता है । गुंजा = चिरमिटी । घणो = बहुत ।

(१७) तीखा = तेज । तावड़ियांह = धूप में । सिंधु = वीर रस का राग । मुँहड़ा = मुँह ।

(१८) मांझली = मध्य । सीत = ठंड, लज्जा । की = क्या । माथा = सिर । ऊंचो करे = उठावे । पलीत = मैले, नीच । अथवा भतों की तरह से छिपे रहते हैं ।

(१९) गरवे = गर्व करे । कुंभगज = हाथी का कुंभस्थल । घण बल = बहुत बल के साथ । घावड़ियांह = शूर वीर । पोमावही = गर्व करते हैं ।

ओछा कुळ में ऊपना, दोभा डावड़ियाह ।
हवळे बोलै होट में, मूरख मावड़ियाह ॥ २० ॥
हांस उड़े फाटै हियो, पड़े तमाळा आय ।
दख जुध तसवीर दृगा, मावड़िया मुरझाय ॥ २१ ॥
पीठ तुरस केवाण कर, आग पास रजपूत ।
मावड़िया सोहै नहीं, मुख मूंछां सिर सूत ॥ २२ ॥
दीसे बदन दयामणा, हूबण जोगो डोळ ।
रहे हमेसा राज में, मावड़िया री मोळ ॥ २३ ॥
लाजाळू गुल चिमन में, खगकुळ मांहि बकोट ।
मावड़िया मिनखांमहीं, यां तीनां में खोट ॥ २४ ॥
ज्यांरो जीमन ऊपड़ै, सेणां मांही संत ।
वांरो कर किम ऊपड़ै, खळां विरदा बिच खेत ॥ २५ ॥

(२०) ओछा = छोटे । ऊपना = उत्पन्न हुए । दोभा = ढीले शरीर-वाले । डावड़ियाह = लड़के । हवळे = धीरे ।

(२१) तमाळा = आंखों में अँधियारी आना । जुध = युद्ध ।

(२२) तुरस = ढाल । केवाण = तलवार । सिर सूत = सिर पर पगड़ी ।

(२३) दीसे = दिखे । बदन = मुख । दयामणां = दया दिलानेवाला, दीन । जोगो-योग्य । डोळ = हाल, चेहरा, मुख । मोळ = मस्तापन ।

(२४) लाजालू = लजवंती के पेड़ जिसे छुईमूई भी कहते हैं । गुल चिमन = बाग । बकोट = बुगुला, काक । खोट = खुटाई, दोष । खग = पक्षी ।

(२५) ऊपड़े = उखड़ती है । सेणा = मित्र मंडली । संत =

कर कम्पै लोयण झरै, मुख ललरावै जीह ।
मावड़िया जुध में मिलै, पुगतापणरा दीह ॥ २६ ॥
देख सरप ह्वै दादुरा, सब्द कला कर सून ।
पुरख असेंदो पेख ह्वै, मावड़ियां मुख मून ॥ २७ ॥
मुख नहं नूर उछाह मन, बळ नहं कंध विसेष ।
मावड़िया लोयण महीं, रज हंदी नहं रेख ॥ २८ ॥
घूघू ज्यूं घुसियो रहै, मावड़ियो घर मांह ।
ऊठै बाहर आवही, तारां हंदी छांह ॥ २९ ॥
हेको काजन ह्वै सकै, आवो संत असंत ।
मावड़िया खिण खिण मता, नवा नवा निरमंत ॥ ३० ॥

साफ, स्पष्ट । खलां = शत्रु से । घिरया = घिरे हुए । खेत = रणभूमि ।

लोयण = नेत्र । ललरावे = कलराती है । जीह = जिह्वा । पुगतापण = बुढ़ापा । दीह = दिन ।

(२७) दादुरा = मेंडक । शब्द कला = बोलना । कर = से । सून = बंद, शून्य । असेंदो = अजनबी । पेख = देख । मून = मौन ।

(२८) उछाह = उत्साह । कंध = भुजा । रज हंदी = वीरता की, रजोगुण की ।

(२९) घूघू = उल्लू । घुसियो रहै = छिपा रहै । ऊठै = उठ करके । तारांहंदी छांह = रात्रि में ।

(३०) हेको = एक भी । खिण खिण = क्षण क्षण । मता = विचार । निरमंत = बांधता है, करता है ।

मावड़ियो वन मांझली, सो नहं जाय सिकार।
डोळा मिनखी सूं डरै, मूसा ज्यूं मुरदार ॥ ३१ ॥
क्यूं नहं लालच बस करो, बहु हाका विरदांह।
ह्वै नहं ऊँचो हत्थड़ो, मावड़ियां मुरदांह ॥ ३२ ॥
मावड़िया मुख ठंकियां, बैसे फाड़े बाक।
नयण सुणें नहं बीर रस, रबल घणां दिमाक ॥ ३३ ॥
आसव झड़ी न लागही, भड़ां छकावण भाळ।
कर नहं जाणै का पुरुष, मावड़ियां मतवाळ ॥ ३४ ॥
जाय नवोढा सासरे, आंसू नांख उसास।
मावड़िया जावे मुहम, इण विध हुवे उदास ॥ ३५ ॥

(३१) वन मांझली = वन में। डोळा = नेत्र। मिनखी = बिल्ली। (मिनखीसूं—पाठा० मिनकीरां)।

(३२) क्यूं नहं = कितना ही चाहे। बहु हाका = बहुत ज़ोर से बोलकर। बिरदांह = यश गान करो। ऊँचो हत्थड़ो = ऊँचा हाथ, दान देना। मुरदांह = मुर्दों का।

(३३) ठंकिया = छुपाना। बाक = मुँह। दिमाक = मस्तक।

(३४) आसव = शराब। झड़ी न लागही = भले प्रकार न पीवे (शराब)। भड़ां = भट, शूर वीर। छकावण = मस्त करने को। भाळ = देखो। कापुरुष = खोटे आदमी। मतवाळ = शराब का नशा।

(३५) नवोढ़ा = नव-विवाहिता। नांख = डाल। मुहम = लड़ाई। इण विध = इस तरह।

माथे टोप सनाह तन, कर दसता रिण काज।
मावड़िया सोभै नहीं, सूरा हंदा साज ॥ ३६ ॥
मावड़िया दीठां फुरै, मत हिय मांहि पयट्ठ।
पुरष तणां पोसाखकर, बाई आंण बयट्ठ ॥ ३७ ॥
सेखसल्ली सरखा हुवे, मावड़ियां रे मीत।
पोपां बाई प्रगट हुवै, नवी चलावे नीत ॥ ३८ ॥
मांवड़ियां मुसकल हुवै, सजियां कांप सरीर।
कर थापट कूटे कमल, नाखै नैणां नीर ॥ ३९ ॥

---

(३६) सनाह = कवच। दसता = हाथ का आवरण (लोहे का)। रिण = युद्ध।

(३७) दीठां = देखने से। फुरै = स्फुरण होती है। मत = विचार। पयट्ठ = प्रवेश कर। तणी = की। पोसाख कर = वस्त्र पहिन कर। बाई = स्त्री। आण बयट्ठ = आ बैठी है।

(३८) सेखसल्ली = शेखचिल्ली, मन मोदक खानेवाला। पोपां बाई = एक रानी हुई थी जिसके राज्य में पोल बहुत थी। (शेख चिल्ली—पंजाब में एक फकीर हुआ है जिसकी जाहिरा बातें अनघड़ और बेतुकी होती थीं जैसे उसके दर्वाजे की चौखट पर यह लिखा था कि "अरे बेवकूफ ऊपर क्या देखता है नीचे देख" और नीचे यह लिखा हुआ था "अरे बेवकूफ नीचे क्या देखता है ऊपर देख।" पोपां बाई—एक कुम्हारी मंडेले के राज्य इलाके जयपुर में हुई थी जिसका पोल का राज्य मशहूर है। अंत में वह अपनी ही मूर्खता से सूली पर टँगी थी। उसके राज्य में सब धान २२ पंसेरी बिकता था)।

(३९) साजियां = युद्ध के लिये तैयार होने से। थापट = दो हाथल, थप्पड़। कमल = मस्तक। नाखै = डाले।

विळखीजे तरुणी बदन, कंथ न आयो तीज ।
मावड़ियां आयां मुहम, वदन जाय विळखीज ॥ ४० ॥
लालचियां संतोष ज्यूं, मन हींजड़ा मनोज ।
ऊमर में नहं ऊपजै, इम मावड़ियां मोज ॥ ४१ ॥
हित सूं कमठाकृत हरी, संवै पुलक सरीर ।
बदन छिपावण देह विच, ते मांगे तदबीर ॥ ४२ ॥
मावड़ियां तन मैंणरा, मिटै कदे नहँ मांद ।
मावड़ियां ढूला मरद, चूला हंदा चांद ॥ ४३ ॥
मावड़ियां जुध मंडियां, विलखो करे विलाप ।
आड़ा म्हारे आवजो, जणणी रा व्रत जाप ॥ ४४ ॥

(४०) विळखीजे = उदास हो । कंथ = पति । तीज = श्रावण शुक्ला या भादों कृष्णा तृतीया ।

(४१) लालचियां = लालचियों को । मनोज = कामदेव । ऊपजै = उत्पन्न होवे । मोज = आनन्द । हींजड़ा = नपुंसक ।

(४२) कमठाकृत हरी = कच्छपावतार । पुलक = प्रसन्न । ते = वे मावड़िया । मांगे तदबीर = इस छुपाने का उपाय ।

(४३) मैंणरा = मोम के, नाजुक । कदे = कभी । मांद = बीमारी । ढूला = गुड्डा, कपड़े का पुतला । चूला हंदा चांद = घर में घुसा रहनेवाला (यह लोकोक्ति है—"हांडी के हमीर और चूल्हे के चांद") ।

(४४) जुध मंडियां = युद्ध जुड़े । विलखो = विलख करके । आड़ा = सहाय । आवजो = आवें । जणणी रा व्रत जाप = माता के व्रत और जप ।

तरुणी री पोसाक त्रण, जीवन मूली जांण ।
कलह सर्मै राखे कनै, मावड़ियां विण मांण ॥ ४५ ॥
आठां बाटां ऊपड़ै, मावड़िया रो माल ।
चाकर सीखे हरष चित, चोरां हंदी चाल ॥ ४६ ॥
रावळियां रामत समै, मावड़ियां लो माँग ।
तो रतना-पातर तणूं, सखरो लावे सांग ॥ ४७ ॥
मान कियोड़ी महल ज्यूं, बुगलां ज्यूं कम बोल ।
मावड़ियां घर मींडको, पुरुषपणारी पोल ॥ ४८ ॥
रिण नहं भीनी रुधर सूं, मद सूं गोंठ मझार ।
मूंछां मावड़िया मुहें, त्रथा कियो विसतार ॥ ४९ ॥

(४५) पोसाक त्रण = तीन पोशाक (साड़ी, लहँगा, कांचली) विण = विना । मांण = मान ।

(४६) आठां बाटां = आठों ही दिशा में । ऊपड़ै = उठता है; खर्च होता है । हरख = हर्ष ।

(४७) रावलिया = एक जाति जो केवल राजपुत्रों के सामने ही खेल तमाशे करती है । रामत = खेल । सखरो = अच्छा । सांग = भेष । तो रतना.....सांग = तो मावड़ियां रत्ना पातुरी का अच्छा स्वांग धरे ।

(४८) मान कियोड़ी = मानिनी । महल = स्त्री या नायका । मींडको = मेंडक । पुरुषपणा = पुरुषत्व । पोल = खाली, हीन ।

(४९) रिण = युद्ध । भीनी = भीगी । गोंठ = दावत । मझार = में । मुहें = मुँह पर । कियो विस्तार = बढ़ी ।

पसू पणों पंखी पणूं, सुतर मुरग रे संग ।
मरद पणों महिला पणों, मावड़िया रे अंग ॥ ५० ॥
रात दिवस भींची रहे, मूठी मावड़ियांह ।
ज्यांरे धन किण विध जुड़ै, कीरत कावड़ियांह ॥ ५१ ॥
कीरत माजीरी करै, चितकर मंगण चोज ।
इण उपावसूं ऊपजै, मावडियां मनमोज ॥ ५२ ॥
पार पखे राजी प्रजा, पाजी न करे पाप ।
साजी ताजी साहवी, माजीरे परताप ॥ ५३ ॥
मारग आंधी मालणों, जवहर लीधा जांह ।
माजीरो दूखो मती, माथो ऊमर मांह ॥ ५४ ॥

(५०) पसू पणों = पशूपन । पंखी पणूं = पक्षीपन । महिला पणों = स्त्रीपन । मरद पणों = मनुष्यपन । सुतर मुर्ग = यह एक पक्षी है जो अफ्रिका में होता है । इसकी गर्दन लंबी होती है और यह दूब और पत्थर खाता है ।

(५१) भींची रहे = बंद रहती है । मूठी = मुट्ठी । कीरत = कीर्त्ति । कावड़ियांह = कावड़ से बोझा ढोनेवाले ।

(५२) कीरत = कीर्ति । माजी = माता । चितकर मंगण चोज = मांगनेवाले चित्त में कपट (चतुराई) धरके । उपाव = उपाय । ऊपजे = होवे । मौज = दातव्यता ।

(५३) पार पखे = पराए पक्ष से । पाजी = दुष्ट । साजी ताजी स्वस्थ बनी हुई । साहवी = ठकुराई ।

(५४) मालणों = चलना । जवहर = जवाहिरात । जांह = जाय । दूखो मती = मत दुखो ।

आय खेलियो आंगणें, माजी जिण दिन मोड ।
हेक साथ नव निधि हुई, उण दिन सूं इण ठोड ॥ ५५ ॥
जाया माजी रात जस, पीहर हुओ प्रवीत ।
आयां सुसरा आंगणें, निरमल फैली नीत ॥ ५६ ॥
सासू दादी सासुआं, राजी सयल रहंत ।
माजीनूं मीरां कहे, मोटा संत महंत ॥ ५७ ॥
देव महोछव देहरां, परगह संपतपूर ।
आछा कामां ऊपरां, माजीरो मजकूर ॥ ५८ ॥
बटपाड़ा रां वंसनूं, माजी लीधो मार ।
मेलप राखै मान भय; मूंसा सूं मंजार ॥ ५९ ॥
न्याव किया नोसेरवां, सुविहांना सिरदार ।
आज करै माजी इसा, न्याव संदेह निवार ॥ ६० ॥

(५५) आंगणें = आंगन में । मोड़ = सेहरा । हेक साथ = एक साथ । इण ठोड़ = इस स्थान पर ।

(५६) जाया = जन्मे । जस = जिव । प्रवीत = पवित्र । नीत = नीति । सुसरा आंगणें = सुसराल ।

(५७) सयल = सब । मीरां = प्रसिद्ध भक्त मीरा बाई ।

(५८) महोछव = महोत्सव । देहरां = मंदिर । परगह = परिग्रह, सांसारिक उपाधि । संपत = संपत्ति । पूर = भरपूर । ऊपरो = पर । मजकूर = जिकर (कीर्ति) ।

(५९) बटपाड़ां = लुटेरे या डाकू । मेलप = मित्रता । मूंसा = चूहा ।

(६०) नोसेरवां = फारिस का न्यायी बादशाह जो नौशेरवां आदिल नाम से प्रसिद्ध था । सुविहांना = सुघड़, न्यायी, ईश्वरीय न्याय

कीधा माजी न्याव किल, जग मांझल जेताह ।
काजी सुण धिन धिन कहै, विप्र समृतवेताह ॥ ६१ ॥
वारा हरचंद रा वहै, रामराज री रीत ।
कुसमां छाई कनकरां, पुहमी बटे प्रवीत ॥ ६२ ॥
माजी रच राखे मतो, सौ गणलां छाणंत ।
असळ आगराई अमळ, जमियां जग जाणंत ॥ ६३ ॥
कोप करण नूं काळका, सरसत करण सलाह ।
पूरण अन अंनपूरणा, भाखे लोक भलाह ॥ ६४ ॥
माजी मांने वेदमत, सुणी सदा सुरगाह ।
सती आठमी सांपरत, दसमी श्री दुरगाह ॥ ६५ ॥

अथवा सोहवां महापंडित की तरह । निवार = दूर करके । न्याव = न्याय ।

(६१) किल = निश्चय । जेताह = जितने । धिन धिन = धन्य धन्य । समृतवेताह = स्मृतिज्ञाता, धर्मशास्त्र के जाननेवाले ।

(६२) वारा = समय । हरचंद रा = हरिश्चंद्र के । वहै = चलते हैं । कुसमां = फूल । कनक रा = सोने के, सुवर्ण के । पुहमी = पृथ्वी ।

(६३) मतो = राय । सौ गणलां छाणंत = सौ गरणों से छानकर, बहुत छान बीन कर । आगराई = आगरे की बादशाही । अमल = हुकूमत ।

(६४) सरसत = सरस्वती । भाखे = कहते हैं । भलाह = भले ।

(६५) सुरगाह = सुगाथा, कथा । सांपरत = सांप्रत, साक्षात् (माजी को सती और दुर्गा के समान बताया है) ।

सोनारी ईढोणियां, आंणे जळ अबळांह ।
गांजण निबळा गामड़ां, सगत नहीं सबळांह ॥ ६६ ॥
सहू दईरा दीकरा, लीला लाड़े लोक ।
दई हूँत छाना दिवस, सै काटै विण सोक ॥ ६७ ॥
खानाजादां खबर ले, प्रज दुज गो प्रतिपाल ।
कर व्रत नित सुकृत करं, माजो केरे माल ॥ ६८ ॥
बैरांगर हीरा हुए, कुलवंतिया सपूत ।
सीपै मोती नीपजै, सब ब्रम्मारा सूत ॥ ६९ ॥
आब अमोलक ऊजळां, सभर गुणां तत सार ।
न्याय इसा नग नीपजै, माजी कूख मझार ॥ ७० ॥

(६६) अबलांह = स्त्रियां । ईढोणिया = इंदुई । गांजण = गर्जना । गामड़ां = गांव । सगत = शक्ति । सबलाह = बलवान् ।

(६७) दई = परमेश्वर, दैव । दीकरा = संतान, लड़के । लाड़े = प्यार करती है, लड़ाती है । लोक = संसार । हूत = से । छाना गुप्त । बिण सोक = बिना शोक के ।

(६८) खाना जादां सेवकों की । खबर ले = सहायता करना, पूछताछ करना । दुज = द्विज, ब्राह्मण । केरे = का ।

(६९) बैरागर हीरे की खान । हीरा = भली, अच्छी हीरा । सूत = नियम ।

(७०) आब = पानीवाले, आबदार । अमोलक = अमूल्य । ऊजला = श्वेत, शुद्ध । सभर = भारी । ततसार = तत्वसार । न्याय = निश्चय । नग = सन्तान । कूख = कुक्षि, पेट ।

पय श्रीमाजीरो पिए, उच्छरियो तू एम ।
पय श्रीगंगारो पिए हंस उच्छरे जेम ॥ ७१ ॥
माजीरा दरसण करै, नित दिन ऊगे नेम ।
थूंन उळंघे थूकियो, कह्यो उळांघे केम ॥ ७२ ॥
रेसम हंदा पातड़ां, पालणिये पोढाय ।
तो जेहा बेटा तिके, भळे झुळाया माय ॥ ७३ ॥
जगत दिखायो जनम दे, पोष करी प्रतिपाल ।
ईश्वर नूं उपमा दिए, मात तणी मुनमाल ॥ ७४ ॥
जनमे बीजू जगत में, जणणीरो ले जीव ।
तिण गुनाह पनही तलै, सहको हुण सदीव ॥ ७५ ॥
नहं तीरथ जणणी समो, जणणी समो न देव ।
इण कारण कीजे अवस, सुभजणणीरी सेव ॥ ७६ ॥

(७१) उच्छरियो = बड़ा हुआ, पोषण पाया । एम = ऐसे । जेम = जैसे ।

(७२) दरसण = दर्शन । दिन ऊगे = प्रातःकाल को । थू = तू । केम = कैसे ।

(७३) रेसम हंदा = रेशम के । पालणिये = पलने में । पोढाय = सुलाकर । तो = तेरे । जेहा = जैसे । तिके = जो ।

(७४) नूं = को । तणी = की । मुनमाल मुनियों का समाज ।

(७५) तिण = उस । गुनाह = पाप । पनही = जूता । तलै = नीचे । सहको = सब कोई । सदीव = सदैव ।

(७६) नह = नहीं । समो = समान । अवस = अवश्य । सुभ = शुभ । सेव = सेवा ।

त्रियां रही दस मांस लग, उदरदुखां उतरीह ।
दुख जिण जणणी ने दिवे, कालो मुंह कुतरांह ॥ ७७ ॥
कासीदे कानां करग, बदो तणां सुण बात ।
ज्यां जीवानूं जगत में, मुगत समापे मात ॥ ७८ ॥
जितरे जणणी जीवही, वेद प्रकासे बात ।
जितरे गंगादिक तणी, अन उपजे नह जात ॥ ७९ ॥
मात तणी आग्या महीं, सोइज पूत सपूत ।
मात बचन माने नहीं, कहिए जको कपूत ॥ ८० ॥
मित्र मित्र हितरी कहै, गुर सिस हितरी बात ।
धणी दास हितरी कहै, ज्यूं अतहितरी मात ॥ ८१ ॥
सिद्ध कपिल मुन सारखां, महिमा जाहर कीध ।
जननी हंदो चरण जल, पावन सिर धर पीध ॥ ८२ ॥

(७७) लग = तक । दुखां = दुख । उतरांह = उतने । दिवे = देवै । कुतरांह = कुत्तों का ।

(७८) कासीदे = खेंच या देवे । करग = हाथ । बदी = बुराई । तणी = की । समापे = समर्पित करती है । मुगत = मुक्ति ।

(७९) जितरे = जब तक । गंगादिक = गंगा आदि । जात = यात्रा । उपजे = इच्छा होवै ।

(८०) आग्या महीं = आज्ञा में । जको = उसको । सोइज = वही ।

(८१) गुरसिस = गुरु शिष्य की । धणी = स्वामी । अत = अति, अत्यंत ।

(८२) सारखां = समान । कीध = की । हंदो = का । पीध = पिया ।

आप आपरी उगतसूं, तीख रचे तवनांह ।
माततणी महिमा कही, जैन वेद जवनांह ॥ ८३ ॥
माततणों धुर देख मुख, पाछे हरि पूजंत ।
जगत महों जीवे जकों, दूजा विच जमदंत ॥ ८४ ॥
समृत पुराणां कहत श्रुत, न्यायादिक मतनेक ।
जणणीरा रिण हूँत जण, ऊरण हुए न एक ॥ ८५ ॥
मात वचन ध्रू मानिया, सारा मिटिया सोक ।
सारा लोकां सूं सिरे, लाभो अवचल लोक ॥ ८६ ॥
मानें तीरथ मातनूं, विमल भाव वणियांह ।
मात भलां सुख मानियो ज्यां पूतां जणियांह ॥ ८७ ॥

(८३) आप आपरी = अपनी अपनी । उगतसूं = युक्ति से । तीख = अच्छी । तवनांह = स्तवन या स्तुति में । जैन = जैनी । जवनांह = यवनों में ।

(८४) धुर = पहिले । जमदंत = यम की दाढ़ में या मुलक ।

(८५) समृत = स्मृति । पुराणां = पुराण । श्रुत = वेद । न्यायादिक-षट्शास्त्र । मतनेक = अनेक मत (वाले) । ऋण = कर्ज । जण = जन । ऊरण = उऋण ।

(८६) ध्रू = ध्रुव (भक्त) । मिटिया = मिट गए । सिरे = अच्छा । लाभो = पाया । अवचल = अविचल, अविनाशी, अचल ।

(८७) वणियांह = बने हुए । ज्यां = उन । जणियांह = जन्म दे कर ।

पेट धरे जायो पछै, धवरायो मल धोय।
जिण कारण जगदीस सूं, जाणीं गरवी जोय ॥ ८८ ॥

---

(८८) पेट धरे = पेट में धारण किया। जायो = जन्म दिया। धवराया = स्तन पान कराया। मल = विष्टा। गरवी = भारी, ऊँची। जोय = देखो, जानो

(३) अथ कृपण दर्पण लिख्यते

दोहा

कृपण कहै ब्रहमा किया, मांगण बड़ी बलाय।
विसव वसावण वासतै, फाटक दिया बणाय ॥ १ ॥
फाटक रखवाली करै, फाटक हरै फसाद।
सूंम कहै सुख सूं सुवां, फाटक तणै प्रसाद ॥ २ ॥
कृपण संतोष करै नहीं, लालच आड़े अंक।
सुपण बभीषण सूं मिलै, लिए अजारे लंक ॥ ३ ॥
कृपण संतोष करै नहीं, सौ मण जाणै सेर।
कर टांकी ले काटहीं, सुपना मांहि सुमेर ॥ ४ ॥
मुनि घालै तप जोग बल, सरग कपाटा हत्थ।
वेही कृपण कपाट नूं, ऊघाडण असमत्थ ॥ ५ ॥

(१) ब्रहमा = ब्रह्मा। बड़ी बलाय = बहुत दुखदायी। मांगण = मांगनेवाला। विसव वसावण = संसार बसाने को।

(२) फसाद = झगड़ा। सुवां = सोते हैं। तणै = के।

(३) आड़े अंक = अपार। सुपन = स्वप्न में। बभीषण = रावण का भाई विभीषण। अजारे = मुकाने, ठेके। लंक = लंका। (क्योंकि लंका सुवर्ण की मानी जाती है इसलिए कृपण उसे ठेके पर लेने का स्वप्न देखता है।)

(४) टांकी = छेनी। काटहीं = काटते हैं। सुमेर = सुमेरु, पर्वत। (सुमेरु भी सुवर्ण का माना जाता है।)

(५) घालै = डालते हैं। सरग = स्वर्ग। हत्थ = हाथ। उघाड़न = खोलने को। असमत्थ = असमर्थ।

भ्रात मित्र जुग जुग भला, नीत प्रसिद्ध निराट ।
जुगल भुजा कर जांणिया, कृपणां जुगल कपाट ॥ ६ ॥
कठण घोर जिण सूं कटी, पंक पहाड़ां गात ।
कृपण कपाटां ऊपरै, होज्यो जाय निपात ॥ ७ ॥
उभै एक कर राखणां, कृपण कहै सिर कूट ।
जाचक जन भीतर धसै, फाटक पड़िया फूट ॥ ८ ॥
डोढ़ो पड़दो देखिये, सूमां घरै सिवाय ।
भीतर जम किंकर बिना, जीव मात्र नहँ जाय ॥ ९ ॥
कृपण बराटक पावियां, नाटक करै निलज्ज ।
सुण जाचक खाटक करै, सब दिन फाटक सज्ज ॥ १० ॥
दरवाजा सूंमा तणां, मूढां तणां हियाह ।
खुलिया माथा पच कियां, सो नंह सांभलियाह ॥ ११ ॥

---

(६) निराट = अत्यन्त ।

(७) कठण = कठिन । जिण सूं = जिससे । कपाटां ऊपरे = किवाड़ों पर । होज्यो जाय निपात = जाकर गिरे । (कवि कहता है कि वह बिजली कृपण के घर पर गिरे ।)

(८) उभै = दोनों (कपाट) । एक कर = इकट्ठे कर । सिर कूट = सिर पीट कर । पड़िया फूट = टूट पड़ने से ।

(९) घरै = घर में । जम किंकर = यम के दूत ।

(१०) बराटक = कौड़ी । खाटक = जबरदस्त । सज्ज = बंद करके ।

(११) मूढ़ा = मूर्खों के । हियाह = हृदय । माथा पच = माथा कूट, अति परिश्रम । सांभलियाह = सुने ।

कृपण हुवै मर कुंडली, संपत बांटे नांहि।
कहियां चोड़ै कुंडली, मरता भारथ मांहि ॥ १२ ॥

देखीजे सूमां तणां, एकी प्रकृत अभंग।
जड़ माया धर में जितै, जठे प्रफुल्लत अंग ॥ १३ ॥

जिका न दीधो जनम भर, ऐको कण दुज हत्थ।
नहिं बैसीजै नाव में, सायर सूमां सत्थ ॥ १४ ॥

रयणायर पुगो अथा, डाटी कर दुरभाव।
रयणायर में डूबवै, सूमां केरी नाव ॥ १५ ॥

कामी अवर वामी कृपण, जादूगर नर चार।
रात दिवस पड़दै रहै, पड़दा सूं हिज प्यार ॥ १६ ॥

(१२) कुंडली = नागी। चोड़ै = साफ साफ। कुंडली = नाम विशेष, जन्मग्रह, जन्मपत्री। भारथ = लड़ाई।

(१३) अभंग = निश्चय (यथा वृक्ष के संबंध में उसकी जड़ का पृथ्वी में रहने से और सूम के संबंध में उसके द्रव्य का पृथ्वी में रहने से है)। जितै = जहां तक।

(१४) जिकां = जिनने। ऐको = एक भी। कण = दाना। दुज = द्विज। बैसीजै = बैठना चाहिए। सायर = समुद्र। सत्थ = साथ (क्योंकि सूम के पाप से नाव डूब जाती है)।

(१५) रयणायर = समुद्र, रत्नाकर। डाटी = गाड़ी। डूबवै = डूबती है।

(१६ वामी = वाममार्गी। पड़दा सूं हिज = परदे से ही।

सूंमपणा पातक छटा, अपजस तर आंकूर।
कारण इण बीकम करण, इण सूं रहिया दूर ॥ १७ ॥
नीत रीत सूझै नहीं, सूझै नहीं सवाब।
सूमां घर सुगाल में, रंधै रमाडै राब ॥ १८ ॥
कीड़ो कण पावे नहीं, अदतारां घर आय।
ओर घरांसूं आणियां, जिको गमाड़ै जाय ॥ १९ ॥
सूंम नाम लेणा सुतो, मूंग पकावण बेर।
अन दिन उणरी आथ ज्यूं, डाटो भाटो देर ॥ २० ॥
एक बरग में ऊपना, सूंम कहै इकसार।
दौलत हरै दकारियां, दौलत थंभ नकार ॥ २१ ॥

(१७) तर = वृक्ष। आंकूर = अंकुर। इण = इस। बीकम = विक्रमादित्य राजा। करण = कर्ण राजा (विक्रमादित्य और कर्ण ये दोनों बड़े दानी हुए हैं)।

(१८) सवाब = पुण्य। सुगाल = सुकाल। रंधै = पकता है। राब = राबड़ी।

(१९) कण = दाना। अदतारां = कंजूस। ओर = दूसरे। आणियो = लाया हुआ। जिको = वह भी। गमाड़ै = खो देना है।

(२०) सुतो = यह तो। बेर = वक्त। पकावण = पकाने (उबालने) के वक्त। अन = अन्य। उणरी = उसकी। आथ ज्यूं = धन जैसे। डाटो = गाड़ना। भाटो देर = पत्थर देकर।

(२१) ऊपना = उत्पन्न हुए। इकसार = एकसा। दकारियां = 'द' अक्षर (देना)। थंभ = थँभानेवाला। नकार = इंकार ('द' और 'न' एक ही वर्ग के अक्षर हैं)।

सूंब सूंब कहै मरब दिन, जाचक पाड़ै बूंब।
सिद्ध दिगंबर बाजहीं, ज्यूं धनवंता सूंब ॥ २२ ॥

आदर चाहै सूढ़ वे सेवा र घर जाय।
सिर लिखमी रे द्यो सिला, घर आया दफणाय । २३ ।

ऊबां जल थल कर यगां, बिदरां कुल बिवहार।
नहीं दबां निरधूमतां, ज्यूं अदवां उपगार ॥ २४ ॥

दियो सबद सुणियां दुसह, लागे तन मन लाय।
सूंब दियो न करे सदन, परब दियाली पाय ॥ २५ ॥

करतब नह राजी करण, राजी रूपियांह।
कडवो दास कुटंबियाँ, प्रामणड़ां पइयाँह ॥ २६ ॥

(२२) सूंब = सूम। बूंब = पुकार, चिल्लाना। बाजहीं = कहलाते हैं।

(२३) लिखमी = लक्ष्मी। दफणाय = गाड़ते हैं। कंजूस लोग प्रायः अपने धन को पृथ्वी में गाड़कर ऊपर पत्थर धर देते हैं।

(२४) ऊबां = ऊपर। बिदरां कुल बिवहार = विदुर के कुल में व्यवहार। दबां = अग्नि। निरधूमता = बिना धुएँ के। अदवां = कंजूस। उपगार = उपकार।

(२५) दियो = देने का। सबद = शब्द। सुणियां = सुनने से। दुसह = दुःखी, असह्य। दियो = दीपक। दियाली = दीपमालिका।

(२६) करतब = कर्तव्य। राजी = प्रसन्न। रूपियांह = रुपयों से। प्रामणड़ां पइयांह = पाहुने, अतिथि।

मंगण लारे मंडिया, आगै भागो जाय।
सुजस कुजस नंह संभलें, जंबुक सूंब कहाय ॥ ३७ ॥
जस अपजस जाचक पढ़ै, मांगे चाल विलूंब।
नहीं चिढ़ै उत्तर न दे, धाम धूंम वो सूंब ॥ ३८ ॥
नदे दिखाई मंगणा, नेड़ो ही सो कोस।
रात दिवस पड़दे रहै, अदता पड़दा पोस ॥ ३९ ॥
म्हैलां बस बस मातरै, मंत्री बस मुरझाय।
मंगण मिलियां रोयदे, लोदू सूंब कहाय ॥ ४० ॥
ऊंमर लग ऊधार री, बाण न छोड़ै बत्त।
जोर फिरावै जाचकां ऊधारियां अदत्त ॥ ४१ ॥
काढ़ै दोसण कायबां, बातां दिए बिगोय।
पूछै अरथक पहलियां, सूंब मजाकी सोय ॥ ४२ ॥

(३७) मंगण = मांगनेवाले। लारे = पीछे। मंडिया = लगे। संभलें = सुनता है। जंबुक = गीदड़।

(३८) चाल विलूंब = अंगरखी का पल्ला पकड़कर। चिढ़ै = चिढ़ता है। धांम धूम = पूर्ण।

(३९) मंगणा = मांगनेवालों को। नेड़ो = निकट। पड़दा पोस = छिपकर बैठनेवाले।

(४०) म्हैलां बस = महलों के वशीभूत। बस मातरै = माता के पास रहै। रोयदे = रो देता है। लोदू = कायर।

(४१) ऊमर लग = उमर भर। ऊधारगी = फिर देने की, बाकी रखने की। बाण = आदत। बत्त = बात। जोर = बहुत। जाचकां = याचकों को। अदत्त = सूम (इसको उधारिया सूम कहते हैं)।

(४२) काढ़ै = निकालें। दोसण = दूषण। कायबां = कविता में।

अरध चंद हेकां दिए, हेकां गाल हजार।
हेकां कुतकी दे दुवै, एह दुष्ट अदतार ॥ ४३ ॥
कपणां नूं कपणां तणां, रूप दिखावण काज।
ग्रंथ कृपण दर्पण कियो, रीझावण कविराज ॥ ४४ ॥
कृपण कृपण दर्पण निरख, प्रकृति न तजै प्रबंध।
भालो नवमां भेद में, जिको कहावै अंध ॥ ४५ ॥

दिए विगोय = निंदा करते हैं। पहेलियां = पहेलियां। मजाकी = ठट्ठे बाज।

(४३) अरधचंद = गर्दनी। हेकां = एक को। गाल = गाली। कुतकी = छोटी लड़ाई। दे दुवै = देता है। एह = यह। अदतार = कंजूस।

(४४) नूं = को। तणां = का। दिखावण काज = दिखाने के लिये। रीझावण = रिझाने को। कविराज (बांकीदास)।

(४५) निरख = देखकर। प्रकृति न तजै प्रबंध = अपने स्वभाव को न छोड़े। भालो = देखो। (यह अंधकृपण है)।

(४) अथ मोह मर्दन लिख्यते

दोहा

नारायण देवां मंही, ज्यूं तारायण चंद ।
कमला पगचंपी करै, बंक संक तज बंद ॥ १ ॥
खग इण साकरखोररे, संगन साकर गूंण ।
सब दिन पूरे सांइयां, चांच दई सो चूंण ॥ २ ॥
आलस तज निज गरज अब, भज त्रभुयण भूपाल ।
पिए निरंतर आय पय, बांका काल बिडाल ॥ ३ ॥
तट गंगा तपियो नहीं, नह जपियो नरसीह ।
जड ते आरण धमण जिम, दम गमिया बहु दीह ॥ ४ ॥

(१) तारायण = तारागण । कमला = लक्ष्मी । बंक = बाँकीदास। संक तज = शंका दूर करके या निश्चय के साथ । बंद = नमस्कार कर ।

(२) खग = पक्षी । साकरखोर = शक्कर खानेवाला, मधुर फल-भक्षी । गूंण = बोरी । सांइयां = स्वामी, परमेश्वर । चूंण = आटा, अन्न या चुग्गा ।

(३) त्रभुयण = त्रिभुवन । आय = आयुष्य । पय = दूध । बिडाल = बिलाव ।

(४) जड = जड़, मूर्ख । आरण = लुहार की भट्टी । धमण = धौंकनी । दम = श्वास । गमिया = खोए । दीह = दिवस ।

बीता उमर बरसड़ा, बातां करता बंक।
क्यूंही नह साधन कियो, उर जमरो आतंक ॥ ५ ॥
पग पग जम डाका पड़े, बांका धार विवेक।
हुतभुक विच जल खाख ह्वै, उडणो हे दिन एक ॥ ६ ॥
रोम रोम आमय रहे, पग पग संकट पूर।
दुनियां सूं नजदीक दुख, दुनियां सूं सुख दूर ॥ ७ ॥
नीचो जावै नीर ज्यूं, जग नव नहचे जांण।
सकल पदारथ सारखी, हे खिण खिण में हांण ॥ ८ ॥

सोरठा

तन दुख नीर तड़ाग, रोज विहंगम रूखड़ो।
विसन सलीमुख बाग, जरा बरक ऊतर जबल ॥ ९ ॥

(५) बरसड़ा = वर्ष। उर = हृदय में। जम = यमराज के। आतंक = भय (का)।

(६) डाका = डकैती। धार = धारण कर। हुतभुक = हुताशन, अग्नि। खाख = भस्म।

(७) आमय = रोग। पूर = पूर्ण।

(८) नव = नीचा। सारखी = [illegible] की, शक्ति की। खिण खिण = क्षण क्षण। हांण = हानि।

(९) तड़ाग = तालाब। रोज = शोक। विहंगम = पक्षी। रूखड़ो = वृक्ष। विसन = व्यसन, भोग विलास। सलीमुख = शिलीमुख, बाण। जरा = बुढ़ापा। बरक = बिजली। जबल = पहाड़।

भावार्थ—दुःख रूपी जल से भरा हुआ यह शरीर रूपी तालाब है; अथवा शोकरूपी पक्षी के लिये यह वृक्ष है। संसार के झगड़े और दुःखों का यह बाग है, इस आयु का बुढ़ापा बिजली की चमक है अथवा पहाड़ी का उतार है।

दोहा

केस जरा धोबण करे, धोला अतही धोय ।
अंतक राऐ ऐंचतां, हात न मैला होय ॥ १० ॥
रूडे तीरथराजरे, नित जल कीजे न्हान ।
तोपिण न हुए पाकतन, मूल पुरीष मकान ॥ ११ ॥
अटकाई नह आयबल, आई जरा अगूढ़ ।
आसी जदतू अटकसी, मान किसी विध मूढ़ ॥ १२ ॥
जग में बांछे जीवणो, सब प्राणी समुदाय ।
हटकर नर उणंनू हरे, जुलम कहयो नहि जाय ॥ १३ ॥
हणें पसू तिण खिण हुए (चे), हिए दयारी हांण ।
थाली मांह मसांण घट, गिलहो छोड़ गिलान ॥ १४ ॥
उदर भरण घर घर अटे रटे नहीं श्रीराम ।
सूंस करे कवड़ी सटे, ते गुण घटे तमाम ॥ १५ ॥

(१०) धोला = श्वेत । अंतक = काल । राऐ = राजा । ऐंचतां = खींचते । हाथ न मैला होय = हाथों में श्यामता नहीं लगती है ।

(११) रूडे = अच्छा । तीरथराज = प्रयाग । मूल = असल में । पुरीख = पुरीष, मैला ।

(१२) अटकाई = रोकी । आयबल = आयुष्य के बल । अगूढ़ = प्रकट । आसी आवेगी । अटकसी = अटक जावेगा ।

(१३) बांछे = चाहना है । जीवणो = जीना । हरे = हरण करना ।

(१४) हणे = मारे । तिण खिण = उस वक्त । हाण = हानि, नाश । मसाण = श्मशान, मुर्दा । गिलही = खाता है । गिलांन = ग्लानि ।

(१५) अटे = भटकता । सूंस = सौगंध । कवड़ी = कौड़ी । सटे = वास्ते, बदले में । ते = तिससे ।

अंध कूप संसार ओ, भीतर काल भुजंग ।
बांछे सुख नर ऐश बस, सबल अविद्या संग ॥ १६ ॥
गात संवारण में गमे, ऊमर काय अजाण ।
आखर प्राण प्रमूक ओ, खाख हुसी मल खांण ॥ १७ ॥
हाथां ठाली हालणों, जांझी संपत जोड़ ।
मोत सरीखो मनखरे, खलक महीं नहं खोड़ ॥ १८ ॥
चरणां आठां चालियो, जंगलरी रुख जाय ।
पुरष हूत दूंणूं पसू, अंतक कीधो आय ॥ १९ ॥
नह बहमन नोसेरवां, अफरास्याव न ऐथ ।
फरेदून नमरूद फिर, कयूमर्स गो कैथ ॥ २० ॥

---

(१६) ओ = यह । ऐथ = यहाँ पर । सबल अविद्या संग = सबल अविद्या के साथ ।

(१७) गात = शरीर । गमे = खोए । अजाण = अज्ञानी । आखर = अंत में । प्रमूक = निकलकर । मल खांण = मल की खान ।

(१८) ठाली = खाली । हालणों = चलना । जांझी = बहुत सी । सरीखो = जैसा । मनखरे = मनुष्य के । खलक = दुनिया । खोड़ = ऐब ।

(१९) आठां = आठ । हूत = से । दूंणूं = दुगुना । अंतक = काल । जब मनुष्य मरता है तो ४ आदमी उठाकर श्मशान में ले जाते हैं, उनके ८ पांव होते हैं और चौपाए या पशु के ४ ही पग होने से उस वक्त मनुष्य दुगुना पशु हो जाता है ।

(२०–२१) बहमन, नौशेरवां, अफर्सयाव, फरीदूं, नमरूद, कयूमर्स, शहरयार, मनोचेहर, कैकाऊस, जुहाक, सुलेमान और जमशेद

सहरयार मीनोचहर, कैकाऊस जुहाक।
सुलेमान जमसेदनूं, फेस गया जम फाक ॥ २१ ॥

जहां पहलवां जीभ सूं, केकाउस कहियोह।
अंतक केहर अगर ओ, रुस्तम नंहं रहियोह ॥ २२ ॥

ताजदार बैठो तखत, रज में लोटे रंक।
गिणे दुनांनूं हेकगत, निरदय काल निसंक ॥ २३ ॥

जम हथ्था फुरती जिका, बरणो कवण बणाय।
पोंहचे मारण प्राणिया, जल थल अंबर जाय ॥ २४ ॥

फारस देश के बादशाहों के नाम हैं। ये सब कहां हैं, उनको जम (काल) खा गया। नमरूद बड़ा घमंडी था, अंत में पिस्सू उसके मस्तक को खा गए जिससे वह मरा। ऐसे ही जुहाक बड़ा ज़ालिम था तो उसके दोनों कंधों में से सर्प निकले जिनके डसने से वह मर गया। फेस = पीसकर। ऐथ = यहां। गो = गए। कैथ = कहां।

(२२) जहां पहलवां = दुनिया में पहलवान। अंतक केहर = कालरूपी सिंह। अगर = आगे। रुस्तम = पहलवान का नाम प्रसिद्ध है। केकाऊस = बादशाह का नाम।

(२३) ताजदार = बादशाह। रज = धूल। रंक = दरिद्री। दुनांनूं = दोनों को। हेकगत = एक गति से, एक सा।

(२४) जमहथ्था = यमदूतों के हाथ। बणाय = बनाकर। अंबर = आकाश। अर्थात् जलचर, थलचर और नभचर, काल किसी को भी नहीं छोड़ता है या जल थल आकाश सब जगह उसकी पहुँच है।

पंथ असैंदे पूगणो, अलगो घणों अकथ्थ।
व्हे विण जाण्यों हालणों, संबल (जा) विण सथ्थ ॥ २५ ॥

वसता हरिया बाग बिच, होती रेास हजार।
वसिया उहीज बांकला, माढू ग्राम मझार ॥ २६ ॥

नित मंगल होता नवा, बहु दल दूर बलाय।
वसिया उहीज बांकला, जंगल माझल जाय ॥ २७ ॥

काचो जल भरियो कलस, माझल माले मीन।
जाणे निज चिरजीवणां, लोकां आमत लीन ॥ २८ ॥

है झूटो साचो हिए, अखलेश्वर री आंण।
मत अपणाओ माढुआं, जगनू साचो जाण ॥ २९ ॥

---

(२५) असैंदे = अज्ञात । पूगणो = पहुँचना । अलगो = दूर । घणों = बहुत । अकथ्य = कहने में नहीं आवे । हालणों = चलना । संबल जा = सँभल जा । विण सथ्थ = बिना साथ के ।

(२६) रेास = रोश, आराम । उहीज = वही । बांकला = बांकी-दास । माढू = मनुष्य । मझार = बीच ।

(२७) बहु दल = बहुत सेना । दूर बलाय = आफत से दूर । मांझल = बीच में ।

(२८) माले = खेलती है । लोकां = दुनिया । आमतलीन = यह समझ रखा है ।

(२९) अखलेश्वर = परमात्मा । आंण = दुहाई, शपथ । अप-णाओ = प्रीति करो । माढुआं = मनुष्यो ।

हिल मिल सब सूं हालणों, ग्रहणों आतम ग्यान।
दुनियां में दस दोहड़ा, माहू तू मिझमान ॥ ३० ॥
र थोड़ी ऊमर रही, काय न छांड़े कूड़।
हिय अंधा तूं नांख हब, धंधा ऊपर धूड़ ॥ ३१ ॥
आगल सुरग कपाट अघ, दोजग अगुओ देख।
संपत लता कुठार सम, विपत लता घण वेघ ॥ ३२ ॥
वीरत कीरत वंस वित, मत मेजां गुण मांन।
संप सुलच्छण धरम सुष, व्हेयां अव सूं हाण ॥ ३३ ॥
भर सूझ नह संचरं आंका पही विहंग।
किणरे चाले संग कुण, सब स्वारथ रे संग ॥ ३४ ॥
जंतु भष अथवा जलै कै पड़ियो रह जाय।
किल भिसटा भसमी क्रमी, इण नर तन सूं थाय ॥ ३५ ॥

(३०) हिलमिल = प्रीतिपूर्वक। हालणों = चलना या रहना। ग्रहणो = ग्रहण करना। दीहड़ा = दिन। मिझमान = मिहमान।

(३१) कूड़ = झूँठ। हब = अब। धूड़ = धूल।

(३२) आगल = रोक। सुरग कपाट = स्वर्ग के किवाड़। दोजग = दोज़ख, नरक। घणवेघ = मेघ समान।

(३३) वीरता, कीर्ति, कुल और धन के अभिमान के पाप से संपत्ति, सुख, सदाचार और धर्म की हानि होती है।

(३४) संचरे = आता है। पही = पथिक। विहंग = पक्षी। किणरे = किसके। कुण = कौन।

(३५) कै = या। पड़ियो = पड़ा। किल = निश्चय। भिसटा = मैला। क्रिमी = कीड़ा।

कारण बिण जगसूं कर, आठ पोहर उपगार ।
जाणीजे सुरतर जिके, मानव लोक मझार ॥ ३६ ॥
प्राण छते जीवे पुरष, कासूं ज्यांरी कांण ।
प्रांण गयां जीवे पुरष, ज्यां जीवणों प्रमाण ॥ ३७ ॥
आप नांम इल ऊपरां, रसना राघव नाम ।
रूड़ो विधसूं राषियो, पुरषां जकां प्रणाम ॥ ३८ ॥
जीव दया पाली जकां, उजवाली निज आव ।
बनमालो कीधो बलू, पड़ी सुरालो पाव ॥ ३९ ॥

---

(३६) बिण = बिना । सुरतर = कल्पवृक्ष ।

(३७) छतां = मौजूद रहते । कासूं = क्या । कांण = बड़ाई ।

(३८) आपनांम = अपना नाम । इल = पृथ्वी । रूड़ो = अच्छी । जिकां = वेही ।

(३९) पाली = पालन की । उजवाली = पवित्र बनाई । आव = आयुष्य । बनमाली = श्रीकृष्ण । बलू = साथी या सहायक । सुराली = देवताओं की पंक्ति ।

(५) अथ चुगलमुखचपेटिका लिख्यते

दोहा

सगत सुखोकर सेवगां, अखिल जगत ओछाड़ ।
महिषासुर ज्यूं मारजे, चुगल त्रसूलां चाड़ ॥ १ ॥
ठग कामेती ठेाठ गुर, चुगल न कीजे सेण ।
चोर न कीजे पाहरू, ब्रहसपती रा वेण ॥ २ ॥
डूंम न जांणे देवजस, सूंम न जांणे मोज ।
मुगल न जांणे गोदया, चुगल न जाणे चोज ॥ ३ ॥
चुगलां जीभ न चालही, पर उपगार प्रसंग ।
नह नीपजही नीवसूं, राज रंग ॥ ४ ॥

चपेटिका = चपत, थप्पड़ ।

(१) सगत = शक्ति, देवी । सेवगां = सेवक । ओछाड़ = रक्षा, रक्षक । ज्यूं = जैसे । त्रसूलां = त्रिसूल की । चाड़ = चढ़ाकर या चोट ।

(२) कामेती = कामदार । ठेाठ = मूर्ख । सेण = मित्र । पाहरू = पहरा देनेवाला, जासूस । ब्रहस्पति = नीति शास्त्र का आदिकर्त्ता । वेण = वचन ।

(३) डूंम = ढोली, डोम । देवजस = ईश्वर की स्तुति । मौज = आनंद, दातव्यता । मुगल = मुसलमान । गोदया = गोरक्षा । चोज = रहस्य ।

(४) चुगलां = चुगलखोरों की । पर उपगार = परोपकार । नीपजही = पैदा होता है ।

चरचा करतां चुगलसूं, प्रकृत हुवे परतंत ।
चुगली कानां सुणणसूं, मैलो व्हे गुर मंत ॥ ५ ॥
श्रोदसरथ दसरथ सुतन, पीथल मूंज पंवार ।
कुंण कुंण डहकाणां नहीं, बस चुगलां वापार ॥ ६ ॥
चुगल बधक गुरु-सेजगत, चोर कृपण गुण चोर ।
कुंण घटतो बधतो कवण, एकण गिररा मोर ॥ ७ ॥
रोल बिगाड़े राजनूं, मोल बिगाड़े माल ।
सनं सनं सिरदाररी, चुगल बिगाड़े चाल ॥ ८ ॥
चुगल फिरंगी अत चतुर, विग्रातणां बखांण ।
पांणी मांहे पलक में, आग लगावे आंण ॥ ९ ॥

(५) प्रकृत = प्रकृति, स्वभाव । परतंत = परतंत्र । सुणणसूं = सुनने से । गुर मंत = गुरु और मित्र ।

(६) पीथल = पृथ्वीराज चहुवान । मूंज = धारा नगरी का परमार राजा मुंज । कुंण कुंण = कौन कौन । डहकाणां = बहकावट में आए । वापार = क्रिया ।

(७) बधक = घातक । गुरु सेजगत = गुरु-पत्नी से व्यभिचार करनेवाला । कुंण = कौन । बधतो = अधिक । एकण = एक ही । मोर = पत्ती ।

(८) रोल = दिल्लगी, उपद्रव । मोल = सम्मापन । सनं सनं = धीरे धीरे ।

(९) फिरंगी = अँग्रेज । दारू = (शराब) निकालने का यंत्र । तणा = की । बखांण = बड़ाई । पलक में = क्षण में । आंण = आ करके ।

साह दुकानां चोरटा, साहब कांनां चाड़ ।
लाभ बित मत हर लिए, बे सोभा का फाड़ ॥ १० ॥
साहिबसूं दाखे सुखन, सत पुरषां उरसाल ।
चुगलां आहिज चाकरी, चुगलां आही चाल ॥ ११ ॥
लोक चुगल कांने लगे, घू घू बोल्यो गेह ।
भायां सूं भेलप नहीं, विपत लिखा त्यां बेह ॥ १२ ॥
करण रसायण कड छिया, हरिचिरतां हंसियाह ।
चुगलांने गणिया चतुर, बने गिरे बसियाह ॥ १३ ॥
करे न चुगलो कांकरो, चुगल दिराणों नाम ।
विपम अंगारा चिलम बिच, जले तेण अठजाम ॥ १४ ॥

(१०) साह = साहूकार । दुकानां = दुकान पर । चोरटा = चोर । चाड़ = चुगल । साहब = मालिक । बित = धन । मत = बुद्धि । फाड़ = बिगाड़नेवाले ।

(११) दाखे = कहना । सुखन = बात । पुरखां = पुरुषों के । उरसाल = हृदय का साल । आहिज = यही । आही = यही । चाकरी = नौकरी ।

(१२) घू घू बोल्यो गेह = घर पर घू घू बोला । (कहावत है कि जिस घर पर उल्लू बोलता है उस पर आफत अवश्य आती है ।) भेलप = मिलाप । बेह = विधाता ।

(१३) करण रसायण कड़छिया = सोना बनाने की अधीर, रसायनी । हरिचिरतां = हरिचरित्र । हंसियाह = हँसनेवाले । बने गिरे बसियाह = वन पहाड़ों में बसते हैं ।

(१४) कांकरो = कंकर । चुगल = चिलम में रखने का कंकर ।

सुणणहार रा श्रवणसूं, सुखन बंधे नह सोर।
चतुराई चुगलां तणों, जग में दीठी जोर ॥ १५ ॥
नरक समो दुख-थल नहीं, बाडव समो न ताप।
लोभ समो अोगण नहीं, चुगली समो न पाप ॥ १६ ॥
तन धारे तोछण तणों, जग चुगलांरी जीह।
आठ तरफ खावे उदर, दै छांनां दुख दीह ॥ १७ ॥
पनग लड़ा कीड़ा पड़ो, सड़ा झड़ा दुख संग।
जग चुगलांरी जीभड़ी, वायस भखो विहंग ॥ १८ ॥
बुरी चुगल मुख में बसे, आछीरो नँह अंग।
भाखी बैसे स्वानमुख, भूल न बैसे भंग ॥ १९ ॥

दिराणों = दिया । विषम अंगारा = तेज आग । अठजाम = आठों पहर । तेण = इसलिए ।

(१५) सुणणहार = सुननेवाले । सुखन = बात । बंधे नहसोर = चुपके से लग जावे । दीठी = देखी । जोर = जबरदस्त ।

(१६) दुखथल = दुख की जगह । बाडव = अग्नि । ताप = गर्मी । अोगण = अवगुण ।

(१७) बीछण = सादा बिच्छू । जीभ = जीभ । आठ तरफ = हर तरफ । दै छोना = डंक मारकर । दुख दीह = दुख देती है (दै... दीह पाठा०—दै छानां दुख दीह —छानां = गुप्त । दीह = दिन) ।

(१८) पनग = पन्नग—सांप । लड़ा = डसो । झड़ा = गिर पड़ा । जीभड़ी = जिह्वा । वायस = कौआ । विहंग = पक्षी । भखो = खाओ ।

(१९) बुरी = बुराई । आछीरो = भलाई का । नँह = नहीं । भूल न बैसे = भूलकर भी नहीं बैठता है । (कुता मैली वस्तु खाता और

मात हूंत अधिकी मया, करै चुगल विधकेण ।
मल वा करसूं भेटही, औ रसणां अग्रेण ॥ २० ॥
नेह निवांणे नांखियां, चुगलो नहिं चिकणाय ।
लाखां गुण कर देखलो, वह धाँ नँह बंधाय ॥ २१ ॥
नायक माने चुगल नूं, परगह करै पुकार ।
मांहरा सिररामोड़नूं, कर बोलो करतार ! ॥ २२ ॥
मूढ जिके गुरु मंत्र ज्यूं, चुगली श्रवण सुनंत ।
राग तान रीझल नहीं, ढोलो सीस धुणंत ॥ २३ ॥

मक्खी का भी मैली चीज़ से प्यार होता है, भँवरा फूल पर ही बैठता है ।)

(२०) मात = माता भी । हूंत = से । मया = कृपा । विधकेण = किस प्रकार । मल = मलमूत्र । वा = वह । भेटही = साफ करती है । औ रसणा अग्रेण = जीभ के अग्रभाग से । (चुगली खाने को भ्रष्टा खाना भी कहते हैं ।)

(२१) नेह = तेल, स्नेह । निवाणे = जलाशय में, मेल करने को । नाखियां = डालने से, लगाया । चुगली = चोटी । गुण = उपकार, डोरी । धां = किसी तरह । नँह बंधाय = नहीं बँधती है । (मित्र नहीं होता है ।) चिकणाय = मुआफिक होना, चिकना होना ।

(२२) नायक = सर्दार । माने चुगलनूं = चुगल की बात मानता है । परगह = पास के लोग । मांहरा = हमारे । सिररामोड़नूं = मालिक को । बोलो = बहरा ।

(२३) जिके = जो । ज्यूं = समान । रीझल = रिझानेवाली । ढोलो = स्वामी । धुणंत = हिलाता है । (राग, तान को न समझने-वाला सिर हिलावे तो मूर्ख कहाता है ऐसे ही चुगल की बातों पर रीझनेवाला मूर्ख है ।)

साहिब चुगल समान है, सो इज बुरी सुणंत ।
श्रोता बकता होत मम, भणिया लोक भणंत ॥ २४ ॥
मातारा कुच हूंत मुख, लड़को हरख लगात ।
मूरख कान लगाड़ मुख, एम चुगल उमगात ॥ २५ ॥
मिहल विछीया चुगल मुख, नायक कांन लगांह ।
भूषणगण मांणस भला, मिलही च्यार मंगांह ॥ २६ ॥
तखत दिली बेसण तणों, मन मांझल मुगलांह ।
मालक श्रवणें देण मुख, चाह रहै चुगलांह ॥ २७ ॥
चिड़ो बचांरी चांच में, चांच दिवै भर चार ।
दुरजन मुख इण विध दिवै, मूरख श्रवण मझार ॥ २८ ॥

(२४) साहिब = मालिक । बुरी = चुगली । बकता = वक्ता, कहनेवाला । भणिया = विद्वान् । भणंत = कहते हैं ।

(२५) मातारा = माता के । कुच = स्तन । हूंत = से । लड़को = बालक । हरख = हर्षित होकर । लगाड = लगाकर । एम = ऐसे । उमगात = प्रसन्न होता है ।

(२६) मिहल = स्त्री । बिछीया = बिछिए । कान लगांह = कानों के लगने से । च्यारमगांह = हर जगह । (दोहे का अर्थ संदिग्ध है ।)

(२७) बेसण तणी = बैठने की । सांझल = में । मुगलांह = मुगलों के । श्रवणें = कान में । चाह = इच्छा । चुगलांह = चुगलों के ।

(२८) चिड़ो = चिड़िया । बचांरी = बच्चों की । चांच दिवै भर चार = चोंच में चुगा भरकर देती है । इण विध = इसी प्रकार । मझार = में ।

चुगलो उगलो चीज है, चुगलो है चरकीन।
काग हुवै कै कूथरो, इणरै रस आधीन ॥ २९ ॥
जग मांझल चुगलो जिसो, हीण विसन अनहैन।
विण चुगलो भुगते विथा, चुगलां कीधां चैन ॥ ३० ॥
करे दान कुरखेत में, मंजन करे प्रयाग।
मरे चुगल कासी महीं, मिटे न दोजख माग ॥ ३१ ॥
अंबुजसुतनं ओलभो, दुखी हुए जग दीध।
जाणी जिणरी जीभ में, किसतूरी नँह कीध ॥ ३२ ॥
कागां केरी चांच ज्यूं, चुगलां केरी जीह।
विसटा ज्यूं परचा बुरी, चूंथे सबही दीह ॥ ३३ ॥

(२९) उगली चीज = उल्टी, वमन। चरकीन = पाखाना। कूथरो = कुत्ता।

(३०) जग मांझल = संसार में। जिसो = जैसा। हीण = हीन, बुरा। विसन = व्यसन। अनहैन = दूसरा नहीं है। विण = बिना। विथा = व्यथा। कीधां = करने से। चैन = सुख।

(३१) कुरखेत = कुरुक्षेत्र। मंजन = स्नान। दोजख = नरक। माग = मार्ग।

(३२) अंबुजसुत = ब्रह्मा। ओलभो = उपालंभ, उलहना। दीध = दिया। जाणी = जान कर भी। जिणरी = जिसकी चुगल की। जीभ मे = जिह्वा में। किसतूरी नहकीध = कालिख नहीं की।

(३३) केरी = की। ज्यूं = जैसी। जीह = जीभ। विसटा = विष्ठा। परची = दूसरे की। बुरी = बुराई। चूंथे = चूँथना, गूँधना। दीह = दिन।

सनमुख अत मीठा सबद, मेह समैंरो मोर ।
उगलै विष परपूठ ओ, चुगल दई रो चोर ॥ ३४ ॥
ऊंडा जल सूकै अवस, नीलो बन जल जाय ।
चुगल तणां पगफेर सूं, बसती ऊजड़ थाय ॥ ३५ ॥
छाली हंदा कांनडा, ग्वालां प्राधीन ।
बस चुगलांरे सरब विध, कांन सठां इम कीन ॥ ३६ ॥
पर अकाज करबो करै, सदा नयण कर सैन ।
चुगल जठै नँह चांनणो, चुगल जठै नँह चैन ॥ ३७ ॥
चुगली विसतारत चुगल, सांप्रत होय सचेत ।
सो मुरदार मसांणरो, लट मुख मांझल लेत ॥ ३८ ॥

(३४) समैंरो = समय का । उगलै = निकालता है । परपूठ = पिछाड़ी । ओ = वह । दई रो = देव का (ईश्वर का) ।

(३५) ऊंडा = गहरा । अवस = अवश्य । नीलो = हरा । पगफेरसूं = पग पड़ने से । थाय = हो जाती है ।

(३६) छाली = बकरी । हंदा = के । कानड़ा = कान । ग्वालां = ग्वालों के । बस चुगलांरे = चुगलखोरों के वश । कांन सठां = मूर्खों के कान ।

(३७) अकाज = अनर्थ । करबो करै = किया करता है । नयण-कर = नैन के । सैन = संकेत । जठै = जहां या वहां । चानणो = प्रकाश । चैन = सुख ।

(३८) विसतारत = फैलाते हुए । सांप्रत = सचमुच । होय सचेत = जान बूझ करके । मुरदार = मृतक । लट = कीड़ा । मुख मांझल = मुख में ।

चुगलो करतां चुगलरा, जुग होटड़ा जुड़ंत ।
मल नांखण जांणे मिले, दोय ठीकरा दंत ॥ ३९ ॥
चुगल अपूरव चीज है, जिणनूं लाधो जांण ।
अवरां कांने लागही, उडही अवरां प्रांण ॥ ४० ॥
दियां ओलभो हँस दिए, नीची निजर निहाल ।
सूंस करै गालां सहै, चुगल बड़ो चिरताल ॥ ४१ ॥
सफरी पकड़ण सांतरो, बैठो ढब चुगलांह ।
कथा बुरी करवा तणों, चोखो ढब चुगलांह ॥ ४२ ॥
जो सुख चाहो जगत में, लच्छ धरम सुखलोय ।
चित्र मंडाणां चुगळरो, मत देखो मुख कोय ॥ ४३ ॥

(३९) जुग होटड़ा = दोनों होठ । जुड़ंत = मिलते हैं । मलनाखण = विष्ठा डालने को । जांणे = माने । ठीकरा = मिट्टी के बर्तन के टुकड़े जिनसे स्त्रियां प्रायः मल उठाया करती हैं ।

(४०) जिणनूं = जिसको । लाधो जांण = जान लिया है । अवरां = औरों के । उड़ही = उड़ते हैं । चीज = चील (पाठा०) ।

(४१) ओलभो = उलहना । निहाल = देखकर । निजर = निगाह । सूंस करै = शपथ खाता है । गालां सहै = गालियां सहता है । चिरताल = चरित्रवाला अर्थात् छली ।

(४२) सफरी = मछली । पकड़ण = पकड़ने को । सांतरो = तैयार । चोखो = अच्छा । ढब = रीति । चुगलांह = चुगलों को ।

(४३) सुख = सुद (पाठा०) । लच्छ = लक्ष्मी । लोय = लोक । चित्र मंडाणां = चित्राम के । कोय = कोई ।

करै चाड़ पर काचड़ा, अठी उठी नूं ईख।
पगविच हाडक परछियां, तिणसूं स्वान सरीख ॥ ४४ ॥
नेड़ा बेसां जाय नित, सीगो मित्र समान।
क्यूं मोनें गुर ना कहो, किल फूंका जग कान ॥ ४५ ॥
चित दे बातां चुगलरी, सुणजे कर सनमान।
ऊमर में नँह ऊपजे, कीडांरो दुख कान ॥ ४६ ॥
करै सरवरा काचड़ा ?, स्याल किसूकी सीह।
कांधा सेथी टूट कर, जमीं पड़ो वा जीह ॥ ४७ ॥
मुख ओड़ीरे भांहिलें, पर काचड़ा पुरीप।
पटकै रोडी श्रवण पर, से चंडाल सरीप ॥ ४८ ॥

(४४) चाड़ = चुगल। पर = पराई। काचड़ा = बुराई। अठी उठीनूं ईख = इधर उधर देखकर। हाड़क = हड्डी। परछियां = पकड़े हुए। तिणसूं = इससे। सरीख = समान।

(४५) (चुगल कहता है) नेड़ा बेसां = पास बैठते हैं। सीगो = संबंध। मोनें = मुझको। किल = निश्चय। फूंकां = फूंकते हैं। (कन-फुँके गुरू होते हैं अर्थात् गुरू कान में मंत्र सुनाता है।)

(४६) ऊमर में = उमर भर। नँह ऊपजे = नहीं उत्पन्न होवे। कीडांरो = कीड़ों का। (अभिप्राय है कि चुगल की बातों से कान के कीड़े झड़ जाते हैं।)

(४७) सरवरा = सबके। काचड़ा = बुराई। कांधा सेथी = कंधे सहित। जमी पड़ो = जमीन पर गिरो। जीह = जीभ। 'कीसूकी सीह' यह पाठ संदिग्ध है।

(४८) ओड़ीरे = टोकरे के अंदर। पर = दूसरे का। काचड़ा = चुगली।

बनड़ा नूं सूंपै बनी, हतलेवे मिल हाथ।
सठ कर दे चुगली समं, श्रवण चुगल मुख साथ॥ ४९॥
ऊपाड़ं आबू जिती, पर निंदारी पोट।
पिसण न्याय पग डग पड़ै, दुरासीस लग दोट॥ ५०॥
पुरष श्रवण प्यालो भरे, चुगली कांजी चाड़।
मन पय हिय प्यालो महीं, बेगो दिए बिगाड़॥ ५१॥
ऐ दूहा मैं आखिया, रस नीत रो रहाड़।
सभा भरी मझ सांभलै, चिड़ै जिको हिज चाड़॥ ५२॥

पुरीष = पाखाना या बुराई। रोड़ा = [illegible]। [illegible] पाखाना आदि डालते हैं उस स्थान को कहते हैं। [illegible] = [illegible]। [illegible] = [illegible]।

(४९) बनड़ा नूं = दूल्हे को। सूंपै = सौंपता है। बनी = दुल्हन। हतलेवा = हस्त मिलाप के समय। सठ = मूर्ख। कर दे = कर देता है। श्रवण = कान। (श्रोता चुगलखोर के वश हो जाता है।)

(५०) ऊपाड़े = उठावे। आबू जिती = पहाड़ के जितनी। पोट = गठरी। पिसण = चुगलखोर। [illegible] = [illegible] जाते हैं। दुरासीस = शाप की। लग दोट = [illegible] लगाकर।

(५१) कांजी = खटाई। चाड़ = चुगल। मन पय = मन (विचार) रूपी दूध को। हिय = हृदय। महीं = में। बेगो = जल्दी। (जैसे कांजी से दूध फटता है वैसे ही चुगल मन को फाड़ देता है।)

(५२) ऐ = ये। दूहा = दोहे। मैं आखिया = मैंने कहे। रस नीति रो रहाड़ = रस और नीति को रखकर। सांभलै = सुने। चिड़ै = चिढ़ता है। जिकोहिज = वोही। चाड़ = चुगल है।

(६) अथ वैस वार्ता लिख्यते

दोहा

नाभनंद आणंदनिध, भरत जन्म करतार।
सिद्धाचल दर्सण सुखद, आदीश्वर नौकार ॥ १ ॥
करम आठ मेटे कियो, पंचम गुण परवेस।
थिर सिद्धाचल थापना, आदीश्वर आदेस ॥ २ ॥
जग अपजस देखै नहीं, देखै स्वारथ दाय।
जिम तिम कर बणियो रहे, बणियो तेण कहाय ॥ ३ ॥

(१) वैस = वैश्य। नाभनंद = नाभिराजा के पुत्र, ऋषभदेव (जैनियों के प्रथम तीर्थंकर)। आणंदनिध = आनंदनिधि। भरत जन्म करतार = भरत के पिता। सिद्धाचल = शत्रुंजय, काठियावाड़ में जैनियों का तीर्थस्थान। आदीश्वर = ऋषभदेव का दूसरा नाम। नौकार = नौकार मंत्र, जैनियों का गुरु, मंत्र जिसमें अरिहंत, सिद्ध, आचार्य्य, उपाध्याय और साधु को (पंच परमेष्टि) नमस्कार किया जाता है।

(२) करम आठ = जैनी आठ प्रकार के कर्म मानते हैं (ज्ञानावर्णी, दर्शनावर्णी, मोहनी, अंतराय, वेदनी, नाम, गोत्र, आयुष्य)। पंचमगुण = मोक्ष। परवेस = प्रवेश। आदेस = आदेश, नमस्कार।

(३) दाय = अच्छा लगना। बणियो रहै = बना रहै। बणियो = वणिक्। तेण = तिससे।

साह किता केसर बगल, रचै फंद दिन रात।
मच्छ गळा गळ मांहि बस बच जावे हर बात ॥ ४ ॥
कै पूजै श्रीकंत नूं, कै पूजै अरिहंत।
बांका मत विस्वास कर, ए सह वणक असंत ॥ ५ ॥
कापड़ चोपड़ पान रस, दे सह खांचै दाम।
बणक मित्र जद बांकला, कीधो इण सूं काम ॥ ६ ॥
वात कोप सौ भूत सम, सौ दोयण सम चाड।
गोली सौ गणका जसी, सम सौ चोर किराड़ ॥ ७ ॥
मेह मथारै बरसियो, नहीं किराड़ां मार।
घोड़ा हांसन भख़ियो, सीस किराड़ा भार ॥ ८ ॥

(४) साह = साहूकार। किताक = कितनेक। सरबगल = सब को स्वाहा करनेवाले। मच्छ गला = गड़बड़। बस = बसे, रहकर। केसर = केहर, सिंह। बगल = पास अथवा काबू रहे, रहकर।

(५) श्रीकंत = विष्णु (द्रव्य-पात्र)। अरिहंत = जैनियों के तीर्थंकर (शत्रु को मारनेवाले को)। बांका = कवि बांकीदास। बणक = वणिक्। असंत = दुष्ट। ए सह = ये सब।

(६) कापड़ = कपड़ा। चोपड़ = घी तेल इत्यादि। पानरस = पंसारी की वस्तु औषध इत्यादि। रस = गुड़ खांड़ आदि। खांचे = खींचे। (कीधो इणसूं काम = पाठा० की दोसण सूं काम।) दोयण = शत्रु। जद = जब।

(७) वातकोप = बादी का कोप (रोग)। सौ दोयण = एक सौ शत्रु। चाड़ = चुगल। गोली = दासी। किराड = वणिक्। सम सौ चोर = एक सौ चोरों के बराबर।

(८) मथारै = ऊपर। बरसियो = बरसा हुआ। किराड़ां मार =

नागो हुवै नाचै बणक, मांग्यो सूंपै माल ।
अदभुत ठागो जात इण, लागो लोभ कमाल ॥ ९ ॥
स्वारथ धरम न सिद्ध हुवै, बणक मित्र कर लाख ।
हुवै उपस्थ कच बालियां, नहिं अंगार नहिं राख ॥१०॥
दगो दियो कर दोसती, ठग जाहर सब ठाह ।
बांणण जाया बांकला, कहै महाजन काह ॥११॥
दरसावै जगनूं दया, पाप उठावै पोट ।
हित में चित में हात में, खत में मत में खोट ॥१२॥
गाहै सोदे ग्राहकां, ढाहै जे गज ढल्ल ।
लाहो लोटे वाणियों, आ है सांची गल्ल ॥१३॥

किनारे तोड़नेवाली । हींसन = हिनहिनानेवाला । भलिया = अच्छे हैं । भलिया = (पाठा० भालिया) देखकर । किराड़ = वणिक् ।

भावार्थ—नदी के माथे पर मेंह बरसने से वह खुश होकर किनारे तोड़ देती है वैसे ही वणिक् के सिर पर बोझ देखकर घोड़े खुश होते हैं कि हमारा बोझ बँटानेवाला है ।

(९) ठागो = ठग ।

(१०) उपस्थ कच बालियां = जननेन्द्रिय के केश जलाने से ।

(११) ठाह = ठौर । बांणण = बनियानी । बांकला = कवि बांकीदास । महाजन = बड़े आदमी । वणिक् को महाजन कहते हैं । काह = किस लिये ।

(१२) जगनूं = जग को । पोट = गठरी । खत में = लिखावट में । खोट = ऐब ।

(१३) गाहै = लूटता है । सोदो = सौदा देने में । ढाहै = गिराता

तोला ताकड़ियां थका, खळक तणो धन खाय ।
तिकूं ग्रहे तरवार नूं, जबरी कही न जाय ॥१४॥
हुवै वसीरा वाणियां, पातर हुवै खवास ।
हुवै कीमियांगार ठग, निध हर जावै नास ॥१५॥
झलक गया धननूं झुरै, हया दया कर हीण ।
वित अधिकावै वाणियां, नाणे लीण अलीण ॥१६॥
वांका वंचक वाणियां, नहि जाण्या नहिं राह ।
त्यां हंदा धन ताणियां, थां आण्या घर राह ॥१७॥
जल नदियां मिलियां जिके, मिलिया समंद मझार ।
वित कर चढ़िया वाणियां, पूगा समदां पार ॥१८॥

है । गजढळ = बड़ा बड़ा ढालियां । लाभ लेटे = लाभ उठाता है । आहे = वह है । गल = बात ।

(१४) तोला ताकड़ियां थकां = तोला ताकड़ी से । खलक तणो = दुनिया का । जबरी = जबरदस्ती ।

(१५) वसीरा = बसाया हुआ, प्रजा । खवास = पासवान, रखैली । कीमियांगर = सोना बनानेवाले । निधहर जावै नास = धन लेकर भाग जाते हैं ।

(१६) झुरै = रोते । हीण = हीन । नाणे = रुपए पैसे । अलीण = नहीं लेने योग्य ।

(१७) वंचक = ठग । नहीं जाण्या = अज्ञानी । नहिं राह = रास्ता भूले भटके हुए । त्यां हंदा धन = उनका धन । ताणिया = खींचकर । आण्या = लाए ।

(१८) जिके = जो । समंद मझार = समुद्र के बीच । चढ़िया वाणियां = वणिकों के हाथ पड़ गया ।

बंक गयोड़ा दीहड़ा, नदी गयोड़ा नीर ।
वित कर चढ़िया वाणियां, वाळे केहो वीर ॥१६॥
तीड़ा करसण सूंपियो, बानरड़ां नूं बाग ।
माल किराड़ां सूंपियो, ज्यांरा फूटा भाग ॥२०॥
क्याहीं कर बोहरो हुवै, क्याहीं कर है मित्त ।
क्याहीं कर चाकर हुवै, वणिक हरेवा वित्त ॥२१॥
ऐ दलाल ऐ खुड़दिया, हुंडो वाळ बजाज ।
ऐहिज करै पसारटो, केवल धनरे काज ॥२२॥
दोलत आंणै दूर सूं, अंग वणै अदनाह ।
बड़ा प्रपंचो वाणिया, वाघ गऊ बदनाह ॥२३॥
विरच जाय स्वारथ बिना, स्वारथ जितरे सैण ।
वणक तणो वैसास को, वणक तणां को वैण ॥२४॥

(१६) गयोड़ा = बीते हुए । दीहाड़ा = दिन । वाले = लौटावे, पीछा लेवे । केहो = कोन सा ।

(२०) तीड़ा = टिड्डियों को । करसण = खेती । सूंपियो = सौंप दी । बानरड़ानूं = बंदरों को ।

(२१) क्यां ही कर = कुछ भी करके । हुवै = होता है । मित्त = मित्र । हरेवा = हरने को ।

(२२) एह = ये ही । खुड़दिया = सर्राफ, टके कौड़ी बेचनेवाले । पसारटो = पंसारीपन ।

(२३) आणै = लाता है । अंग वणै = हितू बनते हैं । अदनाह = अदने आदमी के । वाव गऊ वदनाह = दिखने में गऊ परंतु हैं वाघ ।

(२४) विरचजाय = फिर जाते हैं, झगड़ने लग जाते हैं । जितरे = जब तक । सैण = मित्र । वेसास = विश्वास । वैण = वचन ।

जोड़ै नांणो जगत में, कर कर करड़ा काम ।
विवनो जीवे वाणियां, नांणा रो सुंण नाम ॥३५॥
लेखण तोला ताकड़ो, सोगन नै जीकार ।
वाणियाणी जाया तणा, है ये हिज हथियार ॥३६॥
खबरदार नर जवर नूं, वसत मंगाड़े मोल ।
बिगड़ै उण दिन वाणियां, तोलण हूंता तोल ॥३७॥
ए वाजै साजे पलै, साजी साहूकार ।
ए वाजै देवाळिया, ऊंधा ताला मार ॥३८॥
हूंडी सूं भूंडी हुवै, ऊंड़ी गाड़े आथ ।
देवाळो दरसाय दै, कर काठो हिय हाथ ॥३९॥

(३५) करड़ा = कठिन, खोटा । जोड़ै = जुड़ाता है । विवना = दुगना, मरा हुआ भी । जीवे = जीता है ।

(३६) लेखण = कलम । सोगन = शपथ । जीकार = जीकारा, मीठा बोलना या खुशामद करना । ये हिज = ये ही ।

(३७) नर जवर नूं = जबरदस्त का । बसत = वस्तु । मंगाड़े = मँगाता है । उण दिन = उस दिन । तोलण हूंता = तोलने का ।

(३८) ए वाजै = ये कहलाते हैं । साजे पलै = चलते हुए काम में पैठ रहे तब तक । साजी = साहाजी । देवालिया = जो लेकर वापस न देवे । ऊंधा = उलटे । जब कोई दिवाला निकालता है तो उलटे ताले जुड़ देता है ।

(३९) हूंडीसू = हुंडी से । भूंडी हुवै = बात बिगड़ जाती है ऊंडी = गहरी । आथ = धन । देवालो = दिवाला । दरसाय दै = दिख देते हैं । काठो = कठोर ।

जोड़ण वित अनजात में, अकल नहीं अवड़ीह ।
वित नित जोड़ै वाणियां, कर कवड़ी कवड़ीह ॥४०॥
कूंतो पर धन रो करै, हाजर कला हजार ।
धूत दिए आगम धड़ा, बैठा हाट बजार ॥४१॥
थल कतार लांघण थटे, लै जिहाज जल अंत ।
भोली ढ़ाली वाणणी, बेटा धूत जणंत ॥४२।
फोग केर काचर फली, पापड़ गेघर पात ।
बड़ियां मेले बाणियां, सांगरियां सोगात ॥४३॥
धूत बजारी धरमरी, हिए न माने हील ।
मन चलाय खांपण महीं, काढ़ै नफो कुचील ॥४४॥

(४०) जोड़ण = जोड़ने की । अनजात = अन्य जाति । अवड़ीह = इतनी । कर कवड़ी कवड़ीह = कौड़ी कौड़ी इकट्ठी करके ।

(४१) कूंतो = मोल तोल । धूत = धूर्त । आगम = आगे से । धड़ा = अंदाजा ।

(४२) थल = पृथ्वी । कतार लांघण थटे = (कतार) ऊँटों से लाँघते हैं या पार करते हैं । वाणणी = वणिक स्त्री । भोली ढ़ाली = सीधी सादी । धूत = धूर्त । जणंत = जनती है ।

(४३) फोग = एक वृक्ष होता है जिसके फल का शाक होता है । काचर = कचरी । गेघर = हरे चने । गेघरपात = चने के पौदे के पत्ते । बड़ियां = (मंगोड़ी) बड़ी । सोगात = भेट । सांगरियां = सांगरी (शाक विशेष) ।

(४४) बजारी = बज़ारू या दिखावटी । हील = डर । खांपण = मुर्दे के उठाने की वस्त्रादि वस्तुएँ । मंही = में । कुचील = खोटे आदमी ।

दे नँह सेंधा नूं दगो, ग्रहे कुतो ही ज्ञान।
देवे सेंधा नूं दगो, साह करै सनमान ॥४५॥
कवड़ी रा लहणा महीं, राखे हट कर रोक।
पाग कांख मांझल लियां, लूंड बजारी लोक ॥४६॥
उत्तम थूंक विलोवही, मध्यम मूंकी थाप।
वणिक अधम चिढता करै, पनसेरी सूं पाप ॥४७॥
इम आवे इक ऊपरां, हाटी लोप हटक्क।
सलभ मुआं सिर संक्रमें, कीड़ी जेम कटक्क ॥४८॥
कर कम चाले जीभ अत, सिर पाघड़ सिरकंत।
विढ़ै बजारां वाणियां, मुख मूंछां फरकंत ॥४९॥

---

(४५) सेंधा = जानकार। ग्रहै = रखता है। कुतो = कुत्ता। सेंधा = मुलाकाती। साह = वणिक। करै सनमान = सनमान करके (पेट में घुसकर कटारी मारता है)।

(४६) कवड़ी रा = कौड़ी के। लहणां महीं = कर्ज लेने में। पाग = पगड़ी। कांख = बगल। मांझल = में, बीच। लूंड = लुच्चे। बजारी लोक = बाजार में बैठनेवाले।

(४७) थूंक विलोवही = बक बक करते हैं। मूकी थाप = मुक्का और थप्पड़ चलाते हैं। चिढ़ता करै = क्रोध में आकर करते हैं। पाठा०—बिढंता = लड़ते। पंसेरी सूं पाप = कम तोलते हैं।

(४८) इम = ऐसे। हाटी = वणिक। लोप हट्टक = कार उल्लंघन करके। सलभ = टिड्डी। संक्रमें = चढ़ते हैं। जेम = जैसे। कीड़ी कट्टक = कीड़ीदल।

(४९) कर कम चाले = हाथ कम चलते हैं। अत = बहुत। पाघड़ = पगड़ी। सिरकंत = हिलती है। विढ़ै = लड़ते हैं।

चित लालच वेलां चढ़ै, चेलां जिनस चढ़ांहि ।
हेलां पर घर हांण दै, मेलां खेलां मांहि ॥५०॥
पंसेरी इक पालडे, पुंगोफल इक ओड़ ।
ऊ तोलण सम कर उभै, आ चतुराई खोड़ ॥५१॥
दगो पालड़ा डांडियां, तोला मझ तणियांह ।
गुर सूंही गुदरे नहीं, वणिक वैंत वणियांह ॥५२॥
तोल दिए परखाय दे, गणे दिए दे माप ।
वांण न छोड़े वाणियो, बंधव गणे न बाप ॥५३॥
मैण लगाड़े पालड़ां, तोलां मांहि कसूर ।
डर तज राखै डांडियां, पारद हूंता पूर ॥५४॥

(५०) वेलां = समय । चेलां = तकड़ी के पल्ले । जिनस = वस्तु । हेलां = प्रगट, चिल्लाने से । हांण दै = हानि पहुँचाते हैं । मेलां खेलां मांहि = मेलों खेलों के समय ।

(५१) पालड़े = पलड़े में । पुंगीफल = सुपारी । ओड़ = तरफ । ऊ = वह । उभै = दोनों को । आ = यह । खोड़ = ऐब । तोलण = तोरण (पाठा०) ।

(५२) दगो = दगा है । पालड़ा = पलड़े में । डांडियां = डंडियों में । तणियांह = तणियों में । सूंही = से भी । गुदरे नहीं = चूकते नहीं । वैंत = अवसर । वणियांह = आने पर । वैंत = व्यूंत (पाठा०) ।

(५३) गणे दिए = गिन देते हैं । दे माप = माप देते हैं (तोल देते हैं, परखा देते हैं, गिन देते हैं और माप देते हैं) । वांण = आदत । बंधव = बंधु । गणे = गिने, समझे ।

(५४) मैण = मोम । पालड़ां = पलड़ों के । मांहि = में ।

जल छाणे दिन जीम ही, नीली वस्त न खाय।
दोसत हूं देतां दगा, कसर न राखे काय ॥५५॥
सामल ले भाई सगा, डर तज धोले दीह।
वणियाणी जाया करै, लेखण हूंता लीह ॥५६॥
पढ़ै मंत्र मुख दे पलो, कोमल माल करग्ग।
पंथ बुहारे नरकरा, साधन करै सरग्ग ॥५७॥
जिते करे हट पाहुणो, इते करै हट एह।
पग थिर रोपै पाहुणो, एह हुए असनेह ॥५८॥
बांटे नहिं धन वाणियो, खाटे धन करखांत।
रीझ करै ताली दिए, हँसै दिखालै दांत ॥५९॥

कसूर = खोट। डर तज = डर छोड़कर। पारद = पारा। हूंता = से। पूर = भरी हुई।

(५५) जल छाणे = जल छानकर पीते हैं। जीमही = खाते हैं। नीली वस्त = हरा शाकादि। दोसत हूं = दोस्त को भी। कसर न राखे = कसर नहीं रखते। काय = कुछ भी।

(५६) सामल = शामिल। धोलेदीह = दिन धौले। लेखण हूंता = कलम से। लीह = लीक, लेख कलम करनेवाला।

(५७) पलो = कपड़ा, पल्ला। कोमल माल = नोकरवाली। करग्ग = हाथ में। पंथ = मार्ग। सरग्ग = स्वर्ग।

(५८) जिते = जब तक। पाहुणो = पाहुना। इते = तब तक। एह = ये। थिर = स्थिर। असनेह = खारे, नाराज।

(५९) दिखालै = दिखाते हैं। खाटे = इकट्ठा करता है। करखांत = बड़ी चाह से।

वित जीमूत न बांटियो, परबस तजिया प्राण ।
कही अनुक्रम सूं कथा, विच वाराह पुराण ॥६०॥
हाट बसे भूखो हँसे, हाथ धरो कण हांण ।
कमर कसे जर केवटण, नंह तर सेज सवांण ॥६१॥
गायक गायो बीण ले, इण लिख दीनी लाख ।
ऊं कोड़ो पायो नहीं, सहर दिली दे साख ॥६२॥
बोच बजारां वाणियां, भांजे सरजे भाव ।
पावां रा लेखा करै, दावां रा दरयाव ॥६३॥

(६०) जीमूत = एक ऋषि का नाम है। न बांटियो = नहीं बांटा। परबस = बरजोरी से। (वाराह पुराण में जीमूत ऋषि की कथा है)।

(६१) हाट = दूकान। हाथ धरो कंण हांण = हाथ लगाने से कण (नाज) की हानि होती है। कमर कसे = कमर कसता है। जर = धन। केवटण = सँभालने को। नंह तर = नहीं तो। सेज सवांण = पलंग पर सो जाता है। हाथ धरो...हाण = हत्थ धरो तिण हांण (पाठा०)। नहं तर सेज सवांण = नहं तरसे जस वाण (पाठा०) (यश की इच्छा नहीं करे)। बाण = आदत।

(६२) गायक = गानेवाला। बीण ले = वीणा लेकर। इण = इन्होंने। लाख = लक्ष रुपए। ऊं = उसने। सहर दिली = दिल्ली शहर। साख = गवाही।

(६३) भांजे = तोड़े, घटावे। सरजे = बढ़ावे। पावां = चार छटांक का एक पाव। लेखा = हिसाब। दावां = मुकदमों या झगड़ों के। दरियाव = समुद्र।

मंत्र सुणायो महल नूं, सोलम पोलम साह ।
ऊपर सूं पड़ियो इलां, चोर करे धन चाह ॥६४॥
अत बकियो जासूं अबै, सेत्रूंजारी जात ।
नर भेलाकर चोर नै, पकड़ायो अधरात ॥६५॥
बोहरो किणयक मुगलरो, वणक दिली मझवास ।
दाम लिया उण बोल बस, असपत औरंग पास ॥६६॥
दफ्तर सब दहयूं इसो, कियो सतायु सिताब ।
आयो पाछो वणक इक, जमपुर सूं कर जाब ॥६७॥

---

(६४) महल = स्त्री । नूं = को । सोलम पोलम साह = नाम है । पड़ियो = गिरा । इलां = पृथ्वी पर ।

(६५) अत = बहुत । बकियो = बका । जासूं अबे = अब जाऊँगा । सेत्रूंजारी = शत्रुंजय (जैनियों का तीर्थस्थान) । जात = यात्रा । भेला कर = इकट्ठा करके ।

(६६) किणयक = किसी । दिली मझवास = दिल्ली में निवास था । उण = उसने । असपत = बादशाह (अश्वपति) । औरंग = औरंगजेब ।

(६७) दहयू = जलाया । सतायु = शतायु सौ वर्ष का । सिताब = जल्दी से । जमपुर सूं कर जाब = यमराज से जवाब करके ।

नोट—एक वणिक को यमदूत पकड़कर ले गए थे । यमराज के यहाँ उसने बड़ी चालाकी से हतायु को शतायु बनाया और यमराज से कहा कि मेरी तो १०० वर्ष की आयु है । इस पर यमराज ने उसे छोड़ दिया ।

दी सुरही हाजर हुई, विनय सुणावै बात ।
गादी हूंत भजावियो, जमराजा इण जात ॥६८॥
रस संचे माखी जुंही, कीड़ी ज्यूं कणरास ।
धरे भेस जिम जीरवे, बैस दूकानां बास ॥६९॥
व्है हेको जिण धींगड़े, हींगड़ धींगड़ मल्ल ।
मोड़ो आयां ही मिलै, आटा घिरत अमल्ल ॥७०॥

---

(६८) सुरही = गाय । इण जात = इस जाति ने (वैश्य जाति ने) । जब यमराज के दूत किसी वणिक को ले गए तब यमराज ने उससे पूछा कि तूने क्या पुण्य किए हैं तब उसने कहा कि मैंने एक गाय पुण्य की थी । तब वह गाय बुलाकर उसके सिपुर्द की गई और कहा गया कि यह तेरी आज्ञा में दो घड़ी तक रहेगी । वणिक ने गाय को यमराज को मारने के लिये कहा तब यमराज भागकर विष्णु के पास आए । उन्होंने सब हाल जानकर कहा कि इस वणिक को नरक में डाल दो तब वह बोला कि महाराज ! जो आपका नाम लेता है वही दुःख से छूट जाता है तब मैंने तो आपके साक्षात् दर्शन कर लिए इस पर विष्णु भगवान् ने उसे स्वर्ग में भेजवा दिया ।

(६९) संचे = इकट्ठा करता है । जुंही = जैसे । कण राम = अनाज का ढेर । भेस = भेष । जिमि = जैसा । जीरवे = जी रुचे (पाठा०) । जी चाहे । बैस = वैश्य, वणिक । दुकानां = दूकानों में ।

(७०) व्है = होता है । हेको = एक । जिण = जिस । धींगड़े = गाँव में । हींगड़ = बनियों का एक गोत है । धींगड़मल्ल = नाम है । मोड़ो = बदमाश, देर से । उत्पाती महाजन के लिये संकेत है । अमल्ल = अमल । आया ही = आने से ही ।

नांणे वैसे वीड नहं, उलझे लेखो अत्थ ।
राती पाघणियां तणां, सुलझावण समरत्थ ॥७१॥
वणियाणी जाया तणो, भरम न गमणो भूल ।
नटियो कोडी ही न दे, मरणो करै कबूल ॥७२॥
बांका राखै वाणियो, सारां हूंत सलूक ।
कदियक खीजे तौकरै, वयण विलोणे थूक ॥७३॥
दस दूणा लोयण थकां, रामण आंधो जाण ।
बंक न लंक बसावियो, एक वणक ही आण ॥७४॥
जगडू जग जीवाड़ियो, भांजे भैभैकार ।
कीधो जै जैकार अन, वागो राय सधार ॥७५॥

(७१) जब रुपए पैसे का हिसाब बंद करने बैठते हैं और वह हिसाब उलझ जाता है तो लाल पगड़ीवाले (वणिक्) उसको सुलझाने में समर्थ हैं ।

(७२) तणों = का । भरम = अन्दाजा, भेद । गमणो = जाना जाता । नटियो = नटा हुआ । न दे = नहीं देता । मरणो = मरना ।

(७३) बांका = कवि बांकीदास । वाणियों = वणिक । हूंत = से । सलूक = मेल मिलाप, वर्ताव । कदियक = कभी । खीजे = क्रोधित होवे । वयण = वचन । विलोणे थूंक = थूंक बिलोता है, बक झक करता है ।

(७४) लोयण = नेत्र । थका = होते हुए भी । रामण = रावण । जाण = जानना चाहिए । बंक = कवि बांकीदास । लंक = लंका । वसावियो = बसाया । आण = लाकर ।

(७५) जगडू = जगडू शाह एक नामी शाह हुआ था जिसने

वणक सहोदर परत्रिया, वणक राय साधार ।
चोपग चिंतामण वणक, वे डमक्या वरवार ॥७६॥
दरजी फाड़ दुकूल नूं, सींवै लिए सुधार ।
इण विध री रचना अठै, जाणै जाणणहार ॥७७॥

दुष्काल में अन्न बाँटकर लोगों को जिलाया । भांजे = दूर किए । भैं-भैंकार = हाहाकार । वागो = प्रसिद्ध हुआ, कहलाया । राय = राजा । सधार = संरक्षक ।

(७६) चौपग = चौपाया, पशु । चिंतामण = एक प्रकार का रत्न । डमक्या = चमके । वरवार = बारम्बार । राय = राजा । साधार = आधारवाला । चतुर्थ पद का पाठान्तर—वेढब क्यावरवार । इसका अर्थ यह है—क्यावर—किरावर चुकते शादी का खर्च का आसक्त । वेढब खर्च करनेवाला ।

(७७) दुकूल = वस्त्र । नूं = को । सींवै = सीता है । इण विध = इसी प्रकार । जाणणहार = जाननेवाले ।

(७) अथ कुकवि-बत्तीसी लिख्यते

दोहा

सुकवि सुमुख पग नाय सिर, हिय थिर आण हुलास ।
कुकवि बतीसी ग्रंथ कवि, दाखै बांकीदास ॥ १ ॥
सठता धूरतता सहित, छंद रचे मद छाय ।
निपट लियां निरलज्जता, कुकवी जिको कहाय ॥ २ ॥
वानरी निरलज्जता, उपल कठणता लीध ।
वायस तणों कुकंठ ले, कुकवि विधाता कीध ॥ ३ ॥
दे धरणो दातार सूं, मांगे हठ कर माल ।
कूड़ा बोले कुतघनी, कुकवि अनंत कुचाल ॥ ४ ॥

(१) सुमुख = गणेश । कुकवि = खोटा कवि । हिय = हृदय में । थिर = स्थिरता । आण = लाकर । हुलास = आनंद । दाखै = कहता है ।

(२) सठता = मूर्खता । मद छाय = घमंड में चूर । निपट = अत्यंत । जिको = वो ।

(३) वानरी = बंदर की । उपल = पत्थर । कठणता = कठोरता । लीध = ली । वायस = कव्वा । तणों = का । कुकंठ = बुरा स्वर । कीध = किया, बनाया ।

(४) दे धरणो = धरना देकर, जबर्दस्ती से । कूड़ा = कूठ ।

खिलवत हास खुसामदी, सुरका दुरकी सांग ।
किसव लियां ए कुकवियां, माहव हूता मांग ॥ ५ ॥
सिर धूणे बोले सदा, हास चूक विण होय ।
कुकवि सभा जिण संचरे, सभा प्रभा हत होय ॥ ६ ॥
सूरज खांखल रतन सल, पोहमी रिण जल पंक ।
कायर कटक कलंक इम, कुकवी सभा कलंक ॥ ७ ॥
तम गिर गुफा न पायदे, जेथ मणी जोगेस ।
कोजे आदर कुकवियां, दरसे तम जिण देश ॥ ८ ॥
सुकवि तजे सुदतारनूं, जिण मुख कुकवि प्रसंस ।
जलद अग्र वक देखजूं, है प्रछन्न कलहंस ॥ ९ ॥

---

(५) खिलवत = खानगी । हास = हँसी । सुरका दुरकी सांग = भयभीत होने का स्वांग । किसव = पेशा, धंधा । ए = ये । कुकवियां = खोटे कवि । माहव = माधव । हूता = से ।

(६) सिर धूणे = सिर हिलावे, माथा हिलावे । बोले = बोलते समय । हास = हँसी । जिण = जिस । संचरे = जाते हैं । प्रभा-हत = निस्तेज ।

(७) खांखल = रेत-रज, आंधी । रतन = रव । सल = छेद । पोहमी = पृथ्वी । रिण = ऊसर भूमि । पंक = कीचड़ । इम = इसी प्रकार ।

(८) तम = अँधेरा । न पायदे = प्रवेश नहीं करता । जेथ = जहाँ । मणी जोगेश = योगीश्वर = योगियों में रव । दरसे = दिख-लाई देता है = प्रगट होता है ।

(९) सुदतारनूं = अच्छे दातार (दानी) को । जिण = जिसके । जलद = मेघ । वक = बगुला । प्रछन्न = छिप जाते हैं ।

सुकवि कुकवि द्वेषी सुणै, हरषै कहिया जाव ।
करसी नह म्हारा कवित, खाल उतार खराव ॥१०॥
उत्तम मूसे एक झड़, मध्यम दूहा मूंस ।
अधमगीत मूंसे अडर, त्रिविध कुकवि विण तूस ॥११॥
कूड़े ऊतारे सुकवि, गाढ़ी महनत गीत ।
खाल उतारे खांत सूं, इसड़ी कुकव अनीत ॥१२॥
नियम मंगलाचरण नह, काव्य समापत काज ।
काव्य उचारण कुकवि सं, करै महाकवराज ॥१३॥
कर में ले पुस्तक कुकवि, छपै छिपै छल छंड ।
किल दोहा दूहा करै, डंड कथा में मंड ॥१४॥

(१०) सुणे = सुनता है । हरषै = हर्ष करके । कहिया जाव = बात कहीं । करसी नह = नहीं करेगा । म्हारा = मेरे । खाल उतार खराव = मिट्टी नहीं बिगाड़ेगा । उतार = उतारकर, पाठा०—उचेड़ ।

(११) मूंसे = चोरी करता है । झड़ = पद । अडर = निर्भय । तूस = भय ।

(१२) कूड़े = कचरा या दोष । ऊतारे = मिटावे । गाढ़ी = पूर्ण, बहुत । खांत सूं = चाह से, उमंग से । इसड़ी = ऐसी । कुकव = खोटे कवि ।

(१३) नह = नहीं । समापत = समाप्ति । काज = वास्ते । महाकवराज = यहां कुकवि से तात्पर्य है । उचारण = उवारण, उतारण (पाठा०)।

(१४) छपै = छप्पय । छल छंड = छल छंद । किल = निश्चय । छपै छिपै छल छंड = छिपे छिपे धल छंड (पाठा०) । डंड कथा में मंड = डंडक धामें डंड (पाठा०) ।

व्है यूं कुकवी हाथ में, पोथो तणो प्रकास ।
केल पत्र जाणे कियो, वानर रे कर वास ॥१५॥
पारेवी ज्यूं पुसतकां, कुकव बाज बस थाय ।
पांखां ज्यूंही पानड़ा, जत्र तत्र ह्वै जाय ॥१६॥
रूपक कुकवी रसणासूं, बिगड़े यूं रसवंत ।
ज्यूं बिसफोटक रोग बस, वप सोभा विगड़ंत ॥१७॥
किलनं कलनं कल कहै, रिप रुप रो रप रूप ।
बिगड़े कुकवी रसणवस, सबदां तणो सरूप ॥१८॥
कली वसंत कदंब रै, सांवन वरणे संस ।
कहे फेर कविता करूं, वर सर सतरे वेस ॥१९॥
अरुच अलंकृत अरथ सूं, निरगुण मन निरवाह ।
कुकवि ब्रह्मज्ञानी तणा, रात दिवस इकराह ॥२०॥

(१५) ह्वै होता है । यूं इस प्रकार । पोथी = पुस्तक । तणों = का । जाणे = मानो । वानर = बंदर ।

(१६) पारेवी = पारेवा कबूतरी पक्षी । पुसतकां = पुस्तकें । बाज = पक्षी । थाय = होय । पांखां = पंख । ज्यूंही = जैसे । पानड़ा = पत्ते । ह्वै जाय = हो जाते हैं । (रूपक अलंकार)

(१७) रूपक = छंद, कविता । रसण सूं = रसना से । रसवंत = रसवाली । बिसफोटक = एक प्रकार की व्याधि जिससे शरीर में फोड़े ही फोड़े हो जाते हैं, चेचक । वप = शरीर ।

(१८) रसण वस = रसना वश । तणों = का । सबदां = शब्द ।

(१९) वरणे = वर्णन करता है । सेस = शेष । वरसर = बीज खेत । सतरे = अच्छे । वेस = वेश ।

(२०) मन निरवाह = मन में ध्यान धरता है ।

व्रतभंगी है अरथ खय, नांहां भय रस नास ।
कुकवी वैसक तुल्य कर, वरणै सुकवि विमास ॥२१॥
रंक कुकवि होनूं रहै, कोस हूंत सो कोस ।
आयां सुपन अलंकृती, होण तणी नह होस ॥२२॥
कविराजा सूं मंद कवि, अकस करे अविचार ।
अब जगकरता सूं अकस, करसी घट करतार ॥२३॥
आदूं पटरस ऊपरां, मांडी नवरस मंड ।
कुकवि कहै विध सूं कियो, आचारजां अफंड ॥२४॥

(२१) व्रतभंगी = कुकवि के संबंध में तो छंदोभंग और वेश्या के संबंध में ब्रह्मचर्य्यादि व्रत का तोड़नेवाला । अरथ खय = कुकवि के संबंध में छंद के अर्थ (मतलब) का और वेश्या के संबंध में द्रव्य का नाश । रसनास = कुकवि के साथ काव्य की नीरसता और वेश्या के अर्थ में धातुक्षीणता । इस दोहे में श्लेषालंकार है । विमास = विचार करके ।

(२२) कोस = कोष, द्रव्य । हूंत = से । अलकृती = अलंकार जाननेवाला । सुपन = स्वप्न । होण तणी नह होस = होने की हविश नहीं होती ।

(२३) अकस = द्वेष या बराबरी । घट करतार = कुम्हार । करसी = करेगा ।

(२४) आदूं = मूल में । ऊपरां = ऊपर से । मंड = लेख । विध = किस तरह से, ब्रह्मा से । आचारजां = आचार्यों ने । अफंड = अखंड ।

पिंगल पढ लीनो कहै, गण रो पायां ज्ञान ।
यूं ही बर्ण अलंकृती, लख उपमे उपमान ॥२५॥

डिगलियां मिलियां करै, पिंगल तणा प्रकास ।
संसकृती ह्वै कपट सज, पिंगल पढ़ियां पास ॥२६॥

बातां विसतारै बर्णे, सठ आगे सरवज्ञ ।
मूल ग्रहै छांडै मछर, तीखो मिलियां तज्ञ ॥२७॥

शठ मंडल श्रोता हुवै, बक्ता कुकवि बर्णंत ।
भूंकण लागो भूंकवा, जाण जसा दीपंत ॥२८॥

हंसा बगलां हाल सूं, जिम अंतरो जणाय ।
कवत सुकवियां कुकवियां, भेद प्रगट इण भाय ॥२९॥

(२५) पिंगल = छंद का एक ग्रंथ। (पिंगल और डिंगल दो प्रकार के छंद हैं।) गण = छंद की मात्रा आदि।

(२६) डिंगलियां = डिंगल पढ़े हुए। मिलियां = मिलते समय। तणो = का। पढ़ियां = पढ़े हुए।

(२७) विसतार = विस्तार करे। वर्णे = वर्णन करते हैं। आगे = सम्मुख। मच्छर = मत्सर, अहंकार। लियां = लेकर। लज्ज = लज्जा, निशान।

(२८) भूंकण = श्वान कुत्ता। भूंकवा = भूंकना। जसा = यश। जाणा = जाना। दीपंत (प्रा०) = दीपंत बोलना।

(२९) हाल = चाल। सूं = से। जिम = जैसे। अंतरो = भेद, फर्क। जणाय = जाना जाता है। कवत = कवित्त। इण भाय = इस भांति।

कुकव हूंत आछो कुतर, ऊगे चंदण पास ।
लहि चंदण सोरभ लहै, चंदणता गुणरास ॥३०॥

जीभकंठ हिय प्रकृत जुग, कहियो नांहि करंत ।
कहै दुआं कहियो करो, कुकवि कुलच्छणवंत ॥३१॥

सब दिन हिया कठोर सम, कुकवी जीभ कठोर ।
काढे वयण कठोर किल, जीभ सरंभर जोर ॥३२॥

ओगण ईरानी कटक, कुकवी नादरसाह ।
कायब हिंदी दल कटे, रसण तेग बदराह ॥३३॥

(३०) कुकव कुकवि । हूंत से । कुतर एक प्रकार की वास जो कपड़े में चिपक जाती है और जिसे 'कुत्ता' भी कहते हैं। खोटा वृक्ष, नीम । चंदण चंदन । चंदणता = चंदनपना ।

(३१) प्रकृत = प्रकृति । जुग = दोनों । कहियो = कहा । कहै = कितने ही । कहियो करो = कहा करो । कुलच्छणवंत = कुलक्षण वाला । दुआं दूसरों को ।

(३२) सब दिन = सर्वदा । हिया = हृदय । कठोर सम = पत्थर के समान । काढे = निकालता है । वयण = वचन । किल = निश्चय । सरंभर = सरावोर । जोर = बहुत

(३३) ओगण = अवगुण । ईरानी कटक = फारस देश की सेना । नादरशाह = फारस का बादशाह जिसने सन् १७३९ ई० में हिंदुस्तान पर चढ़ाई की, दिल्ली को लूटा और वहां कत्लेआम किया । कायब = कायर, कविता । रसण = रसना । तेग = तलवार । कुकवि का नादिरशाह और उसकी सेना से रूपक बांधा है ।

सुकव वदन तज सारदा, कुकव वदन नह जाय ।
जावे नह तज अंब ज्यूं, कोयल कैर कुछांय ॥३४॥
कुकविन हरखे कवित सूं, भल हरखे कवभूप ।
उदध उमंगे ससि उदै, किसूं उमंगे कूप ॥३५॥
कोई कुकवो जीभ सूं, वांछे रसमय वाण ।
कंचण वांछे काढणो, सो लोहारी खाण ॥३६॥
नहीं उगत अभ्यास नह, गुर सूं लियो न ज्ञान ।
इसा न लाजे ईछता, सुपहां सूं सनमान ॥३७॥
सुकवि हुए सुदतार रो, सुजस करै कर कोध ।
अटकलजे पायो अवस, कुकवो कने कुबोध ॥३८॥

(३४) वदन = मुख । सारदा = सरस्वती । न, जाय = नहीं जाती है । अंब = आम का पेड़ । ज्यूं = जैसे । कैर कुछांय = कैर के दरख्त की बुरी छाया में । (कैर के पेड़ में पत्ते नहीं होने से उसकी छाया नहीं होती ।)

(३५) हरखे = हर्षित होता है । भल = भले ही । हरखे = हँसे । कवभूप = कविराज । उदध = समुद्र । ससि उदै = चंद्रमा उगने से । किसूं = कैसे, क्या ।

(३६) वांछे = चाहता है । वाण = वाणी । कंचण = सुवर्ण । काढणो = निकालना । सो = वो । लोहारी खाण = लोहे की खान से ।

(३७) उगत = उक्ति । नह = नहीं । इसा = ऐसे । लाजे = शर्मावे । ईछता = इच्छा करते हुए । सुपहां = राजा ।

(३८) हुए = हो करके । सुदताररो = दानी का । अटकलजे = अनुमान कर लेना चाहिए । अवस = अवश्य । कने = पास ।

एकोतरे अठारसो, सावण दसमी स्याम ।
बुध धुर रचो बतीसका, पोषण सुकव तमाम ॥३६॥

---

(३६) एकोतरे अठारसो = सं० १८७१ । सावण दसमी स्याम = श्रावण कृष्ण १० । बुध = बुधवार । धुर = निश्चय । बतीसका = बत्तीसा । पोषण, (पाठा०) तोषण = प्रसन्न करने को ।

(८) अथ विदुर-बत्तीसी लिख्यते

दोहा।

विदर पिदर जाणै नहीं, मादर विदरां मूल ।
राखै अगणत रंग रा, दिलरी कुरसी दुकूल ॥ १ ॥
हेक विदर पैदा हुवै, अगणत मिलियां अंस ।
विदरां री संगत बुरी, विदरां रे नहु वंस ॥ २ ॥
ब्रह्मा जो न करत विदर, जग मांहें जग जीत ।
असल नसल रो ऊघड़त, मड़ापो किण रीत ॥ ३ ॥
वालमियो अलवेलियो, लाल केसियो भेद ।
विदरां रे ऐ व्याकरण, विदरां रे ऐ वेद ॥ ४ ॥
विदर बुराई बींटिया, विदर बड़ा वाचाल ।
विदर पटा लावै सुरत, छोगाला चिरकाल ॥ ५ ॥

(१) विदर = दासीपुत्र। पिदर = पिता। मादर = माँ। अगणत = असंख्य। कुरसी = इच्छा। दुकूल = वस्त्र। कुरसी = (पाठां०) सुरसी।

(२) हेक = एक।

(३) जो न करत (पाठां०) जहँ करती। असल = असली। नसल = खान्दान। ऊघड़त = दिखलाई देता। मड़ापो = अन्धापन।

(४) वालमिया, अलवेलिया और लाल केसिया ये मारवाड़ के अश्लील गीत हैं।

(५) बींटिया = भरे हुए। वाचाल = बक बक करनेवाले। पटा लावै सुरत = चेहरे पर केसों की पट्टियां बनवाती है। छोगाला =

बतलायाँ बिगड़े खिदर, और दियां इलकाब ।
बाट चलावण खिदर नूं, कुतको बड़ो किताब ॥ ६ ॥
कुतक खिदर धव काठरा, खिदर पजावण वेस ।
तो पिण हाजर राखणा, घण मेखचा हमेस ॥ ७ ॥
खिदर गपांरा बादला, खिदर विवेक विहीण ।
खिदर छांह निरखे वहै, अलबेला अकुलीण ॥ ८ ॥
काम सूंप नेह कीजिए, खिदर तणां वेसास ।
राणे कीधा राजसी, हुआ जगत में हास ॥ ९ ॥
खिदर मूंछ जांगे वृथा, इधक पटां रा आघ ।
हाकां वागां हिरणियां, खिदर गलो रा बाघ ॥१०॥

छैल, साफे का पल्ला लटकता हुआ रखनेवाला । चिरताल = नखरेबाज ।

(६) बतलायाँ = बात करने से । बिगड़े = क्रोधित होता है । इलकाब = अल्क़ाब, पदवी । बाट चलावण = सीधा रखने को, ठीक रास्ते चलाने को । कुतको = डंडा ।

(७) कुतक = डंडा । खिदर = खैर का वृक्ष । धव = धावड़ा, धोक का वृक्ष । काठरा = लकड़ी के । पजावण वेस = ठीक करने को रस्से अच्छे है । तो पिण = तो भी । घण = हथोड़ा । मेखचा = मेखों का ।

(८) गपांरा = झूंठी बातों के । बादला = गोट ।

(९) सूंप = सौंपकर, देकर । वेसास = विश्वास । राजसी = (मेवाड़ के) महाराणा राजसिंह । हास = हँसी । (कहते हैं कि हीरांढाकांड़या ने महाराणा राजसिंहजी को बहकाकर कुँवर सुरताणसिंह और सरदारसिंह को मरवाया ।)

(१०) मूंछ = (पाठा०) ऊँच । इधक = अधिक । पटां रो = केसों

विदर बहादर बाजवा, कड़ बांधै केवांण ।
कर जोड़न लटका करन, विदर न छोड़ै वाण ॥११॥
आवध कमता उमंग सूं, विदर लगावे बार ।
नहीं लगावे नांखतां, अंज बड़ा जूझार ॥१२॥
अस नांखै गाहण असह, रिण माथे रजपूत ।
आवध नांखै आंचसूं, दासी केरा पूत ॥१३॥
कूकर गबवालो करै, दूजां लोकां द्वार ।
देसोतांरी डोढ़ियां, गोला करै गलार ॥१४॥
कर पारो काचै कलश, जल राखियो न जात ।
नव नहचे ठहरै नहीं, विदर उदर में बात ॥१५॥

का । आघ = मोह, आदर । हाकां = बाण, लड़ाई आदि । हिरणियो = हरिण या गरीब । गली रा = गली के । बाघ = शेर । (व्यंग्य में गली के शेर से अभिप्राय कुत्ते का भी है ।)

(११) बहादर = बहादुर । बाजवा = कहलाने के हेतु । कड़ = कमर में । केवाण = कृपाण, तलवार । वाण = आदत ।

(१२) आवध = शस्त्र । कमता = खींचते हुए । बार = देर । नांखतां = डालते समय । अंज = देरी । जूझार = लड़नेवाले ।

(१३) आस नांखै = घोड़े पटकते हैं । गाहण = गाने को । असह = शत्रु, लड़ाई । आंचसूं = हाथ से या ताप से । माथे = (पाठा०) माते ।

(१४) कूकर = कुत्ते । दूजां लोकां = दूसरे मनुष्यों के । देसोतांरी = जागीरदारों की । डोढिया = द्वार पर । गलार = झूठी गप्पें, आनंद, मौज, चैन ।

(१५) कर पारो = हाथ में पारा । काचै कलश = कच्चे घड़े

कुल देवी थापन करै, जात गयारी जाय।
मरब ठिकाने विदर सै, कल में मूढ कहाय ॥१६॥
छोड़ै जे निज छांह नूं, चाला बहु चाहंत।
पवनासूं बाथां पड़ै, विदर कुलच्छणवंत ॥ १७ ॥
गोलो कह बतलावियां, चिड़ ऊठै चंडाल।
जग में सोधी नह जुड़ी, गोला माफक गाल ॥१८॥
फूल वेल रंगवेल रे, पेट तणी बस पोल।
निचला रहिया मामनव, गरवा अद्भुत गोल ॥१९॥
गोलां सूं न सरै गरज, गोला जात जबून।
ऊखाणो सायद भरे, सो गोला घर सून ॥२०॥

मे। राखियां न जात रग्या नहीं जाता। नव = नई। नहचै = निश्चय।

(१६) कुल-देवी = कुल में पूजी जानेवाली देवी या माता। (प्रत्येक राजपूत जाति में जुदी जुदी कुल-देवियां अवश्य होती हैं।) थापन करै = स्थापन करते हैं। जात = यात्रा। सै = सब। कल = जगत।

(१७) छोड़ै = (पाठा०) छेड़ै। छांह नूं = छाया को। छोड़ने के वास्ते बहुत चेष्टा करता है। पवनां = हवा से। बाथां पड़ै = भिड़ते हैं। चाला बहु चाहंत = (पाठा०) चलवो नह चाहंत।

(१८) बतलावियां = बोलने से। सोधी = ढूंढ़ी। नह जुड़ी = नहीं मिली। गाल = गाली। गोला = गुलाम, बांदा।

(१९) बस पोल = पोल में (गर्भ में) रह के। निचला = निश्चल। गरवा = भारी।

(२०) सरै गरज = काम बनता है। जबून = बुरी। ऊखाणो = (प्रा०) कहावत। सायद = साक्षी। घर सून = गृह शून्य रहता है।

गोला ढोल बांधै गले, लोक गमें कुल लाज।
काठा बांधै कूटियां, करै काज आवाज ॥२१॥
कूकर लाय अन्त नहीं, जुड़ै न कायर जंग।
विदर न ठहरैं विपत में, संपत मे द्विज संग ॥२२॥
गाल बजावै गोलगां, गाल सवांरे गात।
सदा नचींता संचरे, सदा सुहागण मात ॥२३॥
राव रंक हिंदू खवद, गोलां मगलां गेह।
सागे जात सुणामियां, छुद्र दिखावें छेह ॥२४॥

भावार्थ—गोले की और ढोल की एक ही प्रकृति है। गोले को सिर चढ़ाने से (प्यार करने से) संसार में निंदा होती है। इसी तरह ढोल को गले बांधने से निंदा होती है। इन दोनों का तो यही इलाज है कि खूब खेंचकर और बांधकर कूटने से वह तो आवाज करता है और वह काम करता है।

(२१) गोला = गुलाम। बांधै गले = गले में बांधने से। गमे = जाती है। काठा = दृढ़। कूटियां = कूटने से। करै काज आवाज = (पाठां०) करवै काज आवाज।

(२२) कूकर = कुत्ता। लाय = अग्निकांड।

(२३) गाल बजावें = बातें मारते हैं। गोलगां = गुलाम। सवांरे = सुधारते हैं। गात = बदन। नचींता = निश्चिंत। संचरे = फिरते हैं।

(२४) खवद = मुसलमान। मगलां = मनके। सागे = असली। सुणामियां = सुनाने से। छुद्र = क्षुद्र। दिखावें छेह = धोखा दिखलाते हैं।

गांवां सहरां गोलणां, रहै हुआ रजपूत ।
लखणां सूं लख लीजिए, मुकर घणां रा मूत ॥२५॥
कठण रीत रजपूत कुल, खाग कमाई खाय ।
और कमाई आदरै, गोलो झगड़ै गाय ॥२६॥
कुल खत्री वाराह कुल, पोरस वांकम पूर ।
मिलिया चाहै ज्यां महीं, गोला नैं गंड़सूर ॥२७॥
मन मैला चख मांजरा, भालै जे चख भांज ।
गोला अवगुण नू ग्रहै, गुण भलपण रा गांज ॥२८॥
कुवजा नारद विदर री, विवरां संजुत बात ।
हरि रा दासां ज्यूं हुए, दासां नूं सुख दात ॥२९॥

(२५) सहरां = शहरों में । गोलणां = गोले । लखणु = लक्षण । लख लीजिए = जान लेना चाहिए । मुकर = अवश्य । घणां रा = बहुतों के । मूत = मूत्र, पैदाइश, पुत्र ।

(२६) कठण = कठिन । खाग = खड्ग । आदरै = स्वीकारता है । झगड़ै गाय = झगड़े में गो बध जाता है ।

(२७) खत्री = क्षत्रिय । वाराह = वराह, वन-सूकर । पोरस = पुरुषार्थ । वांकम = बांकापन । पूर = पूर्ण । मिलिया = मिलना । ज्यां महीं = जिनमें । गड़सूर = ग्रामसूकर, भंडसूर ।

(२८) चख = आँख । भालै = देखते हैं । चख भांज = आँख मरोड़कर । गांज = नाश करनेवाले ।

(२९) कुवजा = कुबड़ी दासी । नारद = चुगुलखोर या नारद मुनि । विदर = विदुर या दासीपुत्र । विवरां संजुत = विवरण सहित । कुवजा, नारद और विदुर ये तीनों हरि के बड़े भक्त थे ।

सहज चाल संगत सगभ्क, वाणी सिकल वणाव ।
इता प्रकारां अवस है, गोलां तणों जणाव ॥३०॥
नहीं हुवै पग नाग रै, हिरण न थिरता होत ।
ससिया रै नह सींग जूं, गोलां रै नह गोत ॥३१॥
दासीजादा दे दगा, पास रहंता पूर ।
रीझै खीजै राखणा, दासीजादा दूर ॥३२॥
बीछू वानर व्याल विष, गगदभ गंडक गोल ।
ऐ अलगाइज राखणा, ओ उपदेस अमोल ॥३३॥
लड़ो मती ल्यो लायकी, कथा सुणो दे कान ।
सो वेलां समझावियां, गोलां नायो ज्ञान ॥३४॥
आंगण मह कर एकठा, विदर वणाया वेह ।
ज्यां मझ कांदा छोंत जिम, छिदरां रो नहिं छेह ॥३५॥

(३०) सिकल वणाव = चेहरे की टीपटाप । अवस = अवश्य । जणाव = जानकारी, ज्ञान ।

(३१) नागरै = सर्प के । थिरता = स्थिरता । ससिया = शसा । गोत = गोत्र ।

(३२) दासीजादा = दासीपुत्र । रहंता = रहने में । पूर = पूर्ण । रीझै खीजै = रीझ खीज में, प्रसन्नता और क्रोध में । राखणा = रखना चाहिए ।

(३३) गंडक = कुत्ता । अलगाइज राखणा = दूर ही रखने चाहिए ।

(३४) मती = मत । ल्यो लायकी = योग्य बनो । सो वेलां = सौ बार । समझावियां = समझाए । नायो = नहीं आया ।

विदर बतीसी बींदणी, जती रास वर जास।
ब्याह थयो वेसाख में, पूरण प्रेम प्रकास ॥३६॥

---

(३५) मठ = मन। एकठा = इकट्ठे। वेह = विधाता। ज्यां मभ = उनमें। कांदा छोत = प्याज के छिलके। छेह = अंत। छिदरां = (पा०) चिदरां। छिदरां = छिद्रों का, दोषों का।

(३६) बींदणी = दुल्हन। जती रास = "जती रासा" नाम की पुस्तक, एक पुस्तक का नाम। वर = दुल्हा। जास = जिसका। थयो = हुआ। संभवतः "जती रासा" नामक ग्रंथ बांकीदासजी ने या अन्य किसी कवि ने इसी समय बनाया।

(६) अथ सुरजालभूषण लिख्यते

दोहा

साह तणा सुणी सबल, आग बचै इण ठोड़ ।
औ मात अकलीम में, चावो गढ़ चीताड़ ॥ १ ॥
दिन दुलहां सागीगरां, इण गढ़ रा धणियांह ।
आणी सींगल द्वीप सूं, पेखे पदमणियांह ॥ २ ॥
आगै इण गढ़ वागतै, समर हुआ जग साख ।
सात लाख हिंदू मुवा, असुर अठारै लाख ॥ ३ ॥

सुरजालभूषण = यहां का सिरमौर [illegible] ।

(१) साह तणा = बादशाह के । आग बचै = आकर [illegible] जाते है । इण ठोड़ = इस जगह । मात = माता । अकलीम = देश विला-यत । चावो = प्रसिद्ध ।

(२) दिन दुलहा = बांके वीर । सागीगरां = सोरमा । धणि-यांह = स्वामियों ने । सींगल द्वीप सूं = सिंहल द्वीप (लंका) से । आणी = लाए । पेखे = देखकर । पदमणियांह = पद्मिनी नारियों को । यह पदमावत के आधार पर महाराणा रतनसिंह की रानी पद्मिनी के विषय में लिखा है । गरां = (पाठा०) धरां ।

(३) जग साख = जगत साक्षी है । मुवां = मरे । असुर = विधर्मी ।

जठै प्रतपियौ प्रगट जो, हर अवतार हमीर ।
नीसरतौ जूड़ा महीं, नित निरझर नद नीर ॥ ४ ॥
सिर मांडव गुजरात सिर, दल सज कीधी दौड़ ।
उण सांगा रो वैसणो, चंगो गढ़ चीतोड़ ॥ ५ ॥
सब दिन गो मुख कुंडसिर, पाणी सूं भरपूर ।
अन भुरजालां भुरजसा, गढ़ चीतोड़ कंगूर ॥ ६ ॥
नीसरणी लागै नहीं, लागै नहीं सुरंग ।
लड़ नहिं लीधौ जाय ओ, दीधो जाय दुरंग ॥ ७ ॥
पर गढ़ लेणा रोप पग, अरि सिर देणा तोड़ ।
धरा हूंत नहिं धापणो, खूंदालमां न खोड़ ॥ ८ ॥

(४) जठै = जहां । प्रतपियौ = राज्य किया । हमीर = महाराणा हमीरसिंह । हर = महादेव । नीसरतौ = निकलता था । जूड़ा महीं = केशों के जटा-जूट में से । निरझर नद नीर = गंगाजल । जो = (पाठा०) जग । नद = (पाठा०) ने ।

(५) सिर मांडव = मांडू पर । गुजरात सिर = गुजरात पर । दल सज = दल साजकर । कीधी दौड़ = चढ़ाई की । उण = उस । वैसणो = निवास या राजस्थान । चंगा = अच्छा ।

(६) सब दिन = हमेशा । अन = अन्य । भुरजालां = गढ़ । भुरज सा = बुर्ज के से । कंगूर = कंगूरा ।

(७) नीसरणी = निसेनी । लड़ नहिं लीधो जायओ = यह लड़-कर नहीं लिया जाता । दीधो = दिया हुआ । दुरंग = गढ़ ।

(८) पर = शत्रु का । लेणा = लेना । रोप पग = स्थिर होकर, पांव जमाकर । देणा = देना । धरा हूँत = पृथ्वी से । धापणो = संतुष्ट होना । खूंदालमां = वीर पुरुषों में । खोड़ = रोष ।

की बांधव की दीकरा, हुकम दिए जो फेर ।
पातशाह जानूं पकड़, चाढ़े गढ़ ग्वालेर ॥ ९ ॥
राखै राण बराबरी, आतपत्र उतबंग ।
ते अकबर खड़ आवियो, गांजण चीत दुरंग ॥१०॥
के मुलतांनी काबली, पेसावरी प्रचंड ।
नेसापुर रा नीपना, बगदादी बलबंड ॥११॥
सामी रूमी संजरी, गोरी कासगरीह ।
ईरानी यमनी अडर, सीराजी रण सीह ॥१२॥
बलखी हिलबी बाबरी, रूसी तूसी रोद ।
अै लै अकबर आवियो, सज ऊभा सीसोद ॥१३॥

(९) की = क्या । बांधव = बंधुवर्ग । दीकरा = बेटे । हुकम दिए जो फेर = जिन्होंने हुक्म नहीं माना । जानूं = उनको । चाढ़े = भेज दिए । दीकरा = (पाठा०) डीकरा ।

(१०) राखै = रखता है । राण बराबरी = राणा बराबरी का दावा करता है । आतपत्र = छत्र । उतबंग = उत्तमांग, मस्तक । खड़ आवियो = चढ़ आया । गांजण = तोड़ने को । चीत दुरंग = चित्तौड़ गढ़ । उतबंग = (पाठां०) तनबग्ग । दुरंग (पाठां०) दुरग्ग ।

(११) के = कितने हों । नीपना = उत्पन्न हुए ।

(१२) संजरी = संजर के रहनेवाले । कासगरीह = काशगर के रहनेवाले । अडर = निर्भय । रणसीह = लड़ाई में सिंह के समान ।

(१३) रोद = मुसलमान । सज ऊभा सीसोद = सिसोदिए भी लड़ाई को तैयार हो गए ।

चकतो अकबर चक्कवै, पतसाहां पतसाह।
चतुरंगी फौजां चढ़ै, दिए दुरंगां ढाह ॥१४॥
अकबर साह जलालदी, खितवा वलो खुदाय।
बाजदार कर बंदगी, ताजदार होय जाय ॥१५॥
जाफरान नेपत जठै, पग पग मीठा नीर।
सदा बिराजे सारदा, सो लोधा कसमीर ॥१६॥
गुड़ पाखर पूरब गया, नभ ओ घसतै सीस।
आटो करै उड़ाविया, जेण पठाणां पीस ॥१७॥

(१४) चकतो = चंगेज खाँ के वंश का। चक्कवै = चक्रवर्ती राजा। पतसाहां पतसाह = शाहंशाह। दुरंगां = गढ़ों को। दिए ढाह = गिरा दिया।

(१५) जलालदी = अकबर का नाम मोहम्मद जलालुद्दीन था। खितवा = खुतबे में। वलीखुदाय = खुदा की तरफ का महापुरुष। बाजदार = बाज रखनेवाले, या खिराज देनेवाले बाजगुजार। ताजदार = बादशाह।

(१६) जाफरान = केसर। नेपत = पैदा होती है। जठै = जहां। लोधो = लिया। शारदा से पंडित और पांडित्य। अकबर ने कश्मीर को सन् १५८६ ई० में फतह किया था।

(१७) गुड़ पाखर = जिरहपोश सवार व पाखरवाले घोड़े। (इस दोहे का संबंध पठानों के साथ की लड़ाई से है। पिछले चरण का अर्थ यह हो सकता है कि "जिसने पठानों को पीसकर आटे की तरह उड़ाया।" ये लड़ाइयां बंगाल की तरफ सन् १५७५ ई० और १५८० में हुई थीं।)

दल बल सूं घेरो दियो, प्रबल हुमाऊँपूत ।
गैलोतां चीतोड़ गढ़, मिल कीधो मजबूत ॥१८॥
अमिट भड़ां बल अंग में, कोठार सामान ।
सामध्रमी ठाकुर सको, दिए संग दुनियान ॥१९॥
पतो जगा रो बिरद पत, वीरम रो जैमाल ।
केलपुरो कमधज दुहूँ, हुआ चीत गढ़ ढाल ॥२०॥
के दरवाजा कांगरा, ऊभा भड़ अरड़ींग ।
भला चीत बुरजालरा, आभ लगावा सींग ॥२१॥

(१८) हुमाऊंपूत = अकबर । गैलोतां = गहलोतों ने (गव गुह उदयपुर के राणाओं के पूर्वज थे इन्हीं से ये गुहलपुत्र = गुहलोत कहाए ।)

(१९) अमिट = अटल । भड़ां = शूरवीरों के । कोठारां = कोठार में । सामान = खाने पीने आदि की वस्तु । सामध्रमी = स्वामिभक्त । ठाकुर = सरदार । सको = सब कोई । दिए संग दुनियान = संसार जिनकी प्रशंसा करता है ।

(२०) पतो जगा रो = जग्गा का पुत्र पत्ता । बिरद पत = महायशस्वी । केलपुरो = सीसोदिए—केलवाड़े में रहने से केलपुरे कहलाए । कमधज = राठौड़ (पत्ता सीसोदिया था और जयमल राठौड़ ।) दुहूँ = दोनों । इस शब्द का सम्बन्ध आगे 'हुआ' क्रिया से है । चीतगढ़ = चित्तौड़गढ़ ।

(२१) के = कितने ही । सात दरवाजे हैं जिनके ये नाम हैं—१—पाडलपोल, २—भैरोंपोल, ३—हनुमानपोल, ४—गणेशपोल, ५—जोड़लापोल, ६—लछमनपोल, ७—रामपोल । ऊभा = खड़े । भड़ = भट, शूरवीर । अरड़ींग = जबरदस्त । चीत = चित्तौड़ । बुरजाल =

उठै सोर झालां अनल, आभ धुआं अंधियार।
ओलां जिम गोला पड़ै, मेछां कटक मंझार ॥२२॥
भुरजमाल फण मंडली, सोर झाल विष झाल।
जाण सेस बैठो जमी, मिस चीतोड़ कराल ॥२३॥
के गोलां के गोलियां, के तरवारां धार।
मरै गड़ै कबरा महीं, बीबा मंसबदार ॥२४॥
ढूकै नेह गढ़ ढूकड़ा, अकबर रा उमराव।
करै वीर गढ़ रा कवच, दोय ढूक इक घाव ॥२५॥
भड़ां लिरीजे हाजरी, नित दीजै मोरांह।
जोध फिरै गढ़ जाबतै, पै दर पै पोहरांह ॥२६॥

गढ़। आभ = आकाश। लगावा सींग = यश बढ़ाने को। लगावा = (पाठा०) लगाया।

(२२) सोर = बारूद। झालां = ज्वाला। ओलां = ओले। मेछां = म्लेछां = मुसलमानों के।

(२३) भुरजमाल = बुरजों की माला। फण मंडली = सर्प के फण का मंडल। जाण = मानो। सेस = शेष नाग। मिस चितौड़ = चित्तौड़ के रूप में। इस दोहे में बहुत उत्तम उत्प्रेक्षा अलंकार है।

(२४) के = कितने ही। बीबा मंसबदार = मुसलमान उमराव।

(२५) ढूके = लगते, पहुँचते। ढूकड़ा = नजदीक। घाव = चोट। गढ रा कवच = गढ़ के रक्षक।

(२६) भड़ां = भटां = शूरवीरों की। लिरीजे = ली जाती है। मोरांह = अशरफियां। जोध = योद्धा। जाबतै = रक्षा के लिये। पै दर पै = एक के बाद दूसरा शत्रु रखकर। पोहराह = पहरे पर। पै दर पै = (पाठा०) पैज रुपै।

सूनी थाहर सिंघ री, जाय सके नहिं कोय ।
सिंह खड़ो थह सिंहरी, क्यों न भयंकर होय ॥२७॥
किसूं सफीलां गुरज की, काहू वजर कपाट ।
कोटां नं निधड़क करै, रजपूतां रा थाट ॥२८॥
अमलां खोबा बाजियां, मचै भड़ां मनवार ।
जांगड़िया दूहा दियै, सिंधू राग मझार ॥२९॥
दल अकबर तोपां दगै, गूंके नीर निवाण ।
गोला लागे चीतगढ़, मेंगल माछर जाण ॥३०॥
अई चीतगढ़ ओर सूं, तूं गांजियो न जाय ।
भीतर ज्यों मन भावणो, बाहर जिको बलाय ॥३१॥

(२७) थाहर = गुफा । थह = मांद, गुफा ।

(२८) किसूं = क्या । काहू = क्या । कोटां नं = प्राकार को (कोट) । वजर = वज्र, मजबूत । (भावार्थ—किले की बुर्ज आदि और वज्र के किवाड़ होने से क्या ? उसकी रक्षा तो राजपूत करते हैं) थाट = थट्ट, समूह ।

(२९) अमलां = अफीम । खोबा = चुल्लू भर, हथेलियां । बाजियां = भरके या बाहुयुद्ध । मचै = होने लगी । जांगड़िया = जांगड़ या टोली । सिंधूराग मझार = युद्ध के समय वीरों को उत्तेजित करने को सिंधू गाते हैं । मझार = (पाठा०) मलार ।

(३०) नीर निवाण = जलाशय । मेंगल = हाथी । (चित्तौड़ गढ़ पर मुसलमानों के गोले ऐसे लगते थे जैसे हाथी के मच्छर की चोट लगती हो ।)

(३१) अई = अय, हे । गांजियो = तोड़ा । ज्यों = जो । मन भावणो = मनोहर । बलाय = भयंकर ।

अई चीतगढ़ ऊधरा, सकल गढ़ां सिरताज ।
तूं जूनो परणे नवी, असुरांरी अफवाज ॥३२॥
जां चोतोड़न तेाड़ियेा, तांकी कीधो कांम ।
अकबर हिये बिचार ओ, जक नहीं आठूं जाम ॥३३॥
अकबर सूं ऊभेा करै, आसिफखांन अरज्ज ।
हजरत गढ़ कीजे हलेा, करेा जेज किण कज्ज ॥३४॥
आसिफखां अकबर कहै, भीतां भुरजां जेाय ।
बांकेा गढ़ भड़ बांकड़ा, हलेा कियां की हेाय ॥३५॥
भीतरलां फूंटा भड़ां, कै खूंटा सामान ।
इण गढ़ में हेासी अमल, खम तूं आसिफ खान ॥३६॥
जयमल पतै जवाब जद, हजरत तणी हजूर ।
मंत्र करै लिख मेलियेा, सांभल हरखै सूर ॥३७॥

(३२) ऊधरा = ऊँचा । असुरां री = मुसलमानों की । अफवाज = फौज का बहुवचन, वीरता । शत्रु-सेना को यहाँ स्त्री का रूपक दिया है ।

(३३) की = क्या । जक = आराम । जाम = पहर । आठूं — (पाठा०) वाकूं = उसको ।

(३४) अरज = अर्ज़ । हलेा = हल्ला । जेज = विलम्ब । किणकज्ज = किसलिए ।

(३५) भीतां = भीतों को । भुरजां = बुर्जों को । जेाय = देखकर । भड़ = शूरवीर । बांकड़ा = बांके, विकट । की = क्या ।

(३६) भीतरलां = भीतर के । फूटां भडां = वीरों में फूट पड़ने से । कै = या । खूटां = चुक जाने या निबट जाने से । खम = (क्षम) संतोष कर ।

(३७) मंत्र करै = सलाह करके । सांभल = सुनकर के ।

"गांजीजे नहं चोत गढ़, बींट दलां बलियांह ।
गांजीजे नहं गंध गज, माछ घणां मिलियांह ॥३८॥
इंद्रानुज रो डंड जो, आवै हरतां आंच ।
उणरी नीसरणी हुए, इण गढ़ लागे सांच "॥३९॥
काचा भड़ां कसूर पिण, किलां कसूरन तार ।
प्राण बचावण पिसणनूं, सूंपै ग्रहै न सार ॥४०॥
केवी नूं गढ कूंचियां, सूंपै छोड़ सरम्म ।
मुख ज्यांरां दीठां मिटै, धर रजपूत धरम्म ॥४१॥
भेलाया भुरजाल ज्यां, पाणेचो गम पैठ ।
जिके कहाणां खोय जम, वसुधामंडल बैठ ॥४२॥

---

(३८) गांजीजे नहं = तोड़ा नहीं जायगा । बींट = घेरा । दलां = फौजों के । बलियांह = लगने से । गंधगज = मस्त हाथी । माछ = मच्छर और म्लेच्छ । घणां = बहुत । मिलियांह = मिलने से ।

(३९) इंद्रानुज = इंद्र का छोटा भाई (या वामनावतार) । हरतां = दूर करते हुए । आंच = हाथ ।

(४०) काचा भड़ां = कच्चे शूरवीर । पिण = परंतु । किलां = किलों का । कसूरन = कसूर नहीं है । तार = लेश मात्र । बचावण = बचाने को । पिसण नूं = शत्रु को । सूंपै = सौंपते हैं, समर्पण करते हैं । सार = तरवार ।

(४१) केवी नूं = शत्रु को । दीठां = देखने से । धर = पृथ्वी या संसार में । सरम्म = शर्म । धरम्म = धर्म ।

(४२) भेलायां = मिलवाया । ज्यां = जिन्होंने । पाणे ची = बल की । गम पैठ = पैठ उड़ाकर । जिके = वे । कहांणां = कहलाए । बैठ = बेढ़िए बेगारी । बैठ = (पाठा०) वेठ ।

जुध भागां थांभे जिकां, गढ़ तजिया नहि गत्त ।
गढ़ नूं म्हं बांध्यो गलै, आवो सौ असपत्त ॥४३॥

रतन दिली सूं आणियो, सूरा है समरत्थ ।
प्रहियां म्हं चीतोड़ गढ़, किसूं अछेरा कत्थ ॥४४॥

समर तजण सूं सोगुणो, दुरंग तजण रो दोष ।
मरद दुरंग जातां मरै, मिलै जिकां नूं मोष ॥४५॥

बारा सुखनां खीजियो, अकबर साह जलाल ।
उच्चरियो हूं जीवतां, सिहां पांहू खाल ॥४६॥

(४३) जुध भागा = लड़ाई से भागकर । थांभे = थामे । गत्त = गति, भलाई, उद्धार । म्हं = हमने । असपत = अश्वपति, बादशाह । जुध भागा—(पाठा०) जुधबांगा = युद्ध होने पर । सौ = शत, बहुत ।

(४४) आणियो = लाए । सूरा है समरत्थ = वे सूर और सामर्थवान है । रतन = रत्न तथा राणा रत्नसिंह । (फिरिश्ता लिखता है कि "राणाजी को अलाउद्दीन कैदकर दिल्ली ले गया था तब उनकी रानी पद्मिनी राजपूतों को साथ ले उन्हें छुड़ा लाई"।) किसूं = क्या । अछेरा = आश्चर्य । कत्थ = बात ।

(४५) दोष = दोष । जिका नूं = जिनको । मोष = मोक्ष । समर तजण सूं = (पाठा०) समरथ जणसूं ।

(४६) बारा सुखनां = बारह ही बातों से, निश्चय रूप से । खीजियो = चिढ़ गया । उच्चरियो = कहने लगा । हूं = मैं । बारा सुखना— (पाठा०) खरा वचनां = कड़ुवे वचनों से । बारां वचना भी पाठ है । इसका अर्थ है—उनकी बातों से ।

पग मांडो जैमल पता, हूं अकबर जग जीत।
चित्रकोट में जाणियो, चित्रकोट मझ चीत ॥४७॥
पग मांडो जैमल पता, गढ मोसूं नहिं दूर।
लीधा इसा हजार गढ़, मो दादे तहमूर ॥४८॥
कर सूं गैल दियो किलो, ऊभा पगां अभंग।
किलो लियां विण हूं कठै, सरकूं लसकर संग ॥४९॥
बाबर नूं जीत्यो नहीं, रांणा सांहां साल।
उणरे घररा ऊमरा, मो आगे की माल ॥५०॥
लीधो इण गढ़ नें लड़ै, संग बहादर साह।
धकै हुमाऊँ साहरै, रण तज लागो राह ॥५१॥

(४७) पग मांडो = ठहरे रहो। चित्रकोट = चित्तौड़। चित्रकोट मझचित = चित्तौड़ में ही मेरा मन है।

(४८) मोसूं = मेरे से। हुवा = गये। मो = मेरे। तहमूर = तैमूर (लंग)।

(४९) पे = ये। ऊभा पगां = खड़े हुए, अब तक। अभंग = निश्चय। विण = बिना। कठै = कहां, कब। सरकूं = हटता हूँ। करसूं गेल दियो किलो = (पाठा०) करसूं नाईयो किलो।

(५०) सांहां साल = बादशाहों का साल (कांटा)। उणरे = उसके। घररा = घर के। ऊमरा = उमराव। मो = मेरे। की = क्या।

(५१) लीधो = लिया। लड़ै = लड़ाई करके। (राणा विक्रमादित्य के समय में बहादुरशाह ने वि० सं० १५९२ में चित्तौड़ फतह किया था।) धकै = मुकाबले में। हमाऊं साहरै = हुमायूँ बादशाह के (बहादुर शाह हुमायूँ बादशाह से उक्त संवत में लड़ाई हारकर भागा था)। धकै हमाऊँ साहरै = (पाठा०) तिको धकै मो तातरे।

लागे मो इकबाल सूं, नीसरणी गयणाग ।
इण गढ़ क्यूं नहिं लागसी, खिविया मोकर खाग ॥५२॥
चंद्रावत तज स्वामध्रम, विणही पड़ियां ताव ।
दुरगो भागो दुरगसूं, रामपुरा रो राव ॥५३॥
प्रगट कहै जैमालपतो, अचल अचल कर अंग ।
कायर रेहण कढ गयां, दीपै कनक दुरंग ॥५४॥
तो में वीस हजार भड़, गयो दुरगो इक दूर ।
ताव पड़ै तोनूं किसूं, पड़ियां इक कंगूर ॥५५॥
असकंदर जो आवही, सुलेमान दल साज ।
तोपी नंह सूंपा तुनै, अकबर काहू आज ॥५६॥

(५२) मो = मेरे । गयणांग = आकाश में । खिंविया = चमकने से । मोकर खाग = मेरे हाथ से तलवार ।

(५३) चंद्रावत = चंद्रवंशज । विणही = बिना । दुरगा = रामपुरे का राव (दुर्गादास चंद्रावत महाराणा की सेवा छोड़कर बादशाह के पास जाकर रहा था) ।

(५४) अचल = पर्वत । अचल = निश्चल । कढ़ गया = निकल गए । दीपे = प्रकाशित होता है । रेहण = सोने का मैल ।

(५५) तो में = तेरे में । हे गढ़, तेरे में २० हजार भट हैं, यदि एक दुर्गा चला गया तो क्या हुआ । ताव पड़े = कष्ट हो सकता है । तोनूं किसूं = तुझे क्या । पड़ियां इक कंगूर = एक कंगूरे के पड़ने से ।

(५६) असकंदर = सिकंदर । पी = भी । नंह सूंपा तुनै = तुझे नहीं सौंपे । काहू = क्या ।

खत्रियां रा छत्तीसकुल, त्रदस कोड़ तेतीस।
जिके खड़ा तौ जावते, अकबर किसूं करीस ॥५७॥
दिल्ली गयां अलावदी, कैदी करे रतन्न।
राजपूतां ही राखियो जदतो करे जतन्न ॥५८॥
भील्लन कूं न भलाविया, नहि मेरां मोंणाह।
तानूं राण भलावियां, सोहड़ां सुकळणियांह ॥५९॥
पण लीधो जैमलपतै, मरसां बांधे मोड़।
सिरसाजे सूंपां नहीं, चकता नूं चीतोड़ ॥६०॥
पतो माल गढ़ पुरुषरा, वणिया भुज वरियाम।
दांतूसल गढ दुरदरा, जेक उबारण नाम ॥६१॥

(५७) खत्रियां = क्षत्रियों के। छत्तीस = छत्तीस। त्रदस = देवता। किसूं = क्या। करीस = करेगा।

(५८) अलावदी = अलाउद्दीन खिलजी। रतन्न = राणा रत्नसिंह। जदतो = जब भी।

(५९) भलाविया = सौंपा है। मेरा मीणा की जाति है। सोहड़ा = सुभटों को। सुकळणियांह = अच्छे लक्षण या कुलवाले। सुकळणियांह = (पाठा०) सुकुलीणांह।

(६०) पण = प्रण। मरसां = मरेंगे। सिरसाजे = सिर रहते हुए, जीते हुए। चकता नूं = मुगलों को। मोड़ = सेहरा, मुकुट।

(६१) पत्ता और जयमल गढ़रूपी पुरुष के दोनों भुजदंड, गढ़ रूपी हस्ती के दोनों दांत बचाने को बन गए। माल = जैमल। वरियाम = उत्तम। दांतूसल = दांत। दुरद = (द्विरद) हाथी।

मारू परधर मारका, ठहरे समहर ठौड़ ।
ऊखाणां उजवालियो, चढ़ जयमल चीतोड़ ॥६२॥
पाधर अकबर सूं पतो, विढ़े इसो वरियाम ।
सो गाजै चीतोड़ सिर, की इचरज रो काम ॥६३॥
ओ पातल सीसोदियो, ओ जयमल कमधज्ज ।
एक सूर घर कज्ज है, एक सूर पर कज्ज ॥६४॥
तोड़ जोड़ ततवीर में, कसर न राखे काय ।
आप अकबर ओलियो, गढ़वो लियो न जाय ॥६५॥

बड़ा दोहा

रोपी अकबर राड़, कोट झड़ै नंह कांगरे ।
पटकै हाथल सीह पण, वादल व्है नह विगाड ॥६६॥

(६२) मारू = मारवाड़ी । परधर = पराई धरती के । मारका = मारनेवाला । उजवालियो = प्रत्यक्ष कर दिखाया, उज्ज्वल कर दिया । समहर = समर, युद्ध । ठौड़ = स्थान । ऊखाणो = कहावत ।

मारवाड़ी पराई धरती में मारनेवाले हैं और संग्राम में ठहरते हैं, यह कहावत जयमल ने चितौड़ पर लड़ाई करके प्रत्यक्ष कर दिखाई ।

(६३) पाधर = सीधा । विढ़े = लड़े । इसो = ऐसा । वरियाम = श्रेष्ठ । को = क्या । इचरज = आश्चर्य ।

(६४) ओ = यह । पातल = पत्ता चंद्रावत । कमधज्ज = राठौड़ । घरकज्ज = घर के काम । परकज्ज = पराए काम ।

(६५) ततवीर = तद्वीर । ओलियो = सिद्ध ।

(६६) रोपी = ठानी । राड़ = लड़ाई । हाथल = पंजा । सीह = सिंह । पण = परंतु । व्है = होते हैं । विगाड़ = नुकसान ।

राणारा धिन रावतां, गाढ़ां आदर गाढ़ ।
पायो अकबर पानड़ें, चित्र कोट जल चाढ़ ॥६७॥
कोट विणायो मोरियां, साह हमाऊं नंद ।
तोड़ करे नहि टूटही, वीर मदत जग वंद ॥६८॥
जो होता रछपाल जग, यां सुहड़ां रा थाट ।
पाख गिरां गिरवाणपत, किण विध सकतो काट ॥६९॥
गुण भूपण सुरजाल रा, जस मै दुत जागंत ।
बांकीदास वणावियो, बांचे नर बुधवंत ॥७०॥

---

(६७) धिन = धन्य । आदर गाढ़ = बहुत आदर है । रावता = उमराव । पानड़े = पत्ते से । चित्तोड़ पर चढ़ाके अकबर को पत्ते में जल पिलाया अर्थात खब छकाया, तंग किया ।

(६८) कोट = गढ़ । विणायो = बनाया । मोरिया = मोरी राजपूत (चित्रांगद) । साह हमाऊँ नंद = अकबर बादशाह । मदत = सहायता ।

(६९) रछपाल = (रक्षपाल) रक्षा करनेवाले । सुहड़ा = सुभटों । थाट = समूह । पांख गिरा = पर्वतों के पंख, पहाड़ों के पर (ऐसी कथा है)। गिरवाणपत = इंद्र । किण विध = किस प्रकार ।

(७०) सुरजाल रा = गढ़ की । दुत = कांति । जस = यश ।

(१०) अथ गंगालहरी लिख्यते

दोहा

श्रीपत चरण सरोज रो, गंगाजल मकरंद ।
अलिपल ज्यूंकर पान अब, अधिकांवण आनंद ॥ १ ॥
पतित न्हाय है पीतपट, दिपै निकट रिपदेव ।
नचे मुगत नटनार ज्यूं, श्रीगंगा तट सेव ॥ २ ॥
हंस मीन कूरम हुवो, श्रीभरतार समत्थ ।
सरित हुवो इव होय सो, किसू अदेरा कत्थ ॥ ३ ॥
उदर भरे पीधो उदक, मंदाकणी मझार ।
तिकां उदर त्रिभुअण तणां, भरणलियां भुजभार ॥ ४ ॥

(१) श्रीपत = लक्ष्मीपति अर्थात विष्णु । चरण सरोज = चरण कमल । रो = का । मकरंद = फूलों का रस, पराग । अलिपल = भ्रमर । अधिकांवण = बढ़ाने को ।

(२) पतित = पापी । न्हाय = स्नान करके । है = होता है । पीतपट पवित्र, पीताम्बर । रिपदेव = शिव । नचे = नाचती है । मुगत = मुक्ति । नटनार = नट की स्त्री ।

(३) कूरम = कछुवा । श्री-भरतार = विष्णु । समत्थ = समर्थ-वान् । सरित = नदी । इव = पतला । सो = वही । किसू = कैसा । अदेरा = आश्चर्य । कत्थ = कहावत, कथा ।

(४) पीधो = पिया । उदक = जल । मंदाकणी = (मंदाकिनी) गंगा । तिकां = उन्होंने, उनके । त्रिभुअण = त्रिभुवन, तीनों भुवन । तणां = का ।

अन सीतल उतराद सूं, पंथ बहोड़ो आय।
जल सुरसरि अघ जालतो, करै विलंबन काय॥ ५॥
गंगा जिण थानक गई, गुणियो तीरथ सोय।
तीरथ होय न गंग विण, गुल बिन चोथ न होय॥ ६॥
अधम! न जा तीरथ अवर, तु जा सुरसरी तीर।
दीरघ लहसी तीन द्रग, सुजल पखाल सरीर॥ ७॥
वनचर गण लीधां वहै, भागीरथ रै गाह।
ओपीता भरतार सम, भागीरथी प्रवाह॥ ८॥

(५) उतराद = उत्तर दिशा। पंथ = इधर। बहोड़ो = बहता हुआ। सुरसरि = गंगा। अघ = पाप। जालतो = जलाता। काय = कुछ भी।

(६) थानक = स्थान। सोय = वही। विण = विना। गुल बिन चोथ न होय = यह लोकोक्ति है, (गुल [गुड़] के विना चौथ नहीं होती है क्योंकि चौथ के अंत को स्त्रियां गुलगुले आदि करके चौथ का पूजन करती हैं)। अर्थात् मुख्य पदार्थ या मनुष्य के बिना कार्य नहीं चलता है।

(७) अवर = दूसरे। तु जा = तू जा। दीरघ = चिर काल। लहसी = प्राप्त करेगा। तीन द्रग = त्रिनेत्र अर्थात शिव (शिवलोक)। सुजल = अच्छे जल से। पखाल = प्रक्षालन कर।

(८) लीधां = लिए हुए। वहै = चलते हैं। भागीरथ = वह राजा जो गंगा को मृत्युलोक में लाया, इसी से इसका नाम भागीरथी पड़ा। पुराण में कथा है कि स्वर्ग से उतरकर गंगा ने भगीरथ से कहा कि तू मेरे आगे आगे चलकर उस स्थान का मार्ग बता, जहां तेरे पुरुषा कपिल मुनि के कोप से जलकर भस्म हुए हैं। प्रवाह = वेग।

जग में सयल समत्थ जल, प्रगट निवारण पंक ।
पातक हरण समत्थ ओ, श्रीगंगाजल बंक ॥ ९ ॥

प्राणी तूं डूबो पुखत, मोहनदी रे मांहि ।
देव नदी में डूबियां, नख पग हंदो नाहि ॥१०॥

दूधां वरणां पाणियां, मंजन करसी देह ।
बांका उण दिन वरसही, दूधां हंदा मेह ॥११॥

बांको खिण नहं बीसरे, तट निरमल ऊ नोय ।
आया चंगा दीहड़ा, गंगा दरसण होय ॥१२॥

सोरठा

नारायण पग नीर, मानूं किन मंदाकनो ।
सांपड़ जेथ सरीर, हरको नारायण हुए ॥१३॥

(९) सयल = सर्वत्र, सब । समत्थ = सामर्थ्यवान् । पंक = कीचड़ । ओ = यह । बंक = बांकीदास ।

(१०) पुखत = पूर्ण रूप से । मांहि = में । देव-नदी = गंगा । पग हंदो = पग का ।

(११) दूधा वरणां = दूध के समान, पवित्र । पांणियां = जल । वरस ही दूधा हंदा मेह = दूध का मेह बरसेगा—यह लोकोक्ति है—अर्थात वह दिन आनंददायक होगा ।

(१२) खिण = क्षण । नह = नहीं । बीसरे = भूलता है । ऊ = वह । तोय = जल । चंगा = अच्छा । दीहड़ा = दिन ।

(१३) किन = क्यों नहीं । पगनीर = चरणामृत । जेथ = जिसमें । सांपड़ = स्नान ।

धर गंगाजल धार, आंणो तपकर ऊजलो ।
ओ मोटो उपगार, भागीरथ कीधो भुयण ॥१४॥

नग नायक चा नाह, विच जटजूट वसावियो ।
पावन गंग प्रवाह, पांणी तू कद परसही ॥१५॥

अत सीतल अवदात, संकर मन भावे सदा ।
बांका सांचो बात, सुरसरि जल राकेस सम ॥१६॥

जल जेथे जगदीस, भाषे जग भागीरथो ।
सो ह्वै पहुमी सीस, तो जल सूं निरमल तुरत ॥१७॥

तरै न लागै ताव, ओट तुहाली आवियां ।
नदी हुई तू नाव, भव सागर भागीरथो ॥१८॥

(१४) धर = (धरा) पृथ्वी । धार = धारा । आंणी = लाया । ऊजलो = (उज्ज्वल) उग्र । भुयण = पृथ्वीलोक । मोटो = बड़ा ।

(१५) नग नायक = कैलाश पर्वत । चा = का । नाह = (नाथ) स्वामी अर्थात शिव । बसावियो = धारण किया । कद = कब । परसही = स्पर्श करेगा ।

(१६) अवदात = उज्ज्वल । सुरसरि—(पाठा०) सर भर = समुद्र को भरनेवाला । राकेस = पूर्ण चंद्र ।

(१७) जेथे = जहां । ह्वै = होते हैं । पहुमी सीस = पृथ्वी पर । तो = तेरे ।

(१८) तरै = तिर जाते । न लागे ताव = (जम की) ताप नहीं लगती । ओट = शरण, आड़ । तुहाली = तेरी । आवियां = आने से ।

तो सुरसरी तरंग, कूंची सुरग कपाट री।
गृथ पखाले अंग, जग में धिन मानव जिके ॥१९॥
मृत विनता तन सोय, जास तजे जणणी जतन।
तू राखे मझ तोय, भसम हाड़ भागीरथी ॥२०॥
ज्यां हंदा क्रन जोय, दोजग नह वासो दियो।
ते न्हावे तुय तोय, जोत समावे जह्नानमी ॥२१॥
चाव घणां कर चेत, झांपड़ता थारे सु जल।
सुरसुर पाप समेत, ताप मिटे जीवां तणां ॥२२॥
ज्यां थारे तट जाय, उदर भरे पीधो उदक
मिनख जिके फिर माय, आया नह जननी उदर ॥२३॥
धोली नो जलधार, नह न्हाया निरझर नदी।
ग्यावे डूब गिवार, मानव कालीधार मझ ॥२४॥

(१९) सुरग = स्वर्ग। कपाट = द्वार। गृथ = यहाँ। धिन = धन्य। मानुष = मनुष्य।

(२०) विनता (वनिता) स्त्री। तजे तन सोय = उस (मृतक) शरीर को छोड़ देते है। जणणी = (जननी) माता।

(२१) ज्यां हंदा = जिनके। क्रन = कर्म। जोय = देखकर। दोजग (दोज़ख) नरक। तुय = तेरा। तोय = जल। जोत समावे = मोक्ष हो जाना है। जह्नानमी = (जाह्नवी) गंगा।

(२२) चावघणा = अति उमंग। कर चेत = चित्त में करके। झांपड़तां = स्नान करते। सुरसुर पाप समेत = हे गंगा पापों सहित। तणां = का।

(२३) मिनख = मनुष्य। माय = अन्दर। नह = नहीं।

(२४) धोली = सफेद। निरझर नदी = देवनदी, गंगा। ग्यावे =

मिनपा न पयमाय, तू पावै किण तरहरो।
जणणी खोलै जाय, पय फिर नहं पीणा पड़ै ॥२५॥
भीतर धर दृढ़ भाव, तो मांझल डूबा तिके।
दुस्तर भव दरियाव, नर तरिया निरभर नदी ॥२६॥
वहता रहै विमांण, ले तटसूं वैकुंठ लग।
न इम करड़ो ताण, अंतक लोक उजाड़िया ॥२७॥
जग माझिल थारा जित, पाणी गंग पवीत
अमरां मुख पाणी इलै गावै मह प गीत ॥२८॥
तोय करमनासा तणा, नर सुभ करम नसाय।
तोय तुझ्रा तें त्रिपथगा, माठा क्रम मिट जाय ॥२९॥

[illegible]। [illegible] – [illegible]। [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] मनुष्य।

(२५) [illegible] मनुष्य। [illegible] – [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] गोद। ([illegible]) [illegible] [illegible] आने।)

(२६) भीतर – मन में। [illegible] – बीच में। [illegible] – [illegible]। दुस्तर – कठिन। दरियाव – समुद्र (संसार रूपी समुद्र)। [illegible]

(२७) वहता रहै – [illegible]। विमांण – विमान। [illegible] इम – [illegible] करड़ो [illegible] [illegible]। अंतक लोक – यमलोक।

(२८) माझिल – में। थारा – तेरा। जितै – जब तक। पाणी – [illegible]। पवीत – पवित्र। अमरां – देवता। मुख पाणी [illegible] नूर। मह – मच।

(२९) तोय – जल। करमनासा – नदी का नाम है (पौराणिक

८

तीनों ही देवा तने, देवी आदर दीध।
सरब सयाणां हेकमत, कहवत सांची कीध ॥३०॥

नीर मिलै तो नीर में, सायर मांहि समाय।
नर न्हावे तो नीर में, जोत समावे जाय ॥३१॥

हंस मीन कूरम हरी, निरझर नदी निहार।
काय व्यूह निज सगति कर, तो सेवे इकतार ॥३२॥

पाप जिता त पलक में, सुरसरि हरण समत्थ।
इता पाप ऊमर मही, सो कुण करण समत्थ ॥३३॥

गल मुँडमाल मसाण ग्रह, संग पिसाच समाज।
पावन तूझ प्रभाव सूं, संभु अपावन साज ॥३४॥

तणे = का। तुआने = तेरे। त्रिपथगा = गंगा, तीनों लोकों में बहने-वाली। माठा = खोटे, बुरे।

(३०) दीध = दिया। सरब सयांणा हेकमत = सब सयाने एक मतवाला कहावत।

(३१) तो = तेरे। सायर = समुद्र। जोत = मुक्ति (ज्योति)।

(३२) कूरम = कच्छपावतार। काय व्यूह = शरीर-समूह। इकतार = अख्तियार।

भावार्थ—गंगा के दर्शनों को ही अपनी शक्ति से शरीरों को कच्छपावतार आदि कर देने का पूर्ण अख्तियार है।

(३३) जिता = जितने। पलक में = क्षण में। कुण = कौन। समत्थ = सामर्थ्यवान।

(३४) तुझ = तेरे। अपावन साज = अपवित्र सामग्री।

सिव कहाय जग मिघरे, अंग पुजावे ओर।
तो राखे सिर पर तिको, तज जबरी रा तोर ॥३५॥
ताप त्रषा अघहर तुरत, सुखदै दै सतसंग।
की भीसम जणणी कहां, तू जग जणणी गंग ॥३६॥
गंगा ब्रम्म कमंडली, पावनता विणपार।
तू मोनूं तिरसावही, कै देसी दीदार ॥३७॥
जल अवगाहन जीवणी, दूर हुआं अति दीन।
तू गंगा री जल तणो, मो कद करसी मीन ॥३८॥
छटा अलौकिक छाय, ऊंचा लहरां ऊपड़े।
मुगत निसेणी भाय, सुखदेणी असुरां सुरां ॥३९॥
परमहंस कलहंस रहे, लहरां मांझल लीण।
एसे हंस उडावही, पंजर हंत प्रवीण ॥४०॥

(३५) सिव = कल्याणकारी। कहाय = कहलाता है। मिघरे = संहार करने। तिको = वैसी। जबरी = जबरदस्ती। तोर = तेवर, क्रोध (चेष्टा)। जबरी रा तोर = सतारूढ़ता के भाव को।

(३६) भीसम = भीष्म। जणणी = माता। की = क्या।

(३७) ब्रम्म = ब्रह्मा। कमंडली = कमंडल। पावनता = पवित्रता। विणपार = अपार। तिरसावही = तरसावेगी। कै = क्या। दीदार = दर्शन।

(३८) अवगाहन = डुबकी लगाने से या डूबे रहने से। जीवणी = जीवन। तणो = का। मो = मुझ। कद = कब। यहां 'मीन' शब्द के अर्थ में संपूर्ण दोहे का अभिप्राय है।

(३९) छटा = शोभा। ऊपड़े = उठती है। मुगत = मुक्ति। निसेणी = सीढ़ी।

(४०) परमहंस = योगी। कलहंस = पक्षी विशेष। मांझल =

मंदायण तो माग, पग देतां पुरपां तणां ।
भूतल जागे भाग, अघ भागे खिण एक में ॥४१॥
देखे भव दरियाव, रची पगां सूं श्रीरमण ।
नरां अपूरब नाव, नाविक बिण निरझर नदी ॥४२॥
नदियां हंसां संग नित, हंस नहीं इण हेत ।
अधम न्हाय विध होय ए, देवी ज्यां नूं देत ॥४३॥
पावन तू हरि पाय करि, कै तो करि हरिपाय ।
है पावन श्रोमूझ हिय, मात संदेह मिटाय ॥४४॥

में । लीहा = लीन । हंस = जीवात्मा । पंजर = शरीर । हेत = से ।
हंस पक्षी गंगा की लहरों में मिलकर परमहंस गति को प्राप्त होते हैं और मनुष्यादि जीवों के जीव गंगास्नान कर शरीर रूपी पिंजरों से आकाश (स्वर्ग) में उड़ जाते हैं ।

(४१) मंदायण = (मंदाकिनी) गंगा । माग = मार्ग । पुरखा पितृ । भूतल = पृथ्वी । भाग = भाग्य । अघ = पाप । खिण = क्षण ।

(४२) भव दरियाव = भव-सागर । श्रीरमण = विष्णु । रची = उत्पन्न की । नरां = मनुष्यों के लिये । अपूरब = (अपूर्व) अनोखी । नाविक = नाव चलानेवाला । निरझर नदी = देवनदी या गंगा ।

(४३) न्हाय = स्नान कर । विध = ब्रह्मा । ए = ये । देवी = गंगा माता । ज्यां नूं = जिनको ।

(४४) पावन = पवित्र । हरि = विष्णु । पाय = पग । करि = करके । कै = या । तो = तू । मुझ = मेरे । हिय = हृदय ।

भावार्थ—हे माता ! मेरे हृदय में यह संदेह है उसे तू मिटा कि तू विष्णु के चरण से पवित्र करनेवाली हुई है अथवा तुझसे हरि के चरण पवित्र करनेवाले हैं ।